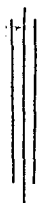


बीकानेरी बोलों का

भाषाशास्त्रीय

अध्ययन

(शोध-प्रबन्ध)



- लेखक -

डा० राम कृष्ण व्यास 'महेन्द्र'

एम ए (द्विती-सम्बत)

पीएच डी

प्रकाशक



श्री गणेश-शक्ति प्रकाशन

बीकानेरी बोली का
भाषाशास्त्रीय अध्ययन

- लेखक -

डाँ राम कृष्ण व्यास 'महेन्द्र'

मूल्य

रु. २५

प्रकाशक

श्री गणेश शक्ति प्रकाशन, बीकानेर

यवस्वापक

डाँ राम कृष्ण व्यास महेन्द्र
नक्षुमर गेट नं भीतर, बीकानेर

(C) सर्वाधिकार सुरक्षित

- मुद्रक -

श्री गणेश शक्ति प्रकाशन बीकानेर
भारत प्रिंटिंग प्रेस, जेल रोड, बीकानेर

**BIKANERI BOLI KA
BHASHA SHASTRIYA ADHYAYAN**

Dr PAM KRISHNA VYAS

भूमिका

राजस्थानी के समस्त साहित्य की और विद्वानों का ध्यान आकर्षित हुआ है और उसके जन एव जनेतर साहित्य के शोध में पर्याप्त काय हुआ है, पर उसके भाषिक स्वरूप का उतना अध्ययन नहीं हुआ है। विशाल भू-भाग में फैली राजस्थानी की वृद्ध विभाषाएँ एव अनेक बोलियाँ हैं। इनके वैज्ञानिक अध्ययन व अभ्यास से न तो राजस्थानी के स्वरूप के सम्बन्ध में चरम निष्कर्ष प्रकाश में आ सके हैं और न इनकी पारस्परिक स्थितियों को सुस्पष्टता से समझा जा सका है। इससे भ्रातियाँ उत्पन्न हुई हैं जिनके निराकरण के लिए इसकी विभाषाओं और बोलियों का वैज्ञानिक अध्ययन अपेक्षित है।

डॉ० रामकृष्ण व्यास जो बीकानेर के निवासी हैं ने बीकानेरी का अध्ययन वैज्ञानिक दृष्टि से किया है और उस बोली को प्रकाश में लाने का सफल प्रयास भी किया है जिसके धोलने वाला की संख्या 47 बताकर उसके स्वतंत्र अस्तित्व तक को नकारा सा गया है। यह लेखक बीकानेरी भाषियों की जनसंख्या 715000 मानता है और अनुमान एव तर्क-बल पर अपने कथन की पुष्टि करता है क्योंकि समस्त बीकानेरी भाषियों की गणना करना एक व्यक्ति के बलबूते से पर की बात है।

जब किसी बोली का अध्ययन उसका भाषी भी होता है, तब उसके अध्ययन में व्यक्तिनिष्ठता आ जाने का खतरा सदा बना रहता है और उसका अध्ययन व्यक्ति बोली अध्ययन जसा बनकर रह जाता है। ऐसे अध्ययन को वस्तुनिष्ठ बनाने के लिये लेखक ने प्रमाणित नमूने एकत्र किये हैं। वह नगर से बाहर जाकर बीकानेरी बोली के स्वच्छ नमूने ग्राम-वट्टाओं से एकत्र कर लाया है जिनकी प्राप्ति बीकानेर नगर में सम्भव नहीं की और जिन्हें मिलावट दूषण से मुक्त समझा जा सकता है। बीकानेर नगर के मुहल्लों (घोड़ों) में जति बोलियों का अंतर सुस्पष्ट देखा जा सकता है, जिनके आधार पर किसी मानक रूप की खोजकर उसका अध्ययन करना शक्यता सम्भव सा वाय था।

बीकानेरी का अध्ययन सगर ने अनेक स्तरों पर किया है। विषय प्रवेश में सगर ने बीकानेरी की दृष्टात्मक विगपताओं पर भी विचार किया है और मुख्य तथान् दृष्टियाँ जो इसकी अपनी हैं, प्रकाश में लाया है। एक अध्ययन /माँ/ जा हिनी /मा/ का स्थापनापन है, बीकानेरी की नही पर पुनरुत्पत्ता बीकानेरी की विनियमिता है उसके मानक रूप में ऐसा उच्चारण नहीं मिलता है। किसी भी ध्वनि को बिना भाषा वैज्ञानिक प्रयोगशाला के स्थापित एवं परिभाषित करना शोधार्थी के लिए दुःसाध्य है, परन्तु भी /द/घ/ब/ जमी व्यञ्जन ध्वनियों के जटिल उच्चारण को पकड़कर उनको स्थापित किया गया है।

वस्तुतः डा पास का प्रस्तुत अध्ययन आलोच्य बोलो का स्थात्मक अध्ययन है, जिसे अत्यन्त तत्परता एवं मनोयोग से प्रस्तुत किया गया है। इस अध्ययन में वह परम्परावादी नहीं रहा है, अपितु आधुनिक भाषा वैज्ञानिक ग्राहो का अपने अध्ययन में अपने समुचित उपयोग किया है। नामपदों के निर्माणकारी प्रत्यय अद्याय जो पूर्व के तीन अद्यायों के निष्कल्प रूप में लिखा गया है सुन्दर वन पडा है। उसमें लेखक की स्थापनाएँ मौलिक हैं। इसी प्रकार त्रियापत्त अद्याय भी गहन अध्ययन से प्रसूत है। अन्तिम अद्याय वाक्य रचना है। यदि भाषा की लघुत्तम साधक स्थात्मक इकाई धातु है तो बहतर इकाई वाक्य है। बीकानेरी वाक्य रचना, जो बोलो की वाक्य रचना है लेखक ने सभी प्रकार के नमूने खोज निकाले हैं।

डा पास द्वारा प्रस्तुत बीकानेरी की इस उत्तरी बोलो का यह अध्ययन विद्वानों एवं शोधार्थियों द्वारा समाहित होगा यह मेरा विश्वास है और यही मेरी कामना भी है।

डा क हैया लाल शर्मा
एम ए पीएच डी
अध्यक्ष हिन्दी-विभाग
डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर

प्राक्कथन

भाषा भावों एवं विचारों की वहनकर्त्री एवं अभिव्यजनकर्त्री है। पावनभूमि भारतवर्ष विश्व का वह आदि देश है जहाँ अत्यन्त प्राचीनकाल में ही भाषा का सूक्ष्मातिमूक्ष्म सश्लेषण विश्लेषण किया गया जिसे विश्व के ख्यातनामा भाषाविदों ने सहृदय स्वीकार किया है। ब्लूमफील्ड के अनुसार संस्कृत के अतिरिक्त संसार की अन्य किसी भाषा का इतना पूरा वर्णनात्मक अध्ययन नहीं हुआ है। शिक्षा ग्रन्था, प्रातिशाख्यो तथा महर्षि यास्क के निरुक्त, आचार्य पाणिनि की अष्टाध्यायी महामुनि पतञ्जलि के महाभाष्य तथा भक्त हरि के वाक्यपदीय में भाषा के तार्त्विक विश्लेषण का जो निदर्शन हमें उपलब्ध होता है वह आज न केवल भारतवर्ष के लिए बल्कि विश्व के लिए आदर्श है। भाषा के सूक्ष्मातिमूक्ष्म अवयवों यथा ध्वनियों के उच्चारण स्थानों, प्रयत्नों, पदों की व्याख्या व भेदोप-भेदों, प्रकृति-प्रत्यय व वाक्यों का इतना विस्तृत एवं गहनतम सश्लेषण-विश्लेषण विश्व की किसी भी भाषा में उपलब्ध नहीं होता। जो भाषिक काय यूरोप-अमरीका आदि में अब हो रहा है, वह भारत में आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व ही चरम पर पहुँच गया था। इतना ही नहीं संस्कृत के अतिरिक्त कालांतर में विकसित भाषाओं में पालि का कच्चायन न प्राकृत का वररुचि ने अपभ्रंश का हेमचन्द्र ने विश्लेषण किया। आधुनिक काल में भी यह परम्परा अक्षुण्ण है। अनेकों नव्य भारतीय आर्य भाषाओं व बोलियों का आज भी अत्यन्त सूक्ष्म एवं वैज्ञानिक अध्ययन हुआ है जिनमें मूढय भाषा-विद डा. सुनीलकुमार चटर्जी कृत 'ऑरिजन एण्ड डेवलपमेंट आफ बंगाली' लैंग्वेज 'भारतीय आर्य भाषा व हिन्दी' डा० प्रीरेन्द्र वर्मा कृत 'ब्रज,

भाषा व्याकरण', हिन्दी भाषा का इतिहास, डॉ० उषाारायण त्रिपारी का भोजपुरी भाषा घोर साहित्य, हिन्दी भाषा उद्भव घोर विराम' ७० पद्ममा रायण का 'मधुम त्रिपरी की बोली' डा० कर्ह्यानाल दमा का 'हाजी की बोली घोर साहित्य' विशेषत उल्लेख्य है । प्रस्तुत बोध-प्रबध भी इसी परम्परा में जाड़ी जा सक्ने वाली एतरी है ।

प्रस्तुत बोध-प्रबध में मेरी प्रेरणा के आदि गीत श्रद्धेय गुरवर डॉ० कर्ह्यानालजी दमा हैं घोर यदि मैं यह कहूँ कि मेरे लेखन श्रद्धेय के ही प्रेरणा-स्रोत श्रद्धेय गुरवर हैं तो कोई अत्युक्ति न होगी ।

जब मैं एम ए (उत्तराद्ध) का छात्र था उस समय डा० साहब ने ही मुझे अष्टम पत्र में 'बीकानेरी नामपद' शीषक लघु शोध प्रबध लिखने की प्रेरणा दी । अपने लघु प्रबध को मुद्रित करवाते समय मुझे बोली के खण्ड अध्ययन का बोध हुआ । मैंने तत्काल निणय किया कि मैं आलोच्य बोली का सर्वांगीण अध्ययन प्रस्तुत करूँगा । उसी समय मैं अनुसन्धान परक अपने अध्ययन काय में जुट गया । मैंने अद्यावधि भाषाओं व बोलियों पर प्रकाशित प्राचीन अवाचीन लगभग सभी ग्रन्थों का अध्ययन किया । मैं अनवरत चार बष के अध्ययनसाध से प्रस्तुत प्रबध लिख पाया हूँ ।

अब प्रस्तुत प्रबध के प्रकाशित होने के शणो तक मैं जिन स्थितियों से गुजरा हूँ उनसे भी पाठकों को थोडा सा अवगत करा दूँ तो अप्रासंगिकता न होगी । अध्ययन करने का निश्चय करके मैंने सब प्रथम बोली के दो-ढाई सौ गद्य पद्यात्मक नमूने ग्रामीण क्षेत्रों व शहरी निवासियों के मुख से सुनकर इकट्ठे किये । उस समय मेरे समक्ष बोली के इतने सूदम प्राख्य उपस्थित हुए कि मेरे लिए यह निणय करना दुर्बह हो गया कि कौन से स्थल की बीकानेरी को आदश बोली मानूँ । बीकानेर शहर में ही ब्राह्मण जाति, क्षत्रिय जाति, वैश्य

(माहेश्वरी व ओसवाल) जाति, घोवीतलाई व चूनपचो के मोहल्ले में निवास करने वाली मुस्लिम जाति, गोस्वामियो के मोहल्ले में निवास करने वाली गोस्वामी जाति, डूम जाति व अन्य निम्न जाति के लोगो की बोली में ही सूक्ष्म अंतर उपलब्ध हुआ। कोलायत, नोखा, लूनकरणसर, रतनगढ सरदारशहर, डूगरगढ चूरु राजगढ, तारानगर आदि की बोलियो में भी अंतर उपलब्ध हुआ परंतु ऐसा स्थल एक भी उपलब्ध नहीं हुआ जहा इन विविध क्षेत्रो के निवासी एक दूसरे की बात को न समझें। जब मैं उनसे निजी बोली में ही बोलकर कहानी, दिससे आदि विविध क्षेत्रो में सुनता तो कोई भी वाक्य ऐसा नहीं होता था जिसे समझने में कठिनाई हो। हा एक दो शब्द या बोलने के ढंग में अत्यंत सूक्ष्म अंतर अनुभूत होता था। अतः मैंने अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रो व बीकानेर नगर में बोली जाने वाली व ग्रियसन द्वारा दत्त उदाहरण को आदेश बीकानेरी बोली मानकर प्रस्तुत बोली का गवेषणात्मक अध्ययन प्रारम्भ किया। तत्परिणाम स्वरूप मुझे विभिन्न क्षेत्रों में बीकानेरी की सात विशिष्ट ध्वनियां उपलब्ध हुईं जो इस प्रकार हैं—अ, ओ, ॐ, ०, ०ड, ०व, ०। उक्त ध्वनियो में एँ व ओँ ध्वनियां अंग्रेजी Hat व Hot शब्दों के हँ व हाँ के सदृश उच्चरित होती हैं। इन ध्वनियों के उच्चारण के लिए 'International Phonetic Association' की खास लिपि में [ɛ̃] से चिह्नित किया गया है। इन दो ध्वनियो के लिए तो मूळ लिपि चिह्न उपलब्ध हो गये पर दोष के लिए नहीं हुए। अतः सभी विशिष्ट ध्वनियो के लिए मैंने नये लिपि चिह्न निर्धारित किये जो इस प्रकार हैं—/ ̃ ० / बीकानेरी में — चिह्न विशिष्ट ध्वनि का द्योतक है यथा करकर व षरकर में उच्चारण व अर्थ भेद है। प्रथम शब्द आदेश वाचक व शोरगुल वाचक है जयकि द्वितीय आन्ध्र में रेत आदि चले जाने पर बोला जाता है। इसी प्रकार ओ ओँ में, ए एँ में, व-0२ में ०, ०ँ में ०ड, ०डँ में व ल ० में भिन्नता है। ध्वनियो

के विश्लेषणोपरांत मैंने बोली के विविध अवयवों- नामपदा, क्रियापदों, वाक्यों का क्रमशः अध्ययन किया। इस बीच मेरे सामने जी जो सद्वातिक एवं व्यावहारिक कठिनाइयाँ आईं उन्हें मैं बोली के ममज्ञ मनीषियों व भाषिक प्रथो के आधार पर सुलभाता रहा। पाठको को यह जानकर आश्चर्य होगा कि मैंने यह प्रबंध सात बार लिखा एवं प्रत्येक आवृत्ति में मेरे समक्ष नये नये तथ्य उजागर हुए। मेरे अध्यवसाय व अथक प्रयास के बावजूद भी यदि वही नुटियाँ रह गई हैं तो विद्वान्गण मेरे तीनों प्रबंधों (बीकानेरी-नामपद, बीकानेरी-क्रियापद बीकानेरी बोली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन का अध्ययन कर अपने बहुमूल्य सुझावों से मुझे लाभान्वित करेंगे।

प्रस्तुत प्रबंध के विषय में मैं गर्वोक्तियाँ लिखकर आत्मश्लथी बनना नहीं चाहता पर इतना अवश्य कहूँगा कि प्रस्तुत प्रबंध राजस्थानी की प्रतिनिधि शाखा मारवाड़ी और मारवाड़ी की प्रतिनिधि बोली बीकानेरी का प्रथम व मौलिक अध्ययन है। इससे पूर्व ग्रियसन महोदय ने इस बोली पर यत्किंचित् प्रकाश डाला है पर वह नाममात्र का ही है।

इस अवसर पर मैं अत्यंत ही हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ जब श्रद्धेय गुरुवर डॉ० कल्याणलाल शर्मा ने अपने अत्यंत व्यस्त समय में प्रस्तुत शोध-प्रबंध की भूमिका लिखकर मुझे कृतकृत्य किया है। मैं अपने अग्रज डॉ० गोपालनारायण श्री शिवशंकरनारायण व डॉ० कविवर भगवानदास किराडू के प्रति विशेष आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने किसी न किसी रूप में प्रस्तुत प्रबंध लेखन व प्रकाशन में सहयोग दिया है।

अतः मैं आपरितोपाद विदुषा न साधु मये प्रयोगविज्ञान व करतृत्तमपराद्ध अतुमर्हति सतः अभ्यथनाभो के साथ अद्यावधि की धमसाधना का यह पुष्प मा वागेश्वरी के पाद-पङ्क्तौ मे समर्पित करता हूँ—

व्यास-निकेतन
नत्सूसर गेट के भीतर
बीकानेर

डॉ० रामकृष्ण व्यास 'महेन्द्र'
एम ए (संस्कृत-हिंदी)
पीएच डी

जन्माष्टमी वि० सं० २०३१

नए लिपि एवं संकेत-चिन्ह

यह अक्षर सवृत पश्च अति ह्रस्व स्वर है। हिन्दी की ऐ, इ एवं कभी-कभी अ ध्वनि का उच्चारण बीकानेरी में इस ध्वनि में होता है यथा — हि० ऐमा - बी० अस्सो हि० कितना - बी० कत्तो हि० रक्षा - बी० रक्ष्णा आदि ।

यह अक्षर विवृत अग्र ह्रस्व स्वर है। बोनी में इस ध्वनि का उच्चारण अंग्रेजी शब्द Men Then Pen आदि के ऐं ध्वनि के समान होता है यथा कैँण आदि ।

यह अक्षर विवृत ह्रस्व पश्च स्वर है। इस ध्वनि का उच्चारण बोली में अंग्रेजी शब्द 'on' के ओं की तरह होता है यथा ओँ, थों ओँ आदि। हिन्दी की अधिकांश आकारात्त ध्वनियों का उच्चारण इसमें होता है।

:- बीकानेरी में इन दोनों ध्वनियों में क्रमशः ब + भ = ०ब एा द + ध = ०द का योग है। इन ध्वनियों का उच्चारण न तो 'ब' के समान होता है और न द के समान यथा ०बडबोर में प्रथम ब का उच्चारण द्वितीय ब के उच्चारण से भिन्न है।

नेप ध्वनियाँ अधिकतर हिन्दी के समान ही उच्चरित होती हैं अतः यहाँ प्रस्तुत नहीं की गई हैं।

ध्वनि प्रक्रियात्मक दृष्टि में सपरिवर्तक का च्योतक ।

तथ्य के स्पष्टीकरण के लिए प्रयुक्त संकेत

हन्त

युत्पन्न या सिद्ध रूप का च्योतक

एतिहासिक पूर्ण रूप से पर रूप का च्योतक

पर प्रत्यय एा विभक्ति का विभाजक संकेत

धातु संकेत

प्रत्यय के पश्चात् लगाने से पूर्व रूप एवं उसके पूर्व में लगाने से पर रूप का च्योतक ।

संक्षिप्त-रूप

अप०
आ० भा० आ० भा०
आ० ई० ऊ० व्य० वि०

ई०
ई० पू० प्र०
एल० एस० आई०
गौ० ही० ओ०
ति० आ० वि० प्र०
पृ०
प०
प्रा०
पु०
पु० सं०
पप्र०
बी० रा० इ०
भा० वा० सं०
मू० आ० वि० प्र०
मू० एव वि० सं० वि० रूप
दि० द० का०
स० आ० वि० प्र०
स्त्री० सं०

अपभ्रंश
आधुनिक भारतीय आय भाषा
आकारात् ईकारात् ऊकारात् यजनात्
विशेषण
ईसा
ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी
लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया
गौरीशंकर हीराचंद ओझा
तियक आधार विधायक प्रत्यय
पृष्ठ
पंडित
प्राकृत
पुस्तिक
पुस्तिक सज्ञा
पर प्रत्यय
बीकानेर राज्य का इतिहास
भाव वाचक सज्ञा
मूल आधार विधायक प्रत्यय
मूल एव विकारी सज्ञा व विशेषण रूप
लिंग-वचन-कारक
सम्बोधन आधार विधायक प्रत्यय
स्त्री वाचक सज्ञा
संस्कृत

विषयानुक्रमिका

भूमिका
प्राक्कथन
सकेत चिह्न
संक्षिप्त-रूप
विषय सूची

पृष्ठ
क-घ
ख-द
इ
छ
ज

१ विषय-प्रवेश

१	१	बीकानेर की प्रागैतिहासिक पृष्ठभूमि	१
१	२	बीकानेर प्रदेश का नामकरण	३
१	२	१ नामकरण विषयक मतमतांतर	४
१	३	बीकानेरी' शब्द के विभिन्न अर्थ एवं उसका बोली रूप में प्रयोग	७
१	४	बीकानेरी-क्षेत्र	८
१	५	बीकानेरी की सीमाएँ	८
१	६	बीकानेरी-भाषी जनसंख्या	९
१	७	राजस्थानी की विभिन्न बोलियाँ एवं मारवाड़ी-	१०
१	७	१ मारवाड़ी की विभिन्न शाखाएँ एवं बीकानेरी	११
१	७	२ मारवाड़ी एवं बीकानेरी में अंतर	१२
१	८	आदर्श बीकानेरी	१३
१	९	बीकानेरी की भाषा वैज्ञानिक विशेषताएँ	१४
१	९	१ ध्वन्यात्मक विशेषताएँ	१४
१	९	२ स्वरत्मक विशेषताएँ	१५

२ सजापद

२	१	एक स्वतंत्र रूपान्तर युक्त नामवाची पद (सजा पद)	२५
२	१	१ प्रातिपदिक	२५
२	१	१ १ स्वरान्त प्रातिपदिक	२५
२	१	१ २ व्यञ्जनांत प्रातिपदिक	२५
२	१	२ लिङ्ग	३०
२	१	२ १ लिङ्गज्ञान	३०
२	१	२ २ रूपगत लिङ्गज्ञान	३२

(II)

२ १ २ ३	अन्त्य ध्वनि के आधार पर लिङ्ग परिचय	३४
२ १ २ ४	स्त्री प्रत्यय	३६
२ १ २ ५	प्रयोग के आधार पर लिङ्ग परिचय	३८
२ १ ३	वचन	३८
२ १ ३ १	वचन विधान	३९
२ १ ४	कारक	४३
२ १ ४ १	अविकृत या मूल कारक	४४
२ १ ४ २	विकृत या विकारी कारक	४४
२ १ ४ ३	परसम	४७
२ १ ४ ३ १	कर्ता कारक	४८
२ १ ४ ३ २	कर्म कारक	४८
२ १ ४ ३ ३	करण कारण	४८
२ १ ४ ३ ४	सम्प्रदान कारक	४९
२ १ ४ ३ ५	अपादान कारक	४९
२ १ ४ ३ ६	संबन्ध कारक	५०
२ १ ४ ३ ७	अधिकरण कारक	५०
२ २	दो या दो से अधिक स्वतंत्र रूपांश युक्त नामवाची पद (समस्त सज्ञा पद)	५१
२ २ १	बीकानेरी में प्रयुक्त समस्त सज्ञा पद	५५
२ २ १ १	अविकृत समस्त सज्ञा-पद	५५
२ २ १ २	विकृत समस्त सज्ञा पद	५५
२ २ १ २ १	आदि (प्रथम) सप्पटक में विकार	५६
२ २ १ २ २	अन्त्य (द्वितीय) सप्पटक में विकार	५७
२ २ १ २ ३	द्विपद समीपी सप्पटक में विकार	५९
२ २ १ ३	सन्लिष्ट एव विदिलिष्ट समस्त सज्ञा पद	६०
२ २ १ ३ १	सन्लिष्ट समस्त सज्ञा-पद	६१
२ २ १ ३ २	विदिलिष्ट समस्त सज्ञा-पद	६२
२ २ १ ४	समस्त सज्ञा-पद शून्य मूलक विश्लेषण	६४
२ २ १ ५	समस्त सज्ञा-पद रचना प्रक्रिया	६९
२ २ १ ५ १	प्रथम पद सज्ञा बाल समस्त-पद	६९
२ २ १ ५ २	प्रथम पद विभाषण बाल समस्त सज्ञा-पद	७३

(IV)

४ ४ १ ४	प्रत्येक बोधक विभेपण	१०३
४ ४ १ ५	सामान्य बोधक विभेपण	१०४
४ ४ २	अनिश्चित सख्या वाचक विशेषण	१०४
४ ४ ३	परिमाण वाचक विशेषण	१०५
४ ५	त्रियामूलक विशेषण	१०५

५ नामपदों के निर्माणकारी प्रत्यय,

५ १	सामान्य विवेचन	१०८
५ २ १	व्युत्पादक प्रत्यय पूर्व प्रत्यय	१११
५ २ १ १	सज्ञा पदों के निर्माणकारी पूर्व प्रत्यय	१११
५ २ १ २	विभेपण पदों के निर्माणकारी प्रत्यय	११३
५ २ २	पर प्रत्यय	११४
५ २ २ १	प्रथम पर प्रत्यय (कृत)	११४
५ २ २ १ १	सज्ञापदों के निर्माणकारी प्रथम पर प्रत्यय (कृत)	११५
५ २ २ १ २	विभेपण पदों के निर्माणकारी प्रथम पर प्रत्यय	११८
५ २ २ २	द्वितीय पर प्रत्यय (तद्धित),	११६
५ २ २ २ १	सना से सज्ञा व्युत्पादक पर प्रत्यय	१२०
५ २ २ २ २	सर्नाम से सज्ञा व्युत्पादक पर प्रत्यय	१२३
५ २ २ २ ३	विभेपण से सज्ञा व्युत्पादक पर प्रत्यय	१२४
५ २ २ २ ४	त्रिया विभेपण से सज्ञा व्युत्पादक पर प्रत्यय	१२५
५ २ २ २ ५	सना से विभेपण व्युत्पादक पर प्रत्यय	१२६
५ २ २ २ ६	सर्नाम से विभेपण व्युत्पादक पर प्रत्यय	१२८
५ २ २ २ ७	विभेपण से विभेपण व्युत्पादक पर प्रत्यय	१२६
५ २ २ २ ८	त्रिया विभेपण से विभेपण व्युत्पादक प्रत्यय	१२६
५ ३	व्याकरणिक प्रत्यय विभक्ति प्रत्यय	१३०
५ ३ १	सज्ञा पदों के निर्माणकारी विभक्ति प्रत्यय	१३०
५ ३ १ १	पुल्लिङ्ग सना पदों के निर्माणकारी विभक्ति प्रत्यय	१३१
५ ३ १ २	स्त्रीलिङ्ग सना पदों के निर्माणकारी विभक्ति प्रत्यय	१३३
५ ३ २	सर्नाम पदों के निर्माणकारी विभक्ति प्रत्यय	१३४
५ ३ ३	विभेपण पदों के निर्माणकारी विभक्ति प्रत्यय	१३४
	उपसर्ग	१३७
	सहायक ग्रन्थ-सूची	१३६

६ अन्वय

6 1	सामान्य विवेचन	137
6 2	अव्यय-वर्गीकरण	138
6 2 1	क्रियाविशेषण	140
6 2 1 1	मूल क्रियाविशेषण	140
6 2 1 2	व्युत्पन्न क्रियाविशेषण	143
6 2 1 2 1	सत्ता से व्युत्पन्न क्रियाविशेषण	143
6 2 1 2 2	सावनामिक के द्रक रूपा से व्युत्पन्न क्रियाविशेषण	146
6 2 1 2 3	अव्ययों से व्युत्पन्न क्रियाविशेषण	148
6 2 1 2 4	घातुओं से व्युत्पन्न क्रियाविशेषण	148
6 2 1 3	सयुक्त क्रियाविशेषण	149
6 2 1 3	द्विरुक्ति मूलक सयुक्त क्रियाविशेषण	
6 2 2	मबध सूचक	151
6 2 3	समुच्चय बोधक अव्यय	152
६ 2 3 1	समानाधिकरण	153
6 2 3 2	अधिकरण	154
6 2 4	विभ्रम्यादि बोधक अव्यय	155
6 2 5	बलात्मक 'त' इति (निपात)	155

७ क्रियापद

7 1	सामान्य विवेचन	157
7 2	घातु	157
7 2 1	मूल घातुए	159
7 2 1 1	स्वरात घातुए	159
7 2 1 2	व्यञ्जनात घातुए	159
7 2 1 2 1	एकाक्षरी व्यञ्जानात घातुए	159
7 2 1 2 2	द्व्यक्षरी व्यञ्जनात घातुए	159
7 2 2	योगिक घातुए	162
7 2 2 1	प्रेरणायक घातुए	162
7 2 2 1 1	द्वितीय प्रेरणायक घातुए	165

7 2 2 2	नाम धातुए	166
7 3	क्रियापद संरचना	167
7 3 1	समापक क्रियापद	168
7 3 1 1	काल संरचना	168
7 3 1 1 1	तिङ्-तमूलक काल संरचना	173
7 3 1 1 2	कद-तमूलक काल संरचना	174
7 3 1 1 2 1	मूल कद तीय काल	173
7 3 1 1 2 2	सयुक्त कद तीय काल	175
7 3 1 2	प्रथ	181
7 3 1 3	वाच्य	182
7 3 1 4	लिंग, वचन, पुरुष	189
7 3 2	असमापक क्रियापद	189
7 4	सयुक्त क्रिया	192

८ वाक्य-संरचना

8 1	सामान्य विवेचन	193
8 2	गुरु लहर	196
8 3	वाक्य वर्गीकरण	196
8 3 1	माशरणा वाक्य	196
9 3 2	मिश्र वाक्य	202
8 3 3	सयुक्त वाक्य	204
8 4	वाक्य विस्तारण	205
8 4 1	उद्देश्य	205
8 4 2	विषय	206
8 4 3	संबोधक क्रिया	206
8 5	विस्तार	206
8 6,	साध	208
9 7	वाच्य	209
8 8	पञ्चम	210
9	निष्कर्ष एवं उदाहरणियाँ	211
10	परिच्छेद 1 ब ना के धुने हुए मयूत	113
11	परिच्छेद 2 मगपद प्रथम सूचा	117

समर्पण

वात्सल्य, दया एव सौम्यता
की

साकार मूर्ति

पूज्य-पाद पितृश्री प प्रवर

वगसीराम जी व्यास

विद्यावाचस्पति, साहित्याचार्य, व्याकरणाचार्य
को

जिनका अथक परिश्रम, अपार स्नेह एव प्रेरणास्पद

सदुपदेश ही इस कृति का मूल कारण है

उही के पाद-पंकजों में

यह कृति समर्पित

है।

विषय-प्रवेश

११ वीकानेर की प्रागैतिहासिक पृष्ठभूमि

भारतीय प्रागैतिहासिक राजस्थान प्रांत का ऐतिहासिक एवं साहित्यिक दृष्टि में महत्वपूर्ण स्थान है। स्वर्णमय सिकता के विशाल टीला से आवृत्त वीकानेर नगर इसी प्रांत के पश्चिम उत्तर में स्थित है। भूगम शास्त्रियों का अनुमान है कि यह प्रदेश जूरेनिक क्रीटेशियम एवं इसासिन के युग में समुद्राप्लावित था। टरीशरी युग में इस प्रदेश की भौगोलिक स्थिति में परिवर्तन हुआ एवं पृथ्वी की आंतरिक शक्तियों के सक्रमण से वह भाग ऊपर उठने लगा। शन शन समुद्र समाप्त हो गया एवं रेतीला भाग निकल जाया। वामीकि रामायण में भी समुद्र से मरुस्थल की उत्पत्ति विषयक एक रावक गाथा मिलती है।^१ वदा की ऋक्षाभा से भी उक्त भूविद्या

१— तस्मात् तद बाण पातन त्वप कुक्षिष्वशोषयत् ।

विख्यात त्रिपु लोकेषु मरुकातार मेव सत् ॥

(युद्ध काण्ड / सर्ग २२ / श्लोक ३६ ३७)

आवेग की पुं- ही जाती है । आगे की कथाओं में उक्त विनया है कि गङ्गा नदी का भाग और सरस्वती नदी की रविपत्नी की तरह गङ्गा में आकर गिरती थी ।^१ बीकानेर के नामों से ही भाग पर यद्यपि आज हम विनी भी गङ्गा के समान मही जाने तथापि पुरातत्त्वशास्त्र के आधार पर कहा जा सकता है कि इनकी पश्चिमी सीमा पर अभी सरस्वती नदी बहा करती थी जो पूरा नदी का पूरा हिस्सा है ।^२ पं० विद्याधर शास्त्री की भी यही मान्यता है कि बीकानेर का उत्तर पूर्वी भाग गङ्गा-सरस्वती की महायता से अनुशासित रह चुका है ।^३ जब अतिशय गङ्गा नदी की सहायक नदी पण्डर भी जो पहले हावड के नाम से विख्यात थी इसके उत्तरी भाग में बहती हुई गङ्गा में आकर गिरती थी । सरस्वती नदी का सुप्त हाता ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी में भी पूरा मानता उचित है क्योंकि महाकवि वालिमाग ने अपने कथा में जहाँ जहाँ सरस्वती नदी का उल्लेख किया है अतः समीक्षता कह कर ही किया है एवं वालिमाग का समय ई० पू० ३० शताब्दी ही विद्वानों का मान्य है । महाभारत में भी सरस्वती नदी के सुप्त होने का उल्लेख मिलता है ।^४ पण्डर के सुप्त होने का समय विद्वानों की ई० की छठी शताब्दी

१- एता चेतसरस्वती नदीनां सुचियती गिरिभ्य आ समुद्रात् ।

(ऋग्वेद, ७ म / ६५ सू० / ३ मत्र)

इद्रेपिते प्रसव भिक्षमागे समुद्र रथ्यव याव ।

(ऋग्वेद ३ म / ३३ सू० / २ मत्र)

२- गौरी शकर आचाय बीकानेर का परिचय पृष्ठ ७

३- पं० विद्याधर शास्त्री वर्तमान बीकानेरी और सञ्चत राजस्थान भारती अ व २, भाग ४, अक्टूबर १९५४

४- अवलोकनीय महाभारत—

दृष्यादृष्य च भवति तत्र सरस्वती ।

एता दिव्या सप्तगगा त्रिषु लोकेषु विश्रुता ॥

(भीष्म पर्व ६/५०)

मान्य है। उक्त नदियों के सूखने का माग तो आज भी दृष्टिगत हाता है। वर्षा काल में यानी इसी माग से हनुमानगढ़, सूरतगढ़, हाता हुआ अनूपगढ़ पहुँच जाता है जिसे आजकल "नाली" कहते हैं।

उपयुक्त एव अन्याय प्रमाणों से स्पष्ट ही जाता है कि समुद्र के पीछे हट जाना या सूख जाने के परिणाम स्वरूप मरु प्रदेश उद्भूत हुआ। बीकानेर प्रदेश में आज भी वहीं वही समुद्र के अवशेष के रूप में दाल, सीपी, कौड़ी, गोल पत्थर आदि मिलते हैं, जो बीकानेर का किसी काल विशेष में समुद्राप्लावित होने की सूचना देने हैं एव जो नर्मिया (सरस्वती, घग्गर आदि) इसकी उत्तरी पूर्वी सीमा पर प्रवाहित होनी थी वे भी अब पूणत सुप्त हो गई है।

१२ बीकानेर प्रदेश का नामकरण

पौराणिक विवरणों से स्पष्ट होता है कि बीकानेर का प्राचीन नाम 'जागल' देग था।^१

१- (क) गौरी शंकर हीराचंद थोम्सा बीकानेर राज्य का इतिहास,

पहला भाग, पृष्ठ १

(ख) स्कंद पुराण के प्रभास माहत्म्य में तीर्थाष्टक की गणना है, जिसमें पुष्कर के साथ (कुर जागल) का भी पाठ है। (अध्याय ८८, श्लोक २२)

(ग) अवलोकनीय महाभारत

(अ) कच्छा गोपाल कथाएच जागला कुर वणक

(भीष्म पर्व, ६ / ५६)

(ब) तत्रेमे कुर पाचाला शाल्वामादेय जागला

(अग्नि पर्व, १० / ११)

(स) पंच राज्य महाराज । कुरवस्ते स जागला ।

(उद्योग पर्व ५४ / ७)

विक्रयनीर > विक्कनेर > बीकानेर

३— कनल टाड ने बीकानेर का नाम रात्र ' बीका " एव " नेरा " जाट दाना व्यक्तियों के नाम के मेल से माना है। अपने मत की पुष्टि के लिए उन्होंने लिखा है कि " बीकानेर की राजधानी का निर्माण जो स्थान पर किया गया, उसका स्वामी एक जाट था। बीकाजी न जाट से उस स्थान का माग की ओर आश्वासन दिया कि तुम्हारा नाम जोड़ कर इस राज्य का नाम रखूंगा। उस जाट ने बीकाजी का प्रस्ताव महर्षि स्वीकार करत हुए भूमि दे दी। तत्पश्चात् उस भूमि में राजधानी का निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ और जिस राज्य की प्रतिष्ठा राव ' बीका " ने की उसका नाम बीकानेर रखा गया। यह दृष्टव्य है कि उस जाट का नाम ' नेरा ' था।^१

४— डा० गौरी शंकर हीराचन्द आभा के अनुसार टाड का यह अनुमान ठीक नहीं है। उनके अनुसार राव बीका ने अपने नाम पर ही इस प्रदेश का नाम " बीकानेर " रखा।^२

५— भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से दमन पर उपयुक्त मत युक्ति सगत प्रतीत नहीं है। वस्तुतः " बीकानेर " शब्द का शब्दा ' बीका + नगर " के मेल से बना है। प्रथम शब्द स्पष्टतः राव ' बीका " का ही नाम है एव द्वितीय ' नगर ' का विकास राम डा श्याम सुन्दर दास के अनुसार इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

स० नगर > प्रा० गण-नरो > अप० नगर > आ० भा० आ० भा० नर-नेर^३

" नगर " शब्द से ' नेर ' ' नगर ' का रूपान्तरण एव ध्वन्यात्मक विकास इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

संस्कृत के " नगर " शब्द से प्राकृत में ' नाण सयत्र ५ गून से नकार का परिवर्तन एकार में हुआ एव ' कगचजतदपयवा

१— कनल टाड राजस्थान का इतिहास पृष्ठ ५१२

२— डा० गौरी शंकर हीराचन्द आभा बी० रा० इ०, (पहला भाग) पृष्ठ ६६

३— डा० श्याम सुन्दर दास भाषा विज्ञान, पृष्ठ १७२

४— वररवि प्राकृत प्रकाश २/४२

प्रायोलोप "१" सूत्र से अल्पप्राण, कठय स्पस व्यजन " ग " का लोप हो गया। सोविन्दुन पु सके^२ सूत्र से ' अम " बिन्दु म परिवर्तित होने पर प्राकृत म ' एअर " रूप सिद्ध हुआ। अपभ्रंश काल म एकार पुन नकार म परिवर्तित हुआ एव दो स्वरो के बीच य " श्रुति का आगम हुआ। अपभ्रंश उकार बहुला भाषा है अतः अ > उ म परिवर्तित हुआ। इस प्रकार अपभ्रंश मे ' नयर " रूप सिद्ध हुआ। आ० भा० आ० भा० म सरलीकरण की प्रवृत्ति के कारण य > इ म एव पदान्त स्वर लोप की प्रवृत्ति के कारण अत्य उ का लोप हो गया एव अ + इ (गुण सच्चि) से नेर शब्द व्युत्पन्न हुआ।

इस प्रकार निष्कल्प रूप मे कहा जा सकता है कि " बीकानेर " शब्द की व्युत्पत्ति दो शब्दों बीका + नगर " से हुई है। प्रथम शब्द तो निर्विवाद रूप से राव बीका के नाम से सम्बद्ध है एव द्वितीय शब्द ' नेर " न राव बीका के ज्येष्ठ पुत्र ' नरा ' से सम्बद्ध है और न ही ' नेरा ' जाट से। दोनों मत कल्पना प्रसूत ही प्रतीत होते हैं जिसे टाड जैसे विद्वान ने बिना किसी गवेषणा बुद्धि के स्वीकार कर लिया। यदि टाड का मत स्वीकार कर भी लिया जाय तो अय प्रदेशो (भटनेर, जोबनेर, चापानेर) जिनके पीछे ' नेर ' शब्द जुड़ा है वहा भी " नरा ' जाट का अस्तित्व स्वीकार करना पडेगा जो इतिहास विरुद्ध है। ' नेर ' द्वारा नगरा के नामकरण करने की परम्परा संभवतः १५ वीं शती से पूर्व प्रचलित थी। इसी पूर्व प्रचलित परम्परा के अनुसार ' ने ' अपने नाम के पीछे नगर वाचक ' नर ' शब्द जोड़कर इस प्रदेश का नाम ' बीकानेर ' रखा।

इसी बीकानेर प्रदेश म बोली जाने वाली बोली को डा० प्रियसन^३ डा० मुनीति कुमार चटर्जी^४ डा० भोवानाथ तिवारी^५ प० नरोत्तमनाथ

१- वर्गचि प्राकृत प्रकाश २ / २

२- वर्गचि प्राकृत प्रकाश ५/३०

३- डाक्टर प्रियसन एल० एस० आई भाग ६, पृष्ठ १३०

४- डॉक्टर मुनीति कुमार चटर्जी राजस्थानी भाषा पृष्ठ ६७

५- डाक्टर भोवानाथ तिवारी भाषा विज्ञान का पृष्ठ ५१५

स्वामी १ प्रभृति विद्वाना ने बीकानेरी बोली नाम से अभिहित किया है क्योंकि देश वाचक शब्द के साथ “-ई प्रत्यय जोड़कर भापा या वाली वाचक शब्द बनाया जाता है यथा—महाराष्ट + -ई = महाराष्टी, पजाब + -ई = पजाबी बंगाल + -ई = बंगाली । इसी प्रकार बीकानेर + -ई = बीकानेरी बोली वाचक शब्द बना है ।

१ ३ “ बीकानेरी ” शब्द के विभिन्न अर्थ और उसका बोली रूप में प्रयोग

‘बीकानेरी’ शब्द के विविध अर्थ हैं । यह शब्द कही सज्ञावत् एव कही विशेषणवत् प्रयुक्त होकर वस्तुओं एव प्राणियों का वाचक बनता है । परन्तु बीकानेरी शब्द से मेरा आशय उस बोली से है जो बीकानेर प्रदेश में बोली जाती है । बोली रूप में इस शब्द का प्रयोग कब हुआ निर्विवाद रूप में नहीं कहा जा सकता । श्री अजरचंद नाहटा को जन संग्रहालय में तीन रचनाएँ उपलब्ध हुई हैं । तीसरी प्रति में दिल्ली बीकानेर मारवाड़ तथा गुजरात की भाषाओं एव डून्डाडी, मेवाडी एव दक्षिणी के एक एक सर्वे हैं ।^१ इस प्रति का रचना काल उन्होंने १७ वीं शती बतलाया है । सन् १८७३ (सन् १८१६) में श्री माश मैन जोर वाड नाम के पाश्चात्य विद्वानों ने भारतीय भाषाओं के सम्बन्ध में एक रिपोर्ट प्रकाशित की जिसमें भारतवर्ष में बोली जाने वाली ३३ भाषाओं एव बोलियों के नमूने दिये गये थे । उनमें राजस्थानी की छ बोलियाँ मारवाड़ी बीकानेरी उदयपुरी, जयपुरी, हाडोती और मालवी के नमूना का समावेश किया गया था।^२ श्री माश और वाड ने १६ वीं शती के प्रथम चरण में बाइबिल के द्वितीय खण्ड (न्यू टेस्टामेंट) का मारवाड़ी उदयपुरी या मेवाड़ी बीकानेरी जयपुरी, हाडोती तथा उज्जैनी या मालवी बालिया में अनु-

१— प० नरोत्तमदास स्वामी राजस्थानी, पृष्ठ ५५

२— अजरचंद नाहटा राजस्थान भारती भाग ३, अंक ३४, पृष्ठ ११३, जुलाई १९५३

३— प० नरोत्तमदास स्वामी राजस्थानी पृष्ठ ५५

वाद किया।^१ सर जाज प्रियमन ने बीकानरी को उत्तरी मारवाड़ी की एक उपशाखा स्वीकार किया।^२

उपयुक्त उल्लेखों से स्पष्ट हो जाता है कि "बीकानरा" शब्द का बोली रूप में प्रयोग अत्यन्त प्राचीन है परन्तु निर्विवाद रूप में यह नहीं कहा जा सकता कि सब प्रथम इस शब्द का बोली रूप में प्रयोग कब हुआ। भारतीय आद्य भाषाओं में प्रायः देशवाचक शब्दों के साथ "ई" प्रत्यय जोड़ कर बोली या भाषा वाचक शब्द बनाया जाता है यथा मारवाड़ + ई = मारवाड़ी राजस्थान + ई = राजस्थानी जाति। इसी प्रकार से बीकानेर प्रदेश वाचक शब्दों के साथ 'ई' प्रत्यय जुड़कर ही "बीकानेरी" शब्द बना है और इस शब्द का बोली रूप में प्रयोग भी बीकानेर की स्थापना के पश्चात् ही हुआ है।

२४ बीकानेरी-क्षेत्र

बीकानेरी बोली का क्षेत्र तत्कालीन बीकानेर राज्य का अधिकांश भाग है। तत्कालीन बीकानेर राज्य राजस्थान बनने के पश्चात् तीन जिलों में विभाजित हो गया— बीकानेर मगानगर एवं चूरु। इनमें से मगानगर का अधिकांश भाग बीकानेरी भाषी नहीं है। वर्तमान बीकानेर जिले की चारों तहसीलों—बीकानेर कोटापत्त नोखा व तूणसरणमर बीकानेरी भाषी है। चूरु जिले की रतनगढ़ सर परणहर मुजानगढ़ व डूंगरगढ़ तो पूरे रूप से बीकानेरी भाषी तहसीलें हैं पर राजगढ़ का एक तिहाई पश्चिमी भाग और चूरु का भी लगभग आधा पश्चिमी भाग बीकानेरी-भाषी है। इसी जिले की तारानगर तहसील बीकानेरी क्षेत्र में आती है।

१५ बीकानेरी की सीमाएँ

बीकानेरी की उत्तरी सीमा तट्टा राठी और पञ्जाबी वादियों द्वारा

१- श्री मुनीश कुमार चन्नी राजस्थानी पृष्ठ ५६

२- प्रियमन एच० एम० आर्द० भाग ६ पृष्ठ १७

मेर सामने आये उत्तम निचिा रूपेण कहा जा सकता है कि उत्तम बीकानेरी भाषिया की जनसंख्या १९६१ की जनगणना के अगिन् भारतनय के आंकडा से सक्डा गुना अधिक् है । भाषा विषयन गलत आंकडे जनगणना के अन्तर पर दमलिए एक्त्र हो जाते हैं कि भाषा एक् बोलिया का महत्त्वपूर्ण बाय ऐसे ब्यक्तिया के द्वारा सपन होता है जो भाषा एक् बोलियो के स्वप्न का विस्नेपण नही कर सकते । इसका दूसरा कारण यह है कि जनगणना क अन्तर पर बीकानेरी बोलन बाता ने अपनी बोली भारवाडी ही बताई है अत यन्मान बीकानेरी भाषिया की जनसंख्या क्षेत्र क सीमा के आधार पर ७, १५, ००० मानी जा सकती है ।^१

१ ७ राजस्थानी की विभिन्न बोलिया एक् भारवाडी

राजस्थानी की विभिन्न बोलिया मे बीकानेरी का स्थान कहा है ? इस निष्कष पर पहुँचने के लिए यदि हम अधिवारी विद्वाना द्वारा किया गया राजस्थानी बालिया का वर्गीकरण प्रस्तुत करें तो अप्रासंगिक न होगा । डॉ० प्रियसन ने एल० एस० आई० भाग ६ म राजस्थानी का वर्गीकरण इस प्रकार किया है—

१— पश्चिमी राजस्थानी— इसमे ये बोलिया आती हैं— जोधपुर की स्टैंड या 'खडी राजस्थानी' जर्थात् शुद्ध पश्चिमी भारवाडी ठटकी, तथा धली, और बीकानेरी, बागडी शेखावटी मेवाडी, खराडी सिरोही की बोलिया (' बाबू रोड की बोनी या राठी, तथा साणठ की बोनी इनम हैं), गोडवाडी और देवडावाटी ।

२— उत्तर पूर्वी राजस्थानी अहीरवाटी और मेवाती ।

३— मध्य पूर्वी राजस्थानी (डूढाडी) - तोरावाटी, " खडी जपुरी " काठडा राजावाटी अजमेरी किशनगडी, चौरासी (शाहपुरा), नागर चाल हाडीती (रिवाडी के साथ) ।

१— ससस आफ इण्डिया सत्र १९६१, क्षेत्र क सीमा म दिए गये ग्रामो व तहसीना म बीकानेरी भाषिया की जन संख्या, के आधार पर ।

४- दक्षिण पूर्वी राजस्थानी या मालवी इसके कई रूप भेद हैं जिनमें रागड़ी और सौंडवाडी हैं ।

५- दक्षिणी राजस्थानी इनमें निमाटी आती है ।

परंतु श्री सुनीतिबुमार चाटुर्ज्या उक्त वर्गीकरण को मायता नहीं देने ।^१ उनके अनुसार ग्रियसन की १ तथा ३ वग की बोलियों को ही राजस्थानी नाम देना उचित है । एक को पश्चिमी राजस्थानी एव तीन को पूर्वी राजस्थानी कहना वे उचित मानते हैं । वे अहीरवाटी मेवाडी निमाडी को पछाही हिन्दी से सम्पर्कित मानते हैं और अपनी इस मायता की सदिग्धावस्था के साथ चरम निष्कप की अपेक्षा रखते हैं । परंतु चाटुर्ज्या के इस निष्कप से बीकानेरी की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आता और ग्रियसन के अनुसार उसे पश्चिमी राजस्थानी के अंतर्गत रखा जा सकता है । पश्चिमी राजस्थानी की प्रधान बोली मारवाडी है ।

१ ७ १ मारवाडी की विभिन्न शाखाएँ एव बीकानेरी तथा उनमें अन्तर

जैसा कि उल्लेख किया जा चुका है कि मारवाडी पश्चिमी राजस्थानी की प्रमुख बोली है । प्रमुख रूप से मारवाड की भाषा होने के कारण इसका नाम मारवाडी है । यह नाम नया नहीं है । अजुल फजल के 'आइने अकबरी' तथा कुछ अन्य प्राचीन पुस्तका में भी यह आया है ।^२ मारवाडी का क्षेत्र मारवाड, मेवाड पूर्वी सिंध, जैसलमेर, बीकानेर दक्षिणी पंजाब तथा जयपुर का पश्चिमी-उत्तरी भाग है । मारवाडी अपने भौगोलिक विस्तार की दृष्टि से राजस्थानी की अन्य सभी बोलियाँ के योग से बड़ी है ।^३ बीकानेरी इसी मारवाडी की एक प्रमुख बोली है । डॉ० भोलानाथ तिवारी ने मारवाडी का वर्गीकरण इस प्रकार किया है ।

परिनिष्ठित मारवाडी-यह मारवाड में बोली जाती है । इसके अनिश्चित

१- श्री सुनीति कुमार चटर्जी राजस्थानी भाषा, पृष्ठ ६१०

२- डॉ० भोलानाथ तिवारी भाषा विज्ञान कोष, पृष्ठ ५१५

३- वही पृष्ठ ५१५

पूर्वी, दक्षिणी, पश्चिमी तथा उत्तरी ये चार रूप हैं जिनके अन्तगत प्रसिद्ध उन बोलियाँ इस प्रकार हैं—

पूर्वी मारवाड़ी—भगरा की बाती, मेरवाड़ी-मारवाड़ी, गिरागिया की बोली
मारवाड़ी हू डाडी, गोडावाटी मेवाड़ी । मेरवाड़ी-मारवाड़ी ।

दक्षिणी मारवाड़ी—गोडवाड़ी तिरोही, देवड़ावाटी, मारवाड़ी गुजराती
पश्चिमी मारवाड़ी थली टटकी

उत्तरी मारवाड़ी—बीकानेरी, नेपावाटी बाबडो ।

डॉ० भालानाथ तिवारी के उक्त वर्गीकरण से स्पष्ट हो जाता है कि बीकानेरी उत्तरी मारवाड़ी की एक प्रमुख उप शाखा है ।

१ ७ २ मारवाड़ी एवं बीकानेरी में अन्तर—

वर्तमान बीकानेरी एवं आदर्श मारवाड़ी में निम्नलिखित अन्तर मिलता है—

- १— मारवाड़ी में अस्तिवाचक क्रिया के सामान्य वर्तमान कालिक रूप एवं भूतकालिक रूप छोड़े हैं पर बीकानेरी में छोड़े का सर्वथा अभाव है ।
- २— मारवाड़ी में संयोजक सम्बुच्चय बोधक अव्यय 'और' के लिए 'न' का प्रयोग जाना है पर बीकानेरी में इसका पूर्ण रूपेण अभाव है ।
- ३— मारवाड़ी की अधिकांश अल्प प्राण ध्वनियाँ बीकानेरी में महाप्राण हो गई हैं—

मारवाड़ी	बीकानेरी
वन	खन
कावडी	खाखडी
ऊट	ऊठ
भाटो	भाठो

४— बीकानेरी में व्यञ्जनात् ध्वनियों का बाहुल्य हो गया है, पर मारवाड़ी

के आदर्श रूप में इसकी अत्यल्पता है ।

५- बीकानेरी में " ए " ध्वनि का प्रयोग आदर्श मारवाड़ी की अपेक्षा बहुत कम हो गया है ।

मारवाड़ी	बीकानेरी
इएन	इने
उएन	बेने
इए	इये
जिए	जिके

६- निश्चयाय भाव को प्रकट करने के लिये बीकानेरी में भविष्याय क्रिया के साथ /ईज/ का प्रयोग होता है जबकि आदर्श मारवाड़ी में केवल क्रिया के साथ / सी / प्रयुक्त होता है-

मारवाड़ी	बीकानेरी
खासी	खाईसीज
जासी	जाईसीज
लासी	लाईसीज

१ = आदर्श बीकानेरी

डा० भोलानाथ तिवारी के अनुसार बीकानेरी एक उपबोली है । इस बोली के यहाँ अनेक रूप देखने को मिलते हैं । बीकानेर नगर में मुख्य रूप से चार वर्ण निवास करते हैं- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वश्य एवं शूद्र (विभिन्न निम्न कोटि की जातियाँ) । इन चार वर्णों की बोली में भेद पाया जाता है । यह भेद अत्यन्त सूक्ष्म है और विभिन्न वर्णों की तत्स्थानीय भाषाओं की विशेषताओं पर आधारित है जहाँ से वे आकर यहाँ बसे हैं । चार पाँच सौ वर्ष साथ रहने से यह अन्तर अल्पतः सूक्ष्म रह गया है । प्रश्न है, कहाँ की बीकानेरी आदर्श मानी जाय ? इस सन्दर्भ में लेखक ने पद्धति यह अपनाई है कि जो क्षेत्र मध्यवर्ती हैं एवं अन्य भाषा क्षेत्रों तथा भाषा भाषियों के प्रभाव से अलग हैं उन्हीं क्षेत्रों की बोली को आदर्श बीकानेरी माना गया है । इस

रजि मे वतमान बीकानेर जिले का अधिकांश भाग आर्या अथवा परिनिष्ठित बीकानेरी का क्षेत्र माना जा सकता है। इस क्षेत्र में भी बीकानेरी का आर्या स्वरूप ग्रामों में ही मिलता है क्योंकि इस क्षेत्र के निवासी अथ भाषा भाषियों से कम प्रभावित हैं।

१ ६ बीकानेरी की भाषा वैज्ञानिक विशेषताएँ

बीकानेरी की प्रमुख ध्वन्यात्मक एवं रूपात्मक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

१ ६ १ ध्वन्यात्मक विशेषताएँ

बीकानेरी की ध्वन्यात्मक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

१- अत्यन्त ध्वनि की दृष्टि से बीकानेरी आँवार बहुला है-

बीकानेरी	हिन्दी
घाडों	घोडा
मीठों	मीठा
दादों	दादा
गयों	गया
छोटों	छोटा

२- बीकानेरी में नासिक्य ध्वनियाँ से पूर्व आने वाली आ ध्वनि आ ' में परिवर्तित हो जाती है-

बीकानेरी	हिन्दी
राँम्	राम
बाँम्	बाम
बाँन	बान
हाँण	हानि
भाँम्भों	बाम

३- बीकानेरी में शब्दों के आदि स्वर, विशेषकर अ के दीर्घीकरण की प्रवृत्ति पायी जाती है—

बीकानेरी	हिन्दी
पाडोसी	पडोसी
खाखडी	ककडी
बोन्दरोँ	बंदर
आँघोँ	अघा

४- बीकानेरी में हिन्दी के सयुक्त स्वर " ऐ " एवं " औ " क्रमशः ' अ " एवं ' ओ " में परिवर्तित हो जाते हैं—

बीकानेरी	हिन्दी
अस्तो	ऐसा
कस्तो	कैसा
बस्तो	बैसा
जस्तो	जैसा
दोँड	दोड
फोँरु	फौरु
ओँरु	औरु

५- बीकानेरी में आरम्भ का " य " प्रायः " ज " में परिवर्तित हो जाता है—

बीकानेरी	हिन्दी
जुग	युग
जम	यम
जोग	योग

६- बीकानेरी में अल्प ' य " का सयुक्त व्यञ्जन होने पर लोप हो जाता है—

बीकानेरी	हिन्दी
पुनु	पुण्य
भागु	भाग्य

यदि अल्प " य " समुक्त व्यजन न हो तो उसका लोप नहीं होत

यथा—

बीकानेरी	हिन्दी
लाय	आग
दाय	पसन्द
गाय	गाय

७- मध्यवर्ती " ह् " ध्वनि बीकानेरी में " व ' एव कभी-कभी " य " में परिवर्तित हो जाती है—

बीकानेरी	हिन्दी
सोवन	सोहन
मनवार	मनुहार
लोवार	लुहार
पोवणा	पाहना
प्रापक	प्राहक

यदि ' ह ' ध्वनि ' व ' या ' य " में परिवर्तित नहीं हाती तो मुक्त हानर पूर्ववर्ती ध्वनिया को लोप कर देती है—

बीकानेरी	हिन्दी
सँद्	गहर
नँद्	नहर
बँद्	जहर
काली	कहानी
पाइ	पहाइ

अपिवाच्य अल्प ' ह ' ध्वनि भी मुक्त हा जाती है—

बीकानेरी	हिन्दी
मो	माह
मो	मोह

८— बीकानेरी में 'क्ष' ध्वनि का प्रयोग नहीं होता । 'क्ष' के स्थान पर 'ख' ब्यक्वा 'ख' का प्रयोग होता है—

बीकानेरी	हिंदी
लक्ष्मी	लक्ष्मी क्ष > छ
राक्षस्	राक्षस क्ष > ख
रक्ष्या	रक्षा क्ष > ख

९— स 'श', 'ष', उष्म व्यंजनों में केवल व त्य 'स' ध्वनि ही उपलब्ध होती है ।

बीकानेरी	हिंदी
सल्ला	शिला
सुसरो	स्वशुर
भासा	भाषा

१०— बीकानेरी की अपनी कतिपय विशेष ध्वनियाँ हैं, जो ध्वनि ग्राम रूप में प्रतिष्ठित हैं —

१- ह	न्हावणो (नहाना)
२- म्ह्	म्हे (हम) म्हात्मा
३- ल्	बाल (जलाना)
	गाल (गाली)

११— बीकानेरी में 'ल' का उच्चारण दो प्रकार से होता है । 'ल' हिन्दी के समान ही है पर ल उच्चारण के आधार पर बोनी में कहीं उल्लिखित नहीं मूद्रय एव कहीं पार्श्विक ध्वनियाँ की तरह व्यवहृत होता है —

ल	ल
काल (काल)	काल (अकाल)
गाल (कपोल)	गाल (गाली)
बाला (प्यारा)	बाला (जलाना)
बोली	बोली (बहरी)
बोलो (बहो)	बोलो (बहरा)

बीकानेरी

मैंने रोटी खाई ।
छोरोँ दूध पियाँ ।
मैंने क़ताब पढ़ाई ।

हिंदी

मैंने रोटी खाई ।
लडका ने दूध पिया ।
मैंने पुस्तक पढ़ाई ।

कम कारक की अभिव्यक्ति के लिए 'ने' परसग का प्रयोग होता है —

बीकानेरी

राम ने पढाय दे ।
कुत्ते ने काढ ।

हिन्दी

राम को पढा दो ।
कुत्ते को निकालो ।

सम्प्रदान कारक की अभिव्यक्ति के लिए 'र', 'ने' परसग का प्रयोग होता है —

बीकानेरी

घोडों रँ घास लायो हूँ ।
छोराँ नेँ आसीस ।

हिन्दी

घोडा के लिए घास लाया हूँ ।
लडके के लिए आशीर्वाद ।

करण एव अपादान कारक मे 'सू' परसग का प्रयोग होता है —

बीकानेरी

पढत जी सू बात्यों होई ।
ढागलेँ सूँ पढग्योँ ।

हिंदी

पढित जी से बातें हुई ।
छत पर से गिर गया ।

सम्बन्ध कारक की अभिव्यक्ति के लिए 'रों', 'रा', 'री' परसगों का प्रयोग होता है —

बीकानेरी

रोंम रों घोडों ।
रोंम री घोडी ।
रोंम रा घोडा ।

हिंदी

राम का घोडा ।
राम की घोडी ।
राम के घोडे ।

अधिकरण कारक की अभिव्यक्ति के लिए 'में' परसग का व्यवहार

होता है —

बीकानेरी	हिन्दी
घर में बीम भी ।	घर में नरु है ।
सारे में जाय ।	सहर में जाओ ।

३- बीकानेरी में निश्चयपूर्वक एव दूरियों शोभा प्रकार के निरूपण वाचक सबनामों के एक वचनीय रूप लिंग से प्रभावित होते हैं —

दूरवर्ती पुलिग वाँ	निश्चयपूर्वक पुलिग ओं
दूरवर्ती स्त्री लिंग वा	निश्चयपूर्वक स्त्रीलिंग आ

४- बीकानेरी में उत्तम एव मध्यम पुरुष सबनाम के एकवचन एव बहुवचन के रूप निम्नलिखित हैं —

	एक वचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हूँ म्हँ	म्हें म्हों
मध्यम पुरुष	तू, यूँ	थ यों

इसके अतिरिक्त बीकानेरी में एक विधेय सबनाम 'आपों' भी उपलब्ध होता है । यह श्रोत्र सापेक्ष सबनाम शब्द है जिसमें श्रोता और वक्ता दाना समाहित हो जाते हैं । यथा —

बीकानेरी	हिन्दी
'आपों' दस बजे जीमाँला'	हम दस बजे खाना खायेंगे

इसका अर्थ होगा हम अपने मित्र के साथ (श्रोता सहित) दस बजे खाना खायेंगे ।

५- बीकानेरी में पूर्णांक गणना सूचक औकारात्त विधेयणों (दो सौ आदि) के अतिरिक्त समस्त औकारात्त विधेयणों में अपने विशेष्य के लिंग-वचन एवं कारक के अनुरूप परिवर्तन होता है । अथ विशेषण (औकारात्त, ईकात्त

ऊकारात् एव व्यजनात्) म अपने विशेष्य के लिंग-वचन एव कारक के अनुरूप परिवर्तन नहीं होता ।

६- बीकानेरी में वतमान काल में तिङ्-तीय क्रिया पद प्रयुक्त होते हैं यथा-

बीकानेरी	हिन्दी
छोराँ करँ है ।	लडवा करता है ।
छोरी आवेँ है ।	लडकी आती है ।
छोरा खावेँ है ।	लडके खाते हैं ।

७- बीकानेरी में वतमान निरञ्जयाथ, वतमान कृदन्त की सहायता से बनाये जान के स्थान पर सामान्य वतमान के साथ सहायक क्रिया द्वारा बनाया जाता है -

बीकानेरी	हिन्दी
हूँ मारूँ हूँ ।	मैं मारता हूँ ।
हूँ जाऊँ हूँ ।	मैं जाता हूँ ।

८- वतमान कालिक सहायक क्रिया $\sqrt{ह}$ धातु बीकानेरी में अय स्वतंत्र क्रिया रूपों के समान ही तिङ् प्रत्यय ग्रहण करती है, यथा-

एकवचन	बहुवचन
(अय पुरुष) है	है
(मध्यम पुरुष) है	हाँ
(उत्तम पुरुष) हूँ	हों

९- बीकानेरी में भूतकालिक सहायक क्रिया रूप धातु में कृत प्रत्यय के योग से बनते हैं । साथ ही हिन्दी की भाँति सहायक क्रिया धातु ही मानी जा सकती है । किन्तु ओकारात् धोली होने के कारण बीकानेरी में जहाँ आकारात्ता बहुवचन का बोध कराती है वहाँ हिन्दी में एक वचन का, यथा-

छोराँ हाँ	(लडका था)
छोरा हाँ	(लडका था)

छोरी ही	(सङ्गी की)
छोरोँ या	(सङ्गी या)
छोरु या	(सङ्गी से)
छोरी थी	(सङ्गी थी)

१०- हिन्दी की ✓ वर् पातु के भूत कालिक कृत रूप किया, किये, की, के स्थान पर पर बीकानेरी में क्रमशः कियो, करिया, करिया, करी रूप उपलब्ध होते हैं।

११- बीकानेरी में भूत काल के निर्माण के लिए प्रायः घातु में -यो प्रत्यय (स्वरांत घातु एवं वचन में म + आँ) एवं बहुवचन में -या (स्वरांत घातु बहुवचन में य + आ) प्रत्यय जोड़े जाते हैं। इसी प्रत्यय व्युत्पत्तात एव वचन में एवं -दा प्रत्यय व्युत्पत्तात बहुवचन में जोड़ा जाता है। यथा-

स्वरांत घातु

	एक वचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	बेँ खायाँ	बोँ खाया
मध्यम पुरुष	तू आयाँ	ये आया
उत्तम पुरुष	महँ खायो	महँ खाया

व्युत्पत्तात घातु

	एक वचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	बेँ मारियोँ	बोँ मारिया
मध्यम पुरुष	धूँ पढियोँ	ये पढिया
उत्तम पुरुष	महँ काढियोँ	महँ काढिया

१२- बीकानेरी में भूतकालिक कृत की रचना के लिए 'ड' स्वायक प्रत्यय का बहुलता से प्रयोग होता है, यथा—

एकवचन	बहुवचन
खायोडोँ केलोँ	खायोडा केला
तलियोडाँ पापडूँ	तलियोडा पापडूँ

[सूचना -

स्वाभक्त प्रत्यय -ओड भी माना गया है क्योंकि -ओ, पर लिंग-
वचन-कारक का प्रभाव नहीं पड़ता ।]

१३- बीकानेरी में भविष्यत् काल का निर्माण दो प्रकार से होता है -

(अ) सामान्य वतमान में 'लो' या 'ला' के योग से -

	एकवचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	मारें ला, ला	मारें ला
मध्यम पुरुष	मारें ला	मारों ला
उत्तम पुरुष	माह ला, ला	मारों ला

(आ) एक वचन

	एक वचन	बहु वचन
अन्य पुरुष	मारसी	मारसी
मध्यम पुरुष	मारीस्	मारसों
उत्तम पुरुष	मारीस्	मारसों

निश्चयाय भाव का बोध कराने के लिए बीकानेरी में ईज प्रत्यय का प्रयोग क्रिया रूप के भविष्यत् काल में होता है -

वों आसीज्,

हूँ साईसीज् आदि

-१४ बीकानेरी में पूव कालिक क्रिया का निर्माण के लिए -'र' क्रिया के अंत में लगाया जाता है। स्वरान्त धातु से पूव -य् श्रुति का आगम होता है-

स्वरान्त

खाय् = खाकर

आय् = आकर

जाय् = जाकर

व्यजनात्

पढ् = पढकर

जीमद् = भोजन करके

रम्द् = खेलकर

संज्ञा-पद

संज्ञा उस विचारों का नाम है जिनमें प्रत्यक्ष विचारों का गृह्य की किसी वस्तु का नाम सूचित हो १ यथा राम, जन्म, मोक्ष, मगधा आदि । उस परिभाषा में 'वस्तु का अर्थ अथवा अर्थ में प्रयुक्त हुआ है यह वेचन प्राणी व पशु का ही बोध नहीं, अतः उक्त पदों का भी बोध करता है ।

बीजादौरी' में संज्ञा-पद प्रातिपदिक अक्षर (अभिषाय बोधक) तथा विचक्षण-कारक सम्बन्ध-वर्गी विभक्ति प्रत्यय (व्याकरण अथ बोधक) के मातृगणित होना है । सब प्रथम ऐसे संज्ञा प्रातिपदिक अक्षरों के निर्धारण की आवश्यकता है जो व्याकरण अथ के व्यक्त विभक्ति प्रत्ययों (विचक्षण-कारक सम्बन्ध-वर्गी) को ग्रहण करने पद की कोटि में पठ्यते हैं । इस प्रकार संज्ञा-पद रचना में दो तत्त्वों प्रातिपदिक अक्षर (अभिषाय) तथा विभक्ति प्रत्यय (व्याकरण अथ) के सम्बन्ध में विचार किया जाता है । अतः संज्ञा-पद रचना सम्बन्धी अपने अध्ययन की दिशा को हम निम्न चार वर्गों के अन्तर्गत विभाजित कर सकते हैं —

१— प्रातिपदिक अक्षर

२- लिंग

३- वचन

४- कारक

बीबानरी शना-पदा को स्वतन्त्र रूपान् सवोग की दृष्टि म दो वर्गों म विभाजित किया जा सकता है ।

(अ) एव स्वतन्त्र रूपान् युक्त नामवाची-पद (सना पद)

(आ) ना या ना म जिन स्वतन्त्र रूपान् युक्त नामवाची-पद (समस्त सना-पद)

२ १ एक स्वतन्त्र रूपान् युक्त नामवाची-पद (मजा-पद)

जमा कि उन्नेय किया जा चुका है कि सना पद की रचना प्रातिपदिक अण म त्रिग वचन-कारक सम्बन्धनी विभक्ति प्रत्यया (व्याकरणिक अथ प्रोपक) का जोड़ कर बना जाती है । इसीलिए जब सना पदा पर विचार किया जाता है तो सब प्रथम प्रातिपदिक अणा का निर्धारण किया जाता है, जो व्याकरणिक अथ के व्यक्ता विभक्ति प्रत्यया (त्रिग वचन-कारक सम्बन्धनी) का ग्रहण कर 'पद' की दृष्टि म पहुँचते हैं एव तन्तन्तर त्रिग वचन कारक पर विचार किया जाता है । जन रूपान् प्रातिपदिक त्रिग, वचन कारक, का निरूपण नीचे किया गया है ।

२ १ १ प्रातिपदिक

अथवदघातुरप्रथम प्रातिपदिकम् १

यथान् घातु भिन (जवानु) जीर प्रत्यय भिन (अप्रत्यय) अववान प्रातिपदिक सङ्गक हाना है । दूसरे गण म प्रातिपदिक सना के त्रिग निम्न त्रिविध बातें आवश्यक है -

१- माथक गण ही प्रातिपदिक हा मकना है, निग्यक गण की प्रातिपदिक मना नहा होती ।

लि व का रहित नाँन्	नोंन्
सना पद माँमाँ	मोंमा
लि व का रहित माँम्	मोंम्

(ख) स्त्री लिंग

सना पद	नोंनी	नोंयाँ
त्रि व का रहित	नान्	नाँन्
सना पद	मोंमी	मोंम्या
त्रि व का रहित	मोंम्	मोंम्

उपयुक्त सना पदा (नाँनाँ, माँमाँ नाँनी, माँमी) में स यदि पु एक व वा आँ, पु व व वायव आ स्त्री लि ए व वोगक -ई एव स्त्रीलिंग बटुपचन (व व) योगक आँ, त्रि व का विभक्ति प्रत्यया को निकाल लिया जाय तो नाँन्, माँम् प्रातिपदिक अक्ष के रूप में अवशिष्ट रहते हैं जिनका बाली में कोई अर्थ नहीं है ।

(३) प्राचीन भारतीय अथ भाषा बाल में वारक वोगक विभक्तिया का प्रयोग श्लिष्ट कौटि का था परन्तु आधुनिक भारतीय आय भाषाया व बालियों की भाँति बीजानरी में भी परसर्गों का प्रयोग श्लिष्ट कौटि का है अत परम्परा-नुत प्रातिपदिक अथा का निर्धारण नहीं किया जा सकता ।

४- इस जाचार पर प्राप्त प्रातिपदिक अक्ष के कारण बाली में श्लेषार्थों अथा का बाहुल्य हो जायगा जिससे अर्थ वाक में अस्पष्टता आ जायगी, यथा—

बीजानरी	हिन्दी पर्याय
१- घोड + जोँ (घोनाँ)	घोडा
घोड	तबगी क्या के लिय
	प्रयुक्त शब्द
२- तार + आँ (तारोँ)	तारा

- घ — चंच ०मरच नाच्, काच्
 छ — रीछ मूछ् पूछ्, गछ्
 ज — बाज् राज् मूरज् तीज

[मूचना — 'भ' क स्वान पर वीकानरी प्रातिपदिका म सामान्य रूप स
 अल्प्राण बनि 'ज' हो जाती है।]

- ट — टाट घाट जखराट पेट्
 ठ — मूठ (मूठी अटरक) सठ जेठ काठ्
 ड — राड माड्, चाँड ह्राड
 ढ — पड (एक प्रकार का सप) लड राड् (लडाई)
 ढ — गड् डेड्,
 ण — ०मण वाँमण वूण् लूण्
 त् — सँत्, (गहत्) चेत परान् (स्नान करने का पात्र), खेत्
 थ — नाथ (आभूषण) हाथ रथ तीरथ्
 द — लोद दाद लाद पँलाद
 ध — दूध, सगध साध् (उरमव)
 न् — पान् खन् काँ, धन्
 प — सगप छाप् पाप तप लप्
 फ् — मूफ ठफ वाफ बरफ
 ब — णव (दुर्वा) जीव (जिहवा)
 भू — लाभ डाम् लाम
 भू — ०वर्णम् नाँम् करम् ०जनम्
 थ — छाथ, (छाछ) लाथ (आग) माथ राथ्
 र् — हार् (मानिया की माला) केँर (एक मन्त्री का नाम) तार, धर्
 ल — बल् (गिर) खाल् (धमडा) गान् (कपाल)
 ल् — जान् माँकल साल
 घ — तनाव गाव् आँव्
 स् — वाँस्, (वाँस) भँस् केम (बान) रम

२ १ २ लिंग

लिंग विधान की दृष्टि से बीकानेरी में दो ही लिंग उपलब्ध होते हैं।

१- पुलिंग

२- स्त्रीलिंग

परिणामत बीकानेरी सनाआ को (चाहे वे जड़ का बोध कराने वाली हो अथवा चेतन का) उक्त दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है। नपुंसकलिंग का चूँकि सबका जभाव है अतः जड़ वस्तुओं को मृदुलता एवं पर्यता के आधार पर पुलिंग एवं स्त्रीलिंग में विभक्त कर दिया जाता है। इस प्रकार हम दे सकते हैं कि लिंग विधान की दृष्टि से आधुनिक भारतीय आय भाषाओं में हिन्दी यादि के समान बीकानेरी का स्थान भी मध्यवर्ती ही है क्योंकि मराठी गुजराती आदि आधुनिक भारतीय आय भाषाओं के समान नहीं हैं। इनमें तीन लिंग पाये जाते हैं और न ही बगला उड़िया जसी भाषाओं के समान लिंग भेद का सबका जभाव ही पाया जाता है।

२ १ २ १ लिंग-ज्ञान

(क) बीकानेरी में अनेक दीर्घाकार वस्तुएँ पुलिंग में तथा उच्चावारी स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होती हैं -

	पुलिंग	स्त्रीलिंग
१	माटों	मटकी
२	आनों	आली
३	मटरमाँ	पोमवाँ
४	मर्या	पोधी

परन्तु अनेक वस्तुओं में मध्यम इमके विपरीत भी उपलब्ध होती हैं। यथा- पूंठों (पुं०) व टो (स्त्री०)

(घ) बीकानेरी में पर्यायवाची शब्दों के लिंग समान नहीं होते हैं। यथा-

१ 'पाठशाला' के पर्यायवाची

मदरसाँ	(पुल्लिंग)
पोसवाल्	(स्त्रीलिंग)

१- पुस्तक के पर्यायवाची

गरब	(पुल्लिंग)
पोथी	(स्त्रीलिंग)

(ग) संस्कृत के जनक शब्दों का धीमानरी में लिंग परिवर्तित हो गया है । यथा—

संस्कृत	बीकानेरी
१ आत्मा (पु०)	जातमा (स्त्री०)
२ अग्नि (पु०)	अगनी, आगी, आग् (स्त्री)
३ देवता (स्त्री०)	देवता (पु०)

(घ) प्राणी वाचक सत्ता शब्दों का लिंग उनके प्राकृतिक लिंग के अनुसार होता है ।

- १ मोरू ऊठ (पु०)
डेनणी माँड (स्त्री०)

कुछ एम भी शब्द हैं जो या तो केवल पुल्लिंग में ही प्रयुक्त होते हैं या स्त्री लिंग में यथा—

केवल पुल्लिंग में प्रयुक्त होने वाले शब्द

	बीकानेरी	हिंदी पर्याय
१	माछरू	मच्छर
२	पपयौँ	पपीहा
३	तीतरू	तीतर
४	ममालियाँ	धीर बहूटी

केवल स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होने वाले शब्द

बीकानेरी	हिंी
१ जू	ग्रू
२ चीलम्	धील
३ चमचेड्	चमगाण्ड
४ बतक्	बतल
५ टालोडी	गिणहरी

कुछ शब्द उभय लिंगों में हैं यथा— टावर, मोनवाँ माइत् आदि ।

कुछ सत्ता शब्द ऐसे हैं जिनका लिंग बोध उनका युग्म रूप प्राप्त होने पर होता है। यथा— मोर्, लेलनी ऊँ माँडे हडाऊ-मँरी आदि ।

(७) विदेशी शब्दों में भी लिंग परिवर्तन मिलता है। ये शब्द हिन्दी के माध्यम से बीकानेरी में आये हैं जहाँ हिन्दी के समान ही बीकानेरी में उनका वही लिंग होता है यथा— अणनत्, कागद् बलम् आदि ।

२ १ ० २ रूपगत लिंग ज्ञान

सत्ता शब्दों के वाक्यगत रूपों के आधार पर उनके लिंगों का निश्चय इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

(क) बीकानेरी के विशेषण शब्दों में लिंग के कारण रूपगत परिवर्तन होता है जो इन विशेषणों का रूप निश्चय प्रायः ही है (बीकानेरी विशेषण शब्दों में लिंग वचन में आवागमन एवं स्त्रीलिंग एवं वचन में श्वासारण उपसर्ग होने हैं) परिणामतः ये विशेषण शब्द मनाभा के लिंग का ज्ञान होना है यथा—

छाटा बिन्

छोटी उत्त

उपरोक्त वाक्यांश में छाटा और छाटा क्रमशः पुलिग एवं स्त्री लिंग हैं जो इन विशेषणों द्वारा लिंग वचन के प्रतिष्ठान एवं स्त्री लिंगों की ओर इंगित प्रयत्न हैं ।

(ब) सना मे मेल कराने वाले वृत्त भी लिंग बाधक हान है, यथा—

मरियाडों छोराँ
रावती छारी

उक्त 'मरियोडा' (पुंलिंग) एव रावती (स्त्रीलिंग) स मत्र रपन वाली सजाए छारा एव 'छोरी क्रम' पुंलिंग एव स्त्रीलिंग है ।

(ग) क्रिया पदा स भी मनाजा के लिंग वा बाध हाना है यथा—

मन् सूतोँ है
चन्रा म्ती है

उपयुक्त उदाहरणा म मन् जीर चन्रा क्रमश पुंलिंग एव स्त्रीलिंग है क्वाकि उनकी क्रियाए मूता तथा म्ती क्रमश पुंलिंग एव स्त्रीलिंग है ।

(घ) बाकानगी म सबथ कारक के परमगों के द्वारा भी परमतीँ सनाया वा लिंग बाध होना है यथा —

राँम राँ मूआँ
राघा री कुरछी

उक्त उदाहरणा मे 'राँ' आर 'री' क्रमश पुंलिंग एव स्त्रीलिंग व बोधक है, जिमसे सम्बद्ध सनाजा 'मूजा' आर 'कुरछी' वा क्रमश पुंलिंग एव स्त्रीलिंग हाना इ गित हाना है ।

(ङ) बीकानगी म वृद्ध सबनामा के एववचन रूपा मे तत्सम्यधिन सजा के लिंग वा बाध हाना है यथा—

बाँ (छारा) केर आयाँ क्या ?
बा (छोरी) केर आई क्या ?

उपयुक्त उदाहरणा म बाँ आर 'बा' क्रमश पुंलिंग एव स्त्रीलिंग है जिनमे सम्बधित मनाया वा पुंलिंग एव स्त्रीलिंग हाना निदिष्ट हाना है ।

२ १ २ ३ अन्त्य ध्वनि के आधार पर लिंग परिचय

(ज) बीकानेरी म समस्त जाँकारात सनाए पुल्लिंग है यथा-

बीकानेरी	हिन्दी
१- दादोँ	दादा
२- बाँदराँ	बदर
३- घोडाँ	घोडा
४- छोराँ	लडका
५- तावडाँ	धूप
६- आटाँ	आटा

(आ) -ई में जन्त हान वाला सनाए अस्त्रीलिंग स्त्रीलिंग होना है यथा

बीकानेरी	हिन्दी
१- काकी	चाची
२- तुगाइ	स्त्री
३- साखडी	कक्की
४- छारी	लडकी
५- राटी	राटी
६- न्वाई	दवा

परंतु इसके कुछ अपवाद भी उपलब्ध हैं यथा- नाई धारा घ
माला लाई (रक्त) माती दइ, (नही) दरजा जाति ।

(इ) -आ म जन्त हान वाली अस्त्रीलिंग सनाए स्त्रीलिंग है यथा

बीकानेरी	हिन्दी
१- छया	छाया
२- भूया	बूआ
३- मा	माता
४- दया	दया

स्वरान्त सज्ञाए व 'अरण' प्रत्यय

पुंलिंग रूप	स्वरहीन रूप	प्रत्यय	स्त्रीलिंग रूप
१ घात्री	घात्र	अरण	घोबरण
२ तत्री	तत्र	अरण	तेलरण
३ भत्री	भत्र	अरण	भगरण
४ स सी	मे स	अरण	सँसरण

व्यजनान्त सज्ञाए व 'अरणू' प्रत्यय

पुंलिंग रूप	प्रत्यय	स्त्रीलिंग
१ रत्राम	अरणू	रत्रामरण
२ चमार	अरणू	चमाररण
३ कुभार	अरणू	कुभाररण

'अरणी'

वीकानरा म कुछ व्यजनान्त पुंलिंग स नाआ म अरणी प्रत्यय जाअ कर उनका स्त्रीलिंग रूप बनाया जाता है ।

पुंलिंग रूप	प्रत्यय	स्त्रीलिंग रूप
१ ट	अरणी	टडरणी
२ ठग	अरणी	ठगरणी
३ जाट	अरणी	जाटरणी
४ डूम	अरणी	डूमरणी
५ न	अरणी	नटरणी

कुछ व्यजनान्त पुंलिंग स नाआ म आँरणी प्रत्यय लगाकर उह स्त्रीलिंग परिवर्तित किया जाता है यथा—

पुंलिंग रूप	प्रत्यय	स्त्रीलिंग रूप
१ सेठ	आँरणी	सेठाँरणी

२ जठ	जाँली	जेठाँली
३ ठाकर लठर	-जाँली	ठकराँली
४ देवर	जाँगी	दवराणी ल देराणी
५ पडत	जाँली	पडताली
६ नाकर	जाणी	नोकराँली

बीकानरी में कुछ प्रत्यय पुरुष वाचक हैं जिनमें स्त्रीलिंग रूप पुल्लिंग में परिवर्तित हो जाते हैं यथा—

स्त्रीलिंग रूप	प्रत्यय	पुल्लिंग रूप
नरग	आ	नरगाई
वन	-जाइ	वं जोई ^१

० १ ० ५ प्रयोग के आधार पर लिंग निर्णय

उपयुक्त विवरण के अतिरिक्त भी कुछ सजा गठ इस प्रकार के हैं जिनका लिंग निर्णय लोके प्रयोग के आधार पर ही सम्भव है क्योंकि कोई सुरिषा जनक आधार नहीं मिलता, अतः हम संशय में कोई निश्चित नियम भी नहीं बनाया जा सकता। इस प्रकार के सजा गठ के जनगत 'योजना'त गठ का अर्थ है। यहाँ कुछ गठ अस्तुतः किये जा सकते हैं—

परिचय	स्त्रीलिंग
वन	वन
घानन	दान
पाप	छाप
माग	आग
र (व वम)	र (श्रमता)

० १ ३ वचन

वचन-विधान का लिंग में बीकानरी में जाभा के लिंग उपलब्ध है।

१— यथा वजा म श्रुति नरगाई माहृत्य के कारण है।

वन न + -जा = वजाइ

१- एकवचन

२- बहुवचन

एकवचन स वस्तु के एकत्व का बोध हाता है, और बहुवचन म एक म अधिकत्व का । यहा यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि सना-पदा म पाय जान वान वचन के विभक्ति प्रत्यया का कारक सम्बन्धा के द्योतक विभक्ति प्रत्यया से पथक् करके नही दया जा सकता ।

० १ ३ १ वचन-विधान

(अ) पुल्लिग

१ बीजानरी म पुल्लिग व्यजनात् शब्दा के बहुवचन म रूप अधिकागत अपरिवर्तित ही रहत है यथा—

एकवचन	बहुवचन
१ पाँन्	पाँन्
२ वार	वार
३ चावल	चावल
४ ऊठ	ऊठ
५ सग्य्	सरय
६ रीछ	राय

२ बीजानरी म पुल्लिग इकारात् व ऊकारात् शब्दा के रूप भी बहुवचन म रूप अपवाग का द्वाडकर अपरिवर्तित ही रहत है यथा—

'पुल्लिग ईकारान्त'

एकवचन	बहुवचन
१ दरजी	दरजी
२ नार्द	नार्द

३ घोड़ी	घाड़ी
४ मानी	माली

‘पुल्लिग ऊकारान्त’

एकवचन	बहुवचन
१ भालू	भालू
२ धच्छ	धच्छू
३ गऊ	गऊ
४ टाकू	टाकू

३- पुल्लिग एकारान्त गण के वचन के रूप में अत्यंत लुप्त होकर -आ में परिणत हो जाती है ।

एकवचन	स्वर्गीय रूप		बहुवचन
१ पाँडे	पाँडे	आ	पाँडा
२ दूव	दूव	आ	दूवा
३ चौव	चौवे	आ	चौवा

४- पुल्लिग ओकारान्त गण के एकवचन को बहुवचन के रूप में परिवर्तित करने समय अत्यंत ओ के स्थान पर आ जुड़ जाता है ।

एकवचन	बहुवचन
१ वाकाँ	वाका
२ घादाँ	घादा
३ गणाँ	गणा
४ छाराँ	छारा
५ मरुजाँ	मरुजा

[सूचना -

उपरोक्त सभी पुल्लिग व गण विकारी वचन में ओ प्रत्यय लगता है -]

(क) पुल्लिङ्ग व्यञ्जनात् शब्दो के विकारी बहुवचन मे -ओ प्रत्यय अवि कारी रूप से जुडता है यथा-

१ पाँव् + -आँ = पाँवाँ

२ वोर् + -आँ = वोराँ

३ चावल + -आँ = चावलाँ

४ ऊठ् + -आँ = ऊठाँ

५ सरप + -आँ = सरपाँ

६ रीछ + -आँ = रीछाँ

(ख) ईकारात् व ऊकारात् शब्दो के बहुवचन विकारी रूपो में अत्य ई और -ऊ लुप्त हो जाते हैं, और जाँ प्रत्यय लगने से पूव क्रमश 'य' और 'व' श्रुति आ जाती हैं,^१ यथा-

ईकारान्त पुल्लिङ्ग

दरजी

१- दरज् + ई + ओ = दरज + य + आ = दरज्याँ

घोडी

२- घोव् + ई + ओ = घोव + य + ओ = घोवरो

माला

३- मान् + ई + ओ = माल + य + ओ = माल्याँ

ऊकारान्त पुल्लिङ्ग

आलू

१- आल् + ऊ + आँ = आल् + व + आ = आलवाँ

बच्छू

२- बच्छू + ऊ + आँ = बच्छू + व + आँ = बच्छूवाँ

१- पाणिनि इकोपणचि /५/१/७७/

अर्थात् अच् परे होने पर इक् के स्थान पर यल् आदेश होता है ।

धीमानेरो म मस्कृत की यह प्रक्रिया अब भी क्रियाचित होती है । यथा-

दरज् + ई + ओ = दरज्याँ, आल् + ऊ + आँ = आलवाँ जाति ।

३ धात्री	धात्री
४ मानी	माला

‘पुल्लिग ऊकारान्त’

एकवचन	बहुवचन
१ आत्	जातू
२ वच्छू	वच्छू
३ गऊ	गऊ
४ डाकू	डाकू

३- पुल्लिग एकारान्त शब्दों के बहुवचन के रूपा में अत्य ए लुप्त होकर -आ में परिणत हो जाती है ।

एकवचन	स्वरन्त रूप		बहुवचन
१ पा डे	पाँडे	आ	पा डा
२ दूव	दूव	जा	दूबा
३ चौत्र	चात्र	जा	चौत्रा

४- पुल्लिग ओकारान्त शब्दों के एकवचन को बहुवचन के रूपा में परिवर्तित करने समय अत्य ओ के स्थान पर आ जुड़ जाता है ।

एकवचन	बहुवचन
१ बाबाँ	बाबा
२ घाडाँ	घाडा
३ दादाँ	दादा
४ छारा	छारा
५ मरदाँ	मरदा

[सूचना -

उपरोक्त सभी पुल्लिग के शब्दों विकारी बहुवचन में ‘जा’ प्रत्यय लगता है—]

(क) पुल्लिङ्ग व्यञ्जनात् शब्दों के विकारी बहुवचन में -ओं^१ प्रत्यय अवि-
कारी रूप से जुड़ता है, यथा-

१ पाँव + -ओं^१ = पाँवों

२ बोग + -ओं^१ = बोगों

३ चावल + -ओं^१ = चावलों

४ ऊठ् + -ओं^१ = ऊठों

५ सरप् + -ओं^१ = सरपों

६ रीछ + -ओं^१ = रीछों

(ख) ईकारात् व ऊकारात् शब्दों के बहुवचन विकारी रूपों में अत्य-
ई और ऊ लुप्त हो जाते हैं, और -ओं^१ प्रत्यय लगने से पूर्व
क्रमशः 'य' और 'व' श्रुति आ जाती है,^१ यथा-

ईकारान्त पुल्लिङ्ग

दरजी

१- दरज + ई + ओं^१ = दरज + य + -ओं^१ = दरज्यों

घोषी

२- घोष + ई + ओं^१ = घोष + य + ओं^१ = घोष्यों

माला

३- मान + ई + ओं^१ = माल + य + ओं^१ = माल्यों

ऊकारान्त पुल्लिङ्ग

आलू

१- आलू + ऊ + ओं^१ = आल + व् + ओं^१ = आलवों

बच्छू

२- बच्छू + ऊ + ओं^१ = बच्छ + व् + ओं^१ = बच्छवों

१- पाणिनि इवोपणचि /५/१/७७/

अथात् अच् परे होने पर इक् के स्थान पर यण आदेश होना है ।

वीथानरी म संस्कृत की यह प्रक्रिया अब भी क्रियाचित होती है । यथा-

दरज + ई + ओं^१ = दरज्यों, आल + ऊ + ओं^१ = आलवों आदि ।

५	छोरी	छोर्याँ
६	डोवरी	डोवर्याँ

ऊकारान्त स्त्रीलिंग

	एकवचन	बहुवचन
१	०.वऊ	०.रवोँ
२	गऊ	गवोँ
३	सामू	सासवोँ

उपयुक्त सभी उदाहरणों में -ओँ प्रत्यय लगने से पूर्व क्रमशः 'य' और 'व' श्रुति का समावेश हुआ है। विश्लेषण पु० ईकारान्त व ऊकारान्त शब्दों के अन्तगत दिया जा चुका है।

उपयुक्त विवेचन के अतिरिक्त यहाँ पर उल्लेख कर देना नितांत आवश्यक है कि बोली में वचन विधान की इस सशिष्ट विधा के अतिरिक्त शिथिल विधा भी है। कुछ ऐसे सज्ञा शब्द हैं जिनके साथ कभी अनिवाय रूप में जोर कहीं वकल्पित रूप में स्वतंत्र शब्दों का रखकर अपरत्यय का बोध कराया जाता है। ये वचन छातक शब्द निम्नलिखित हैं—

और लोग हर, ०.जणा जण १ँ आदि।

उपयुक्त सभी शब्द सबनाम पदों में अधिकतर प्रयुक्त होने हैं और सज्ञा शब्दों के साथ अधिकतर लोग, जोर आदि शब्द ही प्रयुक्त होते हैं—

राँम और आया था
सामू लाग भेला होया है

उपयुक्त उदाहरणों में 'और' तथा लाग बहुवचन का बोध कराते हैं।

२ १ ४ कारक

सज्ञा अथवा सबनाम के जिस रूप से उभवा सम्बन्ध व क्रिया अथवा दूसरे शब्दों के साथ सूचित किया जाता है उसे कारक कहते हैं।

मुख्य रूप से बीजानेरी में सज्ञा के दो कारक भेद उपलब्ध होते हैं—

- १ अ विकृत कारक
- २ विकृत कारक

२ १ ४ १ अ विकृत या मूल कारक

अ विकृत या मूल कारक सज्ञा का वह रूप है जो यथावन (अपरिवर्तित) रूप में रह कर ही कुछ कारक सम्बन्धों को अभिव्यक्त करता है। यथा—

छारोँ नोँड ग्योँ = लडका भाग गया।

छोरोँ पाछाँ आय् ग्योँ = लडका वापिस आ गया।

२ १ ४ २ विकारी या विकृत कारक

विकारी या विकृत कारक सज्ञा का वह रूप है, जो मूल रूप की तुलना में कुछ परिवर्तित (विकृत) रूप में प्रयुक्त होता है और वाक्यान्तगत सदाव परसर्गों को ग्रहण करता है यथा—

रोँम ने बाड दीयोँ

राम को निकाल दिया

घर सू जाय ग्या

घर से जा गया

हरिय रँ लायोँ हू।

हरि के लिए लाया है

मूल और विकृत (कारक) रूपों के अतिरिक्त बीजानेरी में सज्ञाओं का संबोधन रूप भी प्राप्त होता है जो उपयुक्त दोनों रूपों से अलग विशेषता रखता है। अतः यहाँ उन्हें अलग (मूल और विकारी कारकों से) स्वीकार किया गया है।

संबोधन रूप सज्ञा का वह रूप है जिसमें किसी प्राणी विशेष को, यदा कदा भावुकता में जड़ पदार्थों को भी संबोधित किया जाता है। वैसे यह रूप भी विकारी रूप (कारक) माना जा सकता है (संरचना की दृष्टि से) किंतु इस सम्बन्ध में उन्नतनीय बात यह है कि इनके साथ कारक चिह्नों का प्रयोग नहीं होकर कुछ विस्मयान्ति वाचक चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। यथा—

हे रोँम् !

हे राम !

अरे धारा ।

अरे लडके । (एकवचन)

अरे छोरों ।

अरे लडकों । (बहुवचन)

इस प्रकार बोली में मूल और विकारी रूपों के अतिरिक्त सम्बोधन रूप भी स्वीकार किया गया है । अतः अब विविध (लिङ्ग एवं अत्य की दृष्टि से) सना गन्ने की (उपयुक्त तीनों रूपा- मूल विकारी-सम्बोधन की) रूप रचना को ज्ञाना वचना में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है-

२ १ ४ १ पुल्लिग सज्ञा शब्द

ईकारान्त - घोषी

	रूप		प्रत्यय	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मूल रूप	घोषी	घोषी	-० (सूय)	-० (सून्य)
विकारी रूप	घोषी	घोष्याँ	० (सूय)	-आँ
सम्बोधन रूप	घोषी	घाष्योँ	० (सूय)	-आँ

ऊकारान्त-आलू

	रूप		प्रत्यय	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मूल रूप	आलू	आलू	० (सूय)	० (सून्य)
विकारी रूप	आलू	आलवों	० (सूय)	ओं
सम्बोधन रूप	आलू	आलवो	० (सूय)	माँ

एकारान्त-दूधे

	रूप		प्रत्यय	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मूल रूप	दूधे	दूधे	० (सूय)	-आ

विकारी रूप	दूवे	दूगो	०(तूय)	-ओ
सम्बोधन रूप	दूवे	दूवा	०(तूय)	-ओ

ओकारान्त-छोरो

	रूप		प्रत्यय	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मूल रूप	छोरो	छोरा	०(तूय)	-आ
विकारी रूप	छोर	छोरा	ए (अ)	-ओ
सम्बोधन रूप	छोरा	छोरा	आ	-ओ

व्यजनान्त - धर्

	रूप		प्रत्यय	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मूल रूप	धर्	धर	०(तूय)	०(तूय)
विकारी रूप	धर	धरो	०(तूय)	जा
सम्बोधन रूप	धर	धरा	०(तूय)	ओ

२ १ ४ २ स्त्रीलिंग सज्ञा शब्द

आकारान्त-भूवा

	रूप		प्रत्यय	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मूल रूप	भूवा	भूवाया	०(तूय)	ओ
विकारी रूप	भूवा	भूवाया	०(तूय)	-आ
सम्बोधन रूप	भूवा	भूवायो	०(तूय)	ओ

ईकारान्त - छोरी

	रूप		प्रत्यय	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मूल रूप	छोरी	छोरया	०(तूय)	-ओ

विकारी रूप	छोरी	छोरयाँ	०(तूय)	ओँ
सम्बोधन-रूप	छोरी	छोरयाँ	-०(तूय)	ओँ

ऊकारान्त - सामू

	रूप		प्रत्यय	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मूल रूप	सामू	सामवोँ	-०(तूय)	-ओँ
विकारी रूप	सामू	सासवोँ	०(तूय)	-जाँ
सम्बोधन-रूप	सामू	सामवाँ	०(तूय)	-थाँ

व्यजनान्त-लात्

	रूप		प्रत्यय	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मूल रूप	लात्	लात्या	०(तूय)	जाँ
विकारी रूप	लान्	लात्याँ	०(तूय)	जोँ
सम्बोधन रूप	सात्	लात्याँ	०(तूय)	-थाँ

२ १ ४ ३ परमग

वीकानरी के कारकीय रूपा की रचना के लिए निम्न परमगों का प्रयोग होता है ।

१ कर्ती	०
२ कम	नेँ
३ करण	सू
४ सम्प्रदान	रेँ नेँ
५ अपादान	सू
६ सम्बन्ध	ग रा, री
७ अविवरण	मँ, मोँय पर
८ सम्बोधन	हँ ओ, अर, हरे

उपयुक्त परसर्गों भी प्रयोग प्रश्रिया वीकानेरी म इस प्रकार है—

२ १ ८ ३ १ कर्त्ता कारक^२

वीकानेरी म कर्त्ता वाग्ग के विकारी या अविकारी रूपा य साथ कोई भी परसर्ग प्रयुक्त नहीं जाता, यह हमको अपनी निजी विवेकता है । साधारणतः कर्त्ता कारक का प्रयोग विभी वाय के साथक के रूप म ही होता है यथा—

- | | |
|--|-----------------|
| १ छोरी आवे ^३ है | लडनी आती है । |
| २ छोरो ^३ दोडे ^३ है | लडका भागता है । |

२ १ ४ ३ २ कम कारक—ने^३

वीकानेरी मे कम वाग्ग की अभिव्यक्ति ने परसर्ग को विकारी रूपा के पर रख कर की जाती है यथा—

- | | |
|---|--------------------|
| १ बलपो ^३ ने ^३ बाढ | बलो को निकानो |
| २ टोगडिय ने ^३ पो ^३ एी पाव | बछडे को पानी पिलाआ |
| ३ रो ^३ म् ने ^३ बुला | राम को बुलाओ |
| ४ छारो ^३ ने ^३ पढाव | लडका को पढाओ |

२ १ ४ ३ ३ करण—कारक^३

वीकानेरी म सू^३ परसर्ग करण वाग्ग की अभिव्यक्ति के लिए व्यवहृत

सम्भृत म कारको की मर्या केवल छ ही बताई गई है ।

अपानान सम्प्रानन वरणाधार कमणाम्

वनु^३च भेदत पाडा कारक परिकीर्तितम् हिन्ती कारको का विकाम

पृ० २० प० शिवाथ

१— प्रातिपदिकार्थलिगपरिमाण वचन माने प्रथमा ।^३

अष्टाध्यायी २/३/४६/

२— साथकनम करणम्

अष्टाध्यायी /१/४/४२/ पाणिनि

ता है साथ ही तुलनात्मक अभिव्यक्ति में भी 'सू' परसर्ग ही प्रयुक्त होता है
या—

- | | |
|--|---------------------------|
| १ हाथ सू रोटी खावें है | हाथ से रोटी खाता है । |
| २ मदन दूध सू रोटी खावें है | मदन दूध से रोटी खाता है । |
| ३ रोंम पोंखी सू हाथ घोवें है | राम पानी से हाथ धोता है । |
| ४ मनार सू मक्खणियो तबडो मनोर से मक्खन (लाल) है । | बलिष्ठ है । |

२ १ ४ ३ ४ सम्प्रदान कारक^१

बीकानेरी में सम्प्रदान कारक की अभिव्यक्ति रं 'न' परसर्गों को
वेधारी रूपा के परे रखकर की जाती है, यथा—

- | | |
|----------------------|---------------------------|
| १ मदन रें लायो है | मदन के लिए लाया हू । |
| २ रोंम रं दुवाई लायो | राम के लिए दुवाई लाया । |
| ३ बडों ने पगेलागणा | बुजुर्गों के लिए प्रणाम । |
| ४ छोरों ने आसीस | लडका के लिए आशीर्वाद । |
| ५ गुरुजी ने दडोट | गुरुजी के लिए प्रणाम । |

२ १ ४ ३ ५ अपादान कारक^२

बोली में 'सू' परसर्ग ही अपादान कारक की अभिव्यक्ति के लिए व्यवहृत
होता है और साथ ही तुलनात्मक स्थितिया में भी सू परसर्ग प्रयुक्त होता है।
यथा—

- | | |
|--------------------------|----------------------|
| १ छोरों डागले सू पङ्ग्यो | लडका छत से गिर गया । |
| २ रोंम अठे सू गयो परो | राम यहा से चला गया । |

- | | |
|------------------------------------|--------------------------------|
| १— 'कमण यमभि प्रीति स सम्प्रदानम्' | —अष्टाध्यायी १/४/३२/
पाणिनि |
| २— ध्रुवमपायेऽपादानम्' | —अष्टाध्यायी १/४/२४/
पाणिनि |

- ३ कसनों सू हरियो बड़ो है
 ४ बोँ ग्हारों सू छोटी है

बिसन से हरि बडा है ।
 वह मेरे से छोटा है ।

२ १ ४ ३ ६ सम्बन्ध कारक

बीकानेरी मे सम्बन्ध कारक की अभिव्यक्ति के लिए पुल्लिग एकवचन में 'रो' बहुवचन मे 'रा' तथा स्त्रीलिग एकवचन व बहुवचन मे 'री' परमग का प्रयोग होता है, यथा-

- १ मदन राँ छोरो है
 २ मदन रा छोरा है
 ३ सीता री घोडी है
 ४ सीता री घोड्यो

मदन का लडका है ।
 मदन के लडके हैं ।
 सीता की घोडी है ।
 सीता की घोडिया है ।

रो, 'रा', 'री', आदि परसगों के अतिरिक्त बीकानेरी मे सम्प्रदान कारक वा परसग 'रँ' भी प्रयोग मे जाता है । विशेषत यह संतान आदि की सूचना देने के लिए एव नीचे ऊपर, आगे लारे आदि शब्दों के पुब व्यवहृत होता है, यथा-

- १ राँम रँ तीन छोरा है
 २ मदन रँ दो छोरा एक छोरी है

राम के तीन लडके हैं ।
 मदन के दो लडके एव एक लडकी है ।

- ३ हरियो रँ एकी टावर कोयनी
 ४ घर रँ आगे खाडो है
 ५ घर रँ लारे दू टयो है
 ६ खेजडे रँ नीचे
 ७ मन्दर रँ ऊपर

हरि के एव भी बच्चा नहीं है ।
 घर के आगे खडडा है ।
 घर के पीछे नल है ।
 वृक्ष के नीचे
 मन्दिर के ऊपर

२ १ ४ ३ ७ अधिकरण कारक

बीकानेरी म मँ, मायँ, ऊपर, आदि परसग अधिकरण कारक की अभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त होत है ।

में परसग सामान्यतः स्थान (अन्दर या बाहर) तथा समयावधि की सूचना देता है ।

१ म्हाणें घर गोंब में है	मेरा घर गाव में है ।
२ राम दुकान में है	राम दुकान में है ।
३ डागले माथे पडियो है	धत पर पडा है ।
४ अन्मारी ऊपर पडियो है	आलमारी पर पडा है ।

२ २ दो या दो से अधिक स्वतंत्र रूपांश युक्त नामवाची-पद
(समस्त-सज्ञा-पद)

एक स्वतंत्र रूपांश युक्त नामवाची पदा में केवल एक ही शब्द में विविध लिंग-वचन-कारक बोधक आवद्ध अंश को जोड़कर पद रचना की जाती है परन्तु दो या दो से अधिक स्वतंत्र रूपांशों में परस्पर भिन्न दो स्वतंत्र रूपांशों के योग में विविध लिंग-वचन-कारक बोधक आवद्ध अंश को जोड़ कर पद रचना की जाती है और इस संयोग के परिणाम स्वरूप उभय अर्थ अभिनवता आ जाती है । पारिभाषिक शास्त्रालो में इसे 'समस्तपद' की संज्ञा से अभिहित किया जाता है । परन्तु प्रश्न यह उठता है कि समस्त पदा का नाम पदा के अध्ययन में क्यों स्वीकार किया जाय ? उत्तर स्वरूप हम निम्नलिखित तर्क उपस्थित कर सकते हैं —

१- जिस प्रकार शब्द के अन्त में विविध अर्थ बोध करने वाले व्याकरणिक कौटि के आवद्ध अंश का योग होता है उसी प्रकार समस्त-पद में भी इनके योग के द्वारा विविध व्याकरणिक कौटि के अर्थों की व्यञ्जना की जाती है ।

२ यद्यपि समस्त पद की रचना दो या दो से अधिक स्वतंत्र रूपांशों के योग में होती है परन्तु ये दोनों स्वतंत्र रूपांश मिल कर धाकपान्तगत एवं स्वतंत्र रूपांश युक्त पद के समान एक ही अर्थ को व्यक्त करते हैं यथा — राजकवर (राजकुमार) ।

इस उदाहरण में राज (राजा) और कवर (कुमार) दो भिन्न भिन्न पद हैं जब वे मिलकर एक हो जाते हैं तो एक ही शब्द के समान अर्थ को व्यक्त करते हैं ।

३ शब्द में बल एक ध्वनि के ऊपर ही प्रमुख होता है, उसी प्रकार समस्त पद में भी एक ही ध्वनि के ऊपर बल की प्रधानता रहती है ।

४ वाक्य रचना एवं अथ शब्द सरचना में शब्द के समान समस्त-पद भी योग्यता विद्यमान रहती है ।

५ शब्द का जो स्वरूप और लक्षण होता है उसके अनुरूप ही समस्त पद का स्वरूप होता है ।

६ शब्द के समान समस्त पद में भी उच्चारण के दोनो भेद युक्त एवं मुक्त सक्रमण विद्यमान रहते हैं ।

७ उच्चारण में स्वास का एक झटका १

इस प्रकार उपयुक्त तथ्यों के आधार पर समस्त पदों को भी नाम पदों के अध्ययन में स्थान दें तो किसी प्रकार की अस्युक्ति न होगी । इस अध्याय में केवल समस्त सज्ञा पदा का ही विश्लेषण प्रस्तुत किया है ।

‘समस्त-पदों के तात्त्विक निष्कर्षों पर पहुँचने के लिए यदि हम तत्सम्बन्धित कतिपय विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं का अवलोकन करें तब अप्रासंगिक न होगा—

‘समय पदविधि अर्थात् पदविधि समय होती है ।^२
समस्यते अनेकम पदमिति समास अर्थात् अनेक पदों का एक पद में मिला देना ही समास है ।^३

१— इस श्वास के झटके को अक्षर उच्चारण के झटके में भिन्न समझना चाहिए । श्वास प्रवाह वाक्यांत या वाक्यांश तक पहुँचने से पूर्व अनेक छोटी बड़ी तरंगों में बंट जाता है । यदि अक्षर उसकी समु त्तरंग है तो समस्त पद गत तरंग उससे दीर्घतम तरंग है ।

२— पाणिनि — मृष्टाध्यायी २/१/१/

३— सिद्धांत कीमुनी बाल मनोरमा टीका

‘दो या दो से अधिक शब्दों का परस्पर संबन्ध बताने वाले शब्दों अथवा प्रत्ययों का लोप होने पर, उन दो या अधिक शब्दों से जो एक स्वतंत्र शब्द बनता है उस शब्द को सामासिक शब्द कहते हैं, और उन दो या अधिक शब्दों का जो संयोग होता है वह समास कहलाता है ।¹

अनेक शब्द मिलकर एक पद जब बन जाते हैं तो वह समास कहलाता है ।²

समास रचना में उन दो शब्दों का योग होता जो वाक्य के स्वतंत्र अंग होते हैं परंतु समास रचना में वाक्य के प्रत्येक शब्द का याग प्रत्येक शब्द के साथ नहीं हो सकता । केवल सनिबन्ध रचनाओं के माप ही समास रचना हो सकती है ।³

धातु तथा प्रत्यय के योग से शब्द बनते हैं और जब एक से अधिक शब्द मिलकर वृहद् शब्द की सृष्टि करत है तब उस समास कहते हैं ।⁴

शब्दों का कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार आपस में मिल कर एक होना ।⁵

दो या अधिक पदों को एक करने पर समास हाता है ।⁶

दोय के दोय सू घण्टा शब्द, अपना सम्बन्धी शब्दों ने छाड़ एक साथ मिल जावे तो अडा मेल सू बगियोडा शब्दों ने समास केबीज ।⁷

— कामना प्रसाद गुरू — हिन्दी व्याकरण नागरी प्रचारणी सभा काशी

पृ० ४८१

— विशारीदास वाजपेयी — हिन्दी शब्दानुशासन न० प्र० स० पृ० ३०६

— डॉ० रमेश चन्द्र जन — हिन्दी समास रचना का अध्ययन पृ० १०

— डा० ज्ञाननारायण तिवारी — हिन्दी भाषा का एद्गम और विकास
पृ० ४७०

— डा० श्यामसुन्दर तथा अय (सम्पादक) हिन्दी शब्दसागर काशी नागरी
प्रचारिणी सभा, पृ० ३४६०

— हिन्दी विश्वकाश त्रयाविंश भाग पृ० २६५

— सीताराम लालस राजस्थानी व्याकरण पृ० २६५

उपयुक्त सभी परिभाषाओं में विज्ञानों के गत भिन्न भिन्न चरणों में एक ही आनाय को अभिव्यक्त करना है तथा उदाहरणों द्वारा उहाने अपने मत का जो पुष्टिकरण किया है वह भी अनेक-गूँथक ही है। अनेक विज्ञानों के तार को मकर टों रमेगाचंद्र ने समस्त-पद के सम्बन्ध में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है जो निम्नलिखित हैं —

(अ) दो या दो से अधिक समीपी सघटकों द्वारा एक चरण का अस्तित्व

(ब) मृष्ट समस्त पद में अर्ध अभिनवता

(स) समीपी सघटकों के अर्थ से भिन्नता

इस प्रकार निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि जब दो या दो से अधिक स्वतंत्र रूपों के जो से व्युत्पन्न एक स्वतंत्र रूपों अस्तित्व प्रकृत करता है और सयोग के परिणाम स्वरूप जत्र उभय अर्थ अभिनवता या जाती है तो पारिभाषिक दृष्टिकोण में उसे समस्त-पद कहा जा सकता है।

अस्तु 'प्रकृतमनुसराम' । बीकानेरी के समस्त-नाम-पदों या अध्ययन क्रमशः ध्वयात्मकता एवं रूपारम्भता की दृष्टि से नीचे प्रस्तुत किया गया है।

ध्वयात्मक विक्षेपण के अतगत मूल समीपी सघटकों में ध्वयात्मक परिवर्तन होकर समस्त पद में जो परिणाम लाने हुए हैं उह प्रस्तुत किया गया है। उपलब्ध सामासिक पदों का विग्रह करने के उपरांत समीपी सघटकों में ध्वयात्मक परिवर्तन के प्रयोग तथा सयोग के परिणाम स्वरूप ध्वनि नकटय का भी विवेचन प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार का विक्षेपण बीकानेरी के मूल नाम पदों के स्वरूप को हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है। रूपारम्भक विक्षेपण के अतगत

चरणों के व्याकरणिक स्वतंत्र रूप निर्माण की प्रक्रिया एवं प्रयोग को स्वीकार किया गया है। अर्थ विज्ञान की दृष्टि से समस्त पदों में जब अभिनवता की दिशा एवं उनके स्वरूप पर प्रकाश डाला जाता है जो मेरे 'शुभोत्पन्न' की सीमा के बाहर है अतः अर्थ विज्ञान को विक्षेपण के अतगत स्वीकार नहीं किया गया है। समस्त पदों के इस विक्षेपण के साथ साथ समीपी सघटकों की प्रधान

अप्रधानता पर भी विचार किया गया है।

समस्त पदों के स्वरूप निर्धारण में मैंने सस्कृत एवं हिंदी की प्रचलित रूढ़ परम्पराओं को पूर्ण रूपेण अस्वीकार नहीं किया है यदि ऐसा

तो मेरा 'प्रबंध' गडुलिफा प्रवाह मात्र ही सिद्ध होता है । अद्यावधि प्रचलित भाष्यताया के विश्लेषण के उपरांत सामान्य भाष्यताओं का निर्धारण कर उन्हीं के आधार पर समस्त-पद-स्वतंत्र रूपांश का निर्धारण किया गया है ।

२ २ १ वीकानेरी मे प्रयुक्त समस्त-पज्ञा-पद

वीकानेरी मे समास रचना के परिमाण स्वरूप समीपी संघटको के मूल रूप मे ध्वनि परिवर्तन हाता है, पर कुछ समस्त-पद ऐसे भी हैं जिनमे संयोग उपस्थित होने पर भी ध्वनि की दृष्टि से विकार उत्पन्न नहीं होता है । अतः अध्ययन की सुविधा के लिए हम वीकानेरी समस्त सना पदो को दो वर्गों मे विभक्त सकते हैं -

१ अविकृत समस्त-सना-पद

२ विकृत समस्त सना पद

२ २ १ १ अविकृत समस्त-सज्ञा-पद

अविकृत रूपा से हमारा तात्पर्य उन समस्त सना-पदो से है, जिनमें ध्वनि की दृष्टि से दोनो समीपी संघटको मे किसी प्रकार का विकार उत्पन्न नहीं होता है वरन वे अपने मूल रूप में प्रयुक्त हुए हैं । वीकानेरी मे उपलब्ध समस्त सज्ञा-पदो के अविकारी रूप निम्नलिखित हैं -

ऊँरोँ ऊँरी कलजुग, कण-कण, कालीमरच्याँ, कुजगली, काँटी कोडी, खाटाँ मीनाँ, घरजवाई घर-बार घर घर जनमभूमि, भंगलाँ टापी मन्नाल कलभून जीवणोँ मरगोँ भायाजाल, मोरमुगट रायकंधरी, रोटी बाटी, लट-पट, वन्व्यास, सुत-दुत, हाल-चाल मार कूट, बोल चाल उठ-बठ तोड-पोट, माँ-चेटाँ, बाप-चटोँ माँ बाप, भाई बेँन हाथ मूखोँ, धाल नाक रसोईघर, कोम चोर लाल-दीतो, पाप-पुन हाली दीयाली, सूझ-बूझ, सूताँ सूतोँ सावली सूरत, सरग वसाँई ।

२ २ १ २ विकृत समस्त-सज्ञा-पद

विकृत समस्त सज्ञा-पदा से हमारा तात्पर्य उन समस्त पदो से है जिनमे

ध्वनि की शक्ति में दोनों समीपी सघटक की भाँति मध्य अक्षरा अल्प ध्वनि में किसी न किसी प्रकार का विकार व्युत्पन्न हुआ है। विवृत्त रूपों को ध्वनि विवृति के आधार पर हम तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं -

आदि समीपी सघटक में विकार
अल्प समीपी सघटक में विकार
द्विसमीपी सघटक में विकार

२ २ १ २ १ आदि (प्रथम) समीपी सघटक में विकार
कोनोवाँन, सटमीठाँ, वेद देवता, नकटी, पाठ पाठोम, रजपूताँ,
रातोरात, हापोहाय, नोँरतम, बडबोर, घडूमपड्डा,
उक्त सामासिक पदों में ध्वनि परिवर्तन के विभिन्न रूप हमें देखने को मिलते हैं। इनका विश्लेषण निम्नलिखित हैं -
ध्वनि लोप-

(क) स्वर लोप

बडबोर—बड्+आ+बोर=बडाबोर
लोप / आ / उड्+आ+बोर=बडबोर

(ख) यजन लोप

देईदेवता—देव+ई+देवता=देवीदेवता
लोप / व् / देव+ई+देवता=वेईदेवता

(ग) अक्षर लोप

नकटी=नाक+कटी=नाकटी
लोप—नाक+कटी=नकटी

(घ) स्वर व्यजन लोप

पाडपाडोस—पाडोस+पाडोस=पाडोसपाडोस
लोप—पाड+ओ+स्+पाडोस=पाडपाडोस

ध्वनि आगम

(क) स्वरागम

रातोरारत, को॑नोको॑न, हा॒योहा॒थ

रात + रात = रातरात

आगम — रात + ओ + रात = रातोरारत

को॑न + को॑न = को॑नको॑न

आगम — को॑न + ओ + का॑न = को॑नोको॑न

(ख) व्यजनागम

घक्कमघक्का

घक्का + घक्का = घक्काघक्का

आगम — घक्क + मू + घक्का = घक्कमघक्का

२ २ १ २ २ अन्त्य (द्वितीय) समीपी सघटक मे विकार

राबडी-बावडी, आठो॑नी च्यारो॑नी दोवा॑नी, एका॑नी, गणगो॑र, मोती
पूर गणपत, बोल वालो॑, मनखजमारा॑, लातघमूका मू छ मरोडा

उपयुक्त सामासिक पदो के द्वितीय समीपी सघटक इकाईया म विकार उत्पन्न हुआ है। वह कई प्रकार का है जिसके कारण मूल रूप म अन्त्यात्मक परिवर्तन हुआ है।

ध्वनि लोप

(क) अन्त्य लोप

/ई/ गणपत

गण + पत् + ई = गणपती

लोप — गण + पत् + ई = गणपत्

/ओ/ मोतीचूर

मोती + चूर + ओ = मोतीचूरा

लोप — मोती + चूर + ओ = मोतीचूर

(ख) मध्य ध्वनि लोप

/ह/ होठों बाहर

होठों + बा + ह + र = होठों बाहर
लोप - होठों + बा + ह + र = होठों बाहर

ध्वनि आगम

अत्य ध्वनि आगम

/आ/ बोनबाला मू छ मरोडा
बोल + बाल + आ = बोलबाला
मू छ + मरोडा + आ = मू छमरोडा

सना शब्दों की पुनर्कृति से बनने वाले समासों में भी ध्वनि विकार द्वितीय सयोगी अवयव में देता जाता है। ध्वनि विकार की दृष्टि से इस वर्ग के दो रूप उपलब्ध होते हैं -

(क) ई ए तथा ओ > आ यथा-

- /ई > आ/ भीड़ भाड़
- /ई > आ/ वील बाल
- /ए > आ/ डैरे डार
- /ओ > आ/ छोरों छारों

- समूह आदि
- बेल (फल) आदि
- डैरे आदि
- तहरे आदि

(ख) आ > ऊ यथा-

- /आ > ऊ/ बालबूल
- /आ > ऊ/ पाटपूट
- /आ > ऊ/ दालदून
- /आ > ऊ/ सागभूग
- /आ > ऊ/ तालातून

- जलाकर
- पाटादि
- दानादि
- सठ्ठी आदि
- ताला आदि

संज्ञा प्रातिपदिक की द्विरक्ति संनिमित्त एमें भी समस्त-पण उपलब्ध होते हैं किन्तु द्वितीय सयोगी अवयव ध्वनि विकार की दृष्टि से व्यजन विहीन

हो गये हैं। यथा—

रोटी-ओटी	रोटी आदि
साग-आग	सब्जी आदि
माइ-आई	माई आदि
सालाँ आलाँ	साले आदि

किन्तु यदि आदि रूप स्वर से आरंभ होने वाला है तो पुनरुक्ति में 'व' श्रुति का आगम आदि भाग में हो जाता है —

आटोँ-वाटोँ	आटा आदि
आलू-वालू	आलू आदि
ईट-बीट	ई ट आदि

२ २ १ २ ३ द्विपद समीपी सघटक में विकार

ऊनालोँ (उष्ण + काल), कनफडा, चाँबाराँ, चोँमासोँ, भूमाभूमी रजपूतण, सीयालाँ हयलेवो, होडाहाडी, भडभू जोँ, घक्का घक्की, तणा-तणी, वउहपियाँ

प्रथम पद विकार

लोप — /ओ/ — घू घरमाल
 आगम— /आ/ होडाहोडी
 आगम— /आ/ तणातणी
 आगम— /आ/ भूमाभूमी
 लाप — /ओ/- कनफडा
 अल्पप्राणीकरण ऊनालोँ
 आगम— /ई इय/सीयालोँ
 लाप — /र/- चाँमासाँ
 लोप — /र/ चोँबाराँ
 लोप — /र/ — चो रायोँ

द्वितीय पद विकार

लोप — /जा/ घू घरमाल
 आगम— /ई/ होडाहोडी
 आगम— /ई/ तणातणी
 आगम— /ई/- भू माभूमी
 लोप — /आ/ कनफडा
 लाप /जाँ/- (ऊनोँ-आलोँ) = ऊनालोँ
 लाप- /आ/ (सी + आलोँ) = सीयालोँ
 आगम— /आँ/ चो मासोँ
 आगम— /ओँ/ -चाँबाराँ
 आगम— /आ-ओ/, लोप /ह/ श्रुति
 /य्/ -चाँरायोँ

लोप — /आ/ ह्यतेवो

आगम — आ/- ह्यतेवो

लोप — /ओ/ पृथ्वाडो

आगम — /ओ/-पृथ्वाडो

उपयुक्त ध्वनि विकारा पर दृष्टिपात करने पर विन्ति हागा कि इन विकारा के पीछे मुख-मुख, मृदुता, नादसौंदर्य, ध्वारणता अनुकरण, अलकरण आवेश आदि प्रवृत्तिया प्रमुख हैं। अत्य विकार का प्रमुख कारण यह है कि बोली में आकार बहना की प्रवृत्ति प्रमुख है। जिसका उल्लेख अणाय १ के अंतगत किया जा चुका है।

२ २ १ ३ सश्लिष्ट एव विश्लिष्ट समस्त-सज्ञा-पद

ऊपर हमने बीकानेरी समस्त पदा के ध्वनि के आधार पर विकारी और अविकारी का भेद किये थे। इन विकारी और अविकारी रूपा के अतिरिक्त बीकानेरी समस्त पदा के दो अन्य भेद भी हमारे समक्ष उपस्थित होते हैं —

१ सश्लिष्ट समस्त-सज्ञा-पद

२ विश्लिष्ट समस्त-सज्ञा पद

सामान्य रूप से समस्त-पद श्वास के एक झटके में उच्चरित होता है पर कुछ कारणवश श्वास के उस निरन्तर प्रवाह में आदि या अंत के सभीषों सघटकों की अन्त या आदि ध्वनियों में किसी प्रकार के ध्वनि गुण के प्रभाव के कारण व्यवधान उपस्थित हो जाता है और ध्वनि सयोग स्तर में इसी श्वास प्रवाह के कारण व्यवधान के आधार पर विभिन्न रूप हमारे समक्ष प्रस्तुत होते हैं। जहाँ ध्वनि सयोग में किसी प्रकार का व्यवधान लक्षित नहीं होता वहाँ समस्त सज्ञा पद सयोग को सश्लिष्ट और जहाँ व्यवधान उपस्थित होता है वहाँ 'विश्लिष्ट' नाम से अभिहित किया गया है।

१— जसा कि उल्लेख किया जा चुका है कि इस श्वास के झटके को अंतर उच्चारण के झटके से भिन्न समझना चाहिए। श्वास प्रवाह वाक्यांत तक या वाक्यांत तक पहुँचने के पूर्व अनेक छोटी बड़ी लम्गों में बट जाता है। यदि लम्गर उसकी लघुतम तरंग है तो समस्त शब्द गत तरंग उससे अपेक्षाकृत दीर्घ है।

जहाँ भाषा या बोली के लिखित रूप में यह ध्वनियुक्त मुत्तसक्रमण के द्वारा किया जाता रहा है वहाँ पर हम सामासिक पदों के इन दो ही रूपों का स्वरूप सरिलिप्त एवं विशिलिप्त प्रस्तुत कर सकते हैं। भाषा या बोली के उच्चरित रूप में यह सक्रमण विभिन्न मात्रा में घटित होता है। अतः लिपि के अन्तर्गत इस प्रकार के व्यवधान को प्रस्तुत करने के लिये हमारे पास पर्याप्त ध्वनि संकेत उपलब्ध नहीं हैं। इस प्रकार की प्रवृत्ति प्रायः सत्तार की सभी भाषाओं में लक्षित होती है। बीकानेरी के उच्चरित रूप को ध्यान में रखकर ध्वनि-संयोग का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है जिसका आधार सरिलिप्त और विशिलिप्त पद है। ध्वनि लक्षण का दृष्टि पथ में रखकर विशिलिप्त पद के स्थूल भेद किये गये हैं। यह कार्य सरल नहीं है फिर भी बतिय अनुमाना के आधार पर निष्कर्षों तक पहुँचने का प्रयास किया गया है। परिष्कृत विशिलिप्त पदों को दो भागों में विभाजित किया गया है—आशिक और पूण। इसी प्रकार सरिलिप्त पदों को भी दो भागों में विभाजित किया गया है। इसका आधार भी प्रथम, जहाँ ध्वनि-परिवर्तन सघिगत नियमों के अंतर्गत हुआ है और दूसरा वहाँ जहाँ ध्वनि परिवर्तन सघिगत नियमों से पृथक् और परे है।

२ २ १ ३ १ सरिलिप्त समस्त-संज्ञा-पद

सघि नियमों से प्रभावित संज्ञातीय वगैरे दीर्घत्व को प्राप्त होते हैं। तत्परिष्कारणमस्वरूप समीपी सघटका के अर्थात् स्वरों में सघि हो जाती है। ह्रस्व के स्थान पर दीर्घ ध्वनियाँ स्थान ग्रहण कर लेती हैं। यथा सीपालाँ ऊनालाँ आठाँनी दोओँनी, एवाँनी आदि।

समीकृत सम ध्वनिया का सघि में प्रायः लोप होता है। सामासिक पदों के संयोग में भी इस प्रकार की प्रवृत्ति उपलब्ध होती है।

ध्वनि संयोग में सरिलिप्त पद का दूसरा उदाहरण आद्यत समीपी सघटका की अत्य एवं आदि ध्वनिया से ध्वनि संयोग निवृत्तवर्ती ता होता है, पर सघि विधान से प्रभावित नहीं होता। इस प्रकार का नैकटय बीकानेरी में समीपी सघटका में एक सघटक एकादारीय एवं ध्वनि लक्षण से प्रभावित है यथा चौँमासों चौँबारों आदि।

२ २ १ ३ २ विदित्पट रामस्त-भजा-पद

बीजानेरी के अघिकांग उपसन्ध रामस्त रामा प^० विदित्पट है । यह विदित्पटता तब होनी है जबकि सामागिक पदा की दोगा समीपी सघटक इकाइया म प्रथम के उपात्य या अत्य एव द्वितीय की आत्ति या द्वितीय ध्वनि पर बलापात हा । प्राय इस बलापात की प्रवृत्ति का प्रम बीजानेरी म क्रम^० दीघ-ह्रस्व, महा प्राण, अपप्राण, सपोष अपोष, संपर्षो-स्पर्शमपर्षो, स्पर्श उच्चारण म देगने की मिलते हैं ।

दीघ-ह्रस्व

(क) दीघ-गीष	भारवावयो, माँमामोँम्यो
(ख) दीघ-ह्रस्व	बटाबट सपालप, भवामभ
(ग) ह्रस्व-गीष	देइवेता, पद्यवाडाँ, बउबेता

कभी कभी इस प्रकार के समीपी सघटको की इकाइया का योग होता है जिसमे प्रथम समीपी सघटक इकाई व्यञ्जनात् है यहाँ ह्रस्वता की मात्रा अत्यल्प हो जाती है । इसी कारण इसे पृथक् वग म प्रस्तुत किया गया है ।

अति ह्रस्व-दीघं

सटमीठोँ, रजपूतोँ आदि । अति ह्रस्व ध्वनियो मे यदि समीपी सघटको की अत्य या आत्ति ध्वनि म से एव उद्विष्यत हो तो अति ह्रस्वता की मात्रा में अंतर उपस्थित हो जाता है । दीघत्व ह्रस्व के नक्कय की प्राप्त कर लेता है । यथा पाठपाठोसी भडभूजा

अनुनासिक ध्वनियो की भी यही स्थिति देखी जाती है-

गणपत कनफडोँ नीनदवाल । यही प्रवृत्ति लुठित एव पार्श्विक ध्वनियो म भी देखी जाती है । यथा-कालकूटियोँ ।

महाप्राण-अल्पप्राण

प्रथम समीपी सघटक की प्रथम इकाई के अत्य वण मे महाप्राणता पर बल का प्रयोग होता है । यथा मनलजमारोँ हयलेकोँ आदि । द्वितीय समीपी सघटक के आदि मे महाप्राणता के आधार पर भी ध्वनि संयोग मे बल के परिणाम

स्वरूप ह्रस्वता में अंतर उपस्थित हो जाता है—

सानघमूका, गऊघन, कनफडों ।

सघोष-अघोष

सघोष ध्वनिया के उच्चारण में श्वास के अवरोह में स्वर त्रिया द्वारा बल का प्रयोग होता है । तत्परिणामस्वरूप इनमें उच्चारण मात्राकाल अधिक होता है । अतः सामासिक पदा की समीपी सघटका की आद्यत इकाइयों के अन्त्य या उपात्य एव आदि वग में घोषता के परिणाम स्वरूप सामासिक सघोष की विश्लिष्टता में अंतर उपस्थित हो जाता है । यथा—अरघभडारों ।

सघर्षी-स्पर्श सघर्षी

सघर्षी ध्वनियों में उच्चारण मात्रा काल अधिक होने के कारण बलाघात की समावना इन्हीं ध्वनियों पर अधिक है । तत्परिणाम स्वरूप उच्च ध्वनि के सामासिक पदों के समीपी सघटका की इकाइयों के अन्त्य या आदि ध्वनियों की विश्लिष्ट पद स्थिति में अंतर उपस्थित हो जाता है । यथा गपसप, रहीसही आदि ।

उपयुक्त विवेचन विश्लिष्ट पद समीपी सघटका की अन्त्य एव आदि ध्वनियों के उच्चारण मात्रा काल को दृष्टि में रखकर प्रस्तुत किया गया है । इसके अतिरिक्त विश्लिष्टता के अर्थ कारण भी हैं जिन पर नीचे सक्षेप में प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है ।

विशेषण-विशेष्य एव समानाधिकरण पदों की विश्लिष्टता में दोना सघटका का सहयोग अधिक नकटय को प्राप्त करता है । यथा सागीनणद सोनचडी ।

द्विरुक्ति में अलकार प्रियता के कारण ध्वनि साम्य के आधार पर भी विश्लिष्टता की सामान्य परिस्थितियों से भी अंतर उपस्थित हो जाता है क्योंकि बल का प्रयोग समध्वनिया के ऊपर केंद्रित हो जाता है । यथा भूलचूक, सूजचूक, बणकण ।

अनुकरण वाची द्विरुक्तियों में भी इस प्रकार का प्रभाव लक्षित होता है । यथा लटपट, लटपट, ऋटपट, रमकभमक । विरोधी लिंगबोधक द्विरुक्तियों में

भी यही प्रभाव सति होना है। यथा-ऊँराँ-ऊँरी ।

जहाँ यही सम्बन्ध सूचक का लोप हुआ है, इस प्रकार के सुप्तक समास पदों के ध्वनि संयोग में पूर्ण विश्लिष्टता विद्यमान रहती है। भेद भेदक, सम्बन्ध सूचक प्रत्ययों के लोप में इसी प्रवृत्ति के दान होते हैं। यथा

अरषमडार, धणो बऊ, परधणी, वैकुण्ठवास में क्रमशः / रा /, / ओर /, / राँ /, / में / सम्बन्ध सूचक हैं।

संयोग में व्ययपात कभी कभी विशेषण विशेष्य सत्रय के द्वारा भी उपस्थित होजाता है। अतः जिस प्रकार का संयोग विशेषण-विशेष्य क्रम से होना चाहिये उस प्रकार का संयोग विशेष्य में नहीं हो पाता। यथा धनस्योम ।

उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि बीरानेरी समास सज्ञा पदों के समीपी संघर्ष के ध्वनि संयोगों में मात्रा बालक अनेक स्तर हैं।

२ २ १ ४ समस्त-सज्ञा-पद, स्रोत मूलक विश्लेषण

इस शीर्षक के अन्तर्गत बीरानेरी के समस्त पदों के मूल स्रोत पर विचार किया है। सामान्यतः स्रोत से आगत मूल शब्द की उत्पत्ति और तत्सम्बन्धित भाषा से है। इसे ऐतिहासिक विश्लेषण के अन्तर्गत रखा जाता है। वरुणात्मक सामासिक संरचना में दूसरे प्रकार का स्रोत ही विद्वानों ने स्वीकार किया है जिसके अनुसार प्रचलित भाषा में ही उसके स्रोतों को साधक स्वतंत्र रूपों की इकाई के रूप में खोजने का प्रयास किया जाता रहा है। प्रस्तुत लघुशेष प्रबंध में विषयानुकूल द्वितीय प्रकार के स्रोत पर ही अपनी दृष्टि केन्द्रित रखी गई है। इससे अनुसार बीरानेरी में उपलब्ध स्वतंत्र रूपांश जिनका अधुनातम प्रयोग प्रचलित है- ध्वन्यात्मक विकार की दृष्टि से अपने मूल स्रोत से कितनी दूर हैं? या मूल रूप में प्रयुक्त हैं। अतः ध्वनि विकार मात्रा एवं तज्जग्य स्वतंत्र रूपांश में मूल शब्द से दूरी जिसके कारण गठन विशेष का मूल शब्द के साथ साम्य स्थापित करने में क्रमशः दुर्बलता की मात्रा बढ़ती जाती है, -को विभिन्न स्तरों में विभाजित कर विवेचन प्रस्तुत किया गया है। साथ ही अध्ययन की सुविधा के लिए उनका धर्गीकरण निम्नलिखित पंक्तियों के अन्तर्गत प्रस्तुत किया जा सकता है-

- (१) तत्सम (२) अद्ध तत्सम (३) तद्भव (४) अद्ध तद्भव (५) अनुकारवाची
(६) देशज (७) विदेशी

१- तत्सम

तत्सम शब्दा से मेरा आशय उन समस्त पदों से है जिनका ध्वन्यात्मक विकार से रहित बीकानेरी में प्रयोग उपलब्ध होता है।

२- अद्ध तत्सम

अद्ध तत्सम शब्दों में मैंने उन समस्त पदों का स्वीकार किया है जिनमें स्वतंत्र रूप ध्वनि विकार की अत्यल्पता के कारण अपने मूल रूप के अधिक सन्निकट दिखाई देते हैं।

३- तद्भव

तद्भव शब्दों की श्रेणी में ऐसे पदों को स्वीकार किया है, जिनमें ध्वनि विकार इतनी मात्रा में उपस्थित हुआ है कि उन शब्दों का मूल रूप के साथ ध्वन्यात्मक साम्य स्थापित नहीं किया जा सकता।

४- अद्ध तद्भव

अद्ध तद्भव की श्रेणी में ऐसे स्वतंत्र रूपों को स्वीकार किया गया है जो अपने मूल रूप से ध्वन्यात्मक विकार के परिणाम स्वरूप इतने दूर हो गये हैं कि विनास जय स्वतंत्र रूप एवं मूल रूप में पारस्परिक ध्वनि साम्य स्थापित करना असम्भव नहीं तो दुष्कर व श्रमसाध्य अवश्य है।

५- अनुकारवाची

ऐसे शब्द जो ध्वन्यात्मक अनुकरण के आधार पर निर्मित हुए हैं उन्हें इस वर्ग में स्वीकार किया गया है।

६ देशज

भारत में तत्सम और तद्भवों के अतिरिक्त शब्दों को 'देशी' या 'देश्य' भी कहते हैं।^१ छठी शताब्दी में चण्डन देशी-प्रसिद्ध शब्दों का प्रयोग असंस्कृत

तथा आ-प्राकृत शब्दों के लिये किया है १ 'देशी' शब्द अथवा स का वाचक भी हो गया था। हेमचन्द्र की 'देशी नाम माला' देशी शब्दों का कोष है। पर जिन शब्दों को प्राकृत वर्णान्तरण ने देशी बना दी है उनमें से कुछ की व्युत्पत्ति संस्कृत से भी है, और कुछ का स्रोत आय भाषाओं में है। एम० एन० उपाध्य ने कुछ का स्रोत कन्नड में बताया है। परन्तु अधिक जटिलता में न जाकर हम सामान्य रूप से कह सकते हैं कि जिनकी व्युत्पत्ति का सही निर्धारण नहीं किया जा सके वे ही शब्द 'देशी' या 'देशज' हैं। ऐसे शब्दों का भाषाओं की अपेक्षा बोलिया में बाहुल्य होता है। बीकानेरी में भी ऐसे शब्दों का प्राचुर्य है।

७ विदेशी

ऐसे शब्द जो विदेशी भाषाओं से गृहीत हुए हैं इस वर्ग में स्वीकार किये गये हैं।

सामासिक संरचना के अंतर्गत मैंने संघटकों की अधुनातम उपलब्ध प्रयोग प्रक्रिया को प्रस्तुत करने का यथा सम्भव प्रयास किया है जिसका आधार ध्वनि विकार और मात्राएँ हैं।

१- तत्सम + तत्सम = तत्सम यथा-

कण कण, मुख दुख, वेणु व्यास बाल लीला नाग लीला।

२- तत्सम + तद्भव = तत्सम-तद्भव यथा-

गणपत घनशयो म रूपचक्र कुजगती

३- तत्सम + विदेशी = तत्सम-विदेशी यथा-

पचकमेठी

४- तद्भव + तत्सम = तद्भव-तत्सम यथा-

जनमभूमि रत्तोणी व्यास

५- अद्ध तत्सम + अद्ध तत्सम = अद्ध तत्सम यथा-

राजपूत, दूधपूत, कलजुग मरुतलोक

६- अद्ध तत्सम + तत्सम = अद्ध तत्सम-तत्सम, यथा-

देइदेवता रामराज्य

- ७- तत्सम + अद्ध तत्सम = तत्सम - अद्ध तत्सम, यथा -
एकाँनी काली मरुच्यो
- ८- अद्ध तत्सम + तद्भव = अद्ध तत्सम - तद्भव, यथा -
कालकाठरो राजकवरी, मणुषारी
- ९- तद्भव + अद्ध तत्सम = तद्भव - अद्ध तत्सम, यथा -
षोमासाँ, चोवारी मोरमुगट
- १०- तद्भव + तद्भव = तद्भव, यथा -
क जीवणो मरणो हूदई, घाली-लोठो
ख सूताँ सूनाँ कोना कोन, हायो-हाय, मन्य मनख
- ११- तद्भव + अद्ध तद्भव = तद्भव - अद्ध तद्भव यथा -
घरज्वाँई हयलेवोँ, भूलभूक
- १२- अद्ध तत्सम + अद्धतद्भव = अद्ध तत्सम - अद्धतद्भव, यथा -
राँइसावणी, हायकोँम
- १३- अद्ध तत्सम + तत्सम = अद्ध तत्सम - तत्सम, यथा -
नरोगीकाया दइत्वता,
- १४- अद्ध तद्भव + तद्भव = अद्ध तद्भव - तद्भव, यथा -
खाटो मीठोँ, खटमीठोँ,
- १५- अद्ध तद्भव + अद्ध तत्सम = अद्ध तद्भव - अद्धतत्सम, यथा -
हालतोँ चालतोँ बउरूपीयोँ
- १६- अद्ध तद्भव + अद्ध तद्भव = अद्धतद्भव, यथा -
क आठाँनी, च्याराँनी चाँरायोँ
ख कोँडी-काँडी
ग गुत्यम-गुत्या
घ आपरी-आपरी
- १७- तत्सम + अद्धतद्भव = तत्सम - अद्धतत्सम, यथा -
गलाघोट राघावँनजी
- १८- अनुकारवाची + अनुकारवाची = अनुकारवाची
लट-पट्, खट्-पट, ऋट्-पट्, गद् बड भमा भमी, भच्चा भच्ची

- १९- अनुकारवाची + तद्भव = अनुकारवाची — तद्भव, यथा-
बडबडवटद
- २०- तद्भव + अनुकारवाची = तद्भव — अनुकारवाची, यथा-
अएवए
- २१- अद्धतद्भव + अनुकारवाची = अद्ध तद्भव — अनुकारवाची यथा-
मूछबूछ
- २२- देशज + अनुकारवाची = देशज — अनुकारवाची यथा-
लातघमूका
- २३- देशज + देगज = देशज, यथा-
(क) कचोली समोसो
(ख) होडा होडी
(ग) सगो — सगा डरती डरती
(घ) भगलो टोपी
- २४- देशज + तद्भव = देशज — तद्भव, यथा-
सागो नएद व्याओतर कुतडी गॅलजाती
- २५- देगज + अद्धतद्भव = देगज — अद्ध तद्भव यथा-
वापखावणी होडयो मारती
- २६- तद्भव + देशज = तद्भव — देगा यथा-
घासणो — समोसो
- २७- अद्ध तत्सम + देशज = अद्ध तत्सम — देगज यथा-
मीचो गु भारियो
- २८- अद्ध तद्भव + विदेशी = (ज ग्रेजी) = अद्ध तद्भव — विदेशी, यथा-
गलाघाँठकमेठी
- २९- देगज + विदेशी = देशज — विदेशी, यथा-
भरधियो — ग्लास
- ३०- विदेशी + तद्भव = विदेशी — तद्भव यथा-
गुलो मभाई

- ३१- अद्ध तत्सम + विदेशी (अरबी) = अद्ध तत्सम - विदेशी, यथा -
सम्बावाल
- ३२- तद्भव + विदेशी = तद्भव-विदेशी, यथा -
सौवर्गीमूरत,
- ३३- विदेशी + विदेशी = विदेशी, यथा -
मीया बीबी मीनाबजार, मोटर कार
- ३४- अद्ध तद्भव + निरर्थक = अद्ध तद्भव निरर्थक यथा -
तलाइ बलाई, गाल वाल
- ३५- निरर्थक + निरर्थक = निरर्थक यथा -
झाबड भूली, छापड धूनी वड वटद
- ३६- देशज + निरर्थक = देशज निरर्थक यथा -
रपडी घबडी

मैंने उपयुक्त विश्लेषण म वर्णनात्मक आधार पर बीकानेरी के उपलब्ध समस्त सजा पदा को प्रस्तुत किया है। बीकानेरी म इनके अतिरिक्त अन्य समस्त सजा पदा भी उपलब्ध हो सकते हैं जिसके परिणाम स्वरूप उनके स्रोत मूलक विश्लेषण के अन्तगत अन्य और वग भी प्रस्तुत किये जा सकते हैं। सजा की मूल प्रवृत्ति का विश्लेषण वितरण एव वैसादश्य के आधार पर साम्य वैधर्म्य स्थापित करने हुए किया गया है। इनको कई स्रोत म विभक्त किया गया है। यहाँ यह स्पष्ट कर देना अप्रासंगिक न होगा कि उक्त विवेचन स्रोत की ओर संकेत ही करता ही है समस्त रचना पदा के स्वरूप पर भी प्रकाश डालता है।

२ २ १ ५ समस्त-सजा-पद रचना प्रक्रिया

२ २ १ ५ १ प्रथम पद सजा वाले समस्त-सजा-पद

इस शीपक के अन्तगत रूप रचना की दृष्टि से समस्त सजा-पदा का विश्लेषण प्रस्तुत किया जा रहा है। इसलिए समस्त सजा पदा की दोना इकाइया के व्याकरणिक रूप को क्षेत्र बिन्दु के रूप म अपनाया गया है। वितरण एव वर्णनात्मक के आधार पर इस प्रकार के वर्गीकरण में निम्न उपलब्धियां हुई हैं। वर्गीकरण म प्रथम पद सजा को क्षेत्र बिन्दु धनाया गया है।

१ घरबार, फलफूल, सलालीनों देईबना, दूधपूत, ऊँरों ऊँरी, खोंड भात, राटी बाटी, लूण मरच, भगलों टोपी, होली दीयाली,

उपयुक्त समस्त संज्ञा पदों पर दृष्टि डालने से विन्तित होना है कि इन समस्त संज्ञा-पदों के दोनों पद संज्ञा हैं। संयोजक द्वारा दोनों का मेल एवं संयोजक का लोप हुआ है। यह द्विपद प्रधान समस्त संज्ञा पद हैं।

उपयुक्त समस्त संज्ञा पदों में दोनों पदों की प्रधानता के कारण लिये वचन के रूपां में स्वतंत्रता है। जहाँ पर दोनों शब्दों में लिंग भेद है वहाँ क्रिया के साथ अत्रय करने पर क्रिया बहुवचन एवं पुल्लिंग होती है। इनके समीपी सघटकों में परिवर्तन भी सम्भव है। कुछ इस प्रकार के भी समस्त संज्ञा पद हैं जो संयोजक द्वारा एवं होते हुए भी अर्थ की दृष्टि से लाक्षणिकता को प्राप्त कर मुहावरों का रूप धारण कर लेते हैं। उनमें शब्द क्रम परिवर्तन असंभव प्रतीत होता है। सामाजिक परम्परानुगत प्रयोग प्रवृत्ति के परिणाम स्वरूप भी शब्दों के क्रम में परिवर्तन सम्भव नहीं होता क्योंकि इस प्रकार के शब्दों का नाद सौन्दर्य की दृष्टि से विशेष महत्त्व है।

२ खटपट, लटपट रमक भमक आदि।

उक्त सभी समस्त संज्ञा पद अनुकारवाची हैं। यद्यपि प्रथम पद के समीपी सघटकों में प्रथम इकाई नाम शब्द है पर यहाँ इसका प्रयोग ध्वनि अनुकरण के रूप में हुआ है। द्वितीय समस्त संज्ञा पद की इकाईया अनुकरणात्मक हैं। इन समस्त पदों का सम्बन्ध संयोजक 'और' के द्वारा अभिव्यक्त हुआ है जो यहाँ पर लुप्त है।

३ बालगोठियों, दीनानाथ नंदलाल वेदव्यास भोलानाथ, रणचंद आदि में समस्त संज्ञा-पद व्यक्ति वाचक रूप धारण करते हैं। इनमें कुछ पद विशेषण विशेष्य संबन्ध बोध कराते हैं यथा भोलानाथ आदि। कुछ शब्द भेद-भेद संबन्ध के बोधक हैं यथा बालगोठियों नंदलाल आदि। वेदव्यास शब्द व्यक्ति वाची होने हुए भी 'और' संयोजक के द्वारा भिन्न इकाईयों से निर्मित समास धन सञ्ज्ञा है। इस प्रकार विशेषण विशेष्य सम्बन्ध सूचक पद में शब्द १ + शब्द २ = शब्द ३ हैं। भेद-भेद सम्बन्ध बोध कराते हुए समस्त पदों

को प्रथम इकाईयाँ विशेषण का बोध कराती हैं यद्यपि ये दोनो पद अपने मूल रूप में सना पद हैं तथापि दोनो ही पद विशेषण विशेष्य के सम्बन्ध का बोध कराते हैं । रूपचद शब्द की प्रथम इकाई विशेषण है । पर अथ की दृष्टि से ये दोना गण मिल कर एक हो गये हैं जो व्यक्तिवाची सना का रूप धारण कर लत है ।

५ वैकुण्ठ, रास सरग, वास

दोनों पद 'म' सम्बन्ध सूचक के द्वारा समस्तता को प्राप्त करते हैं, यहा पर इसका लोप हो गया है । प्रथम समस्त पद की प्रथम इकाई द्वितीय इकाई की मर्यादा बोध कराती है । अतः इसका विश्लेषण विशेषण विशेष्य के अनुरूप है ।

६ मरतलोक, मायाजाल, रामदुवाई, गणपत, मनख जमारो,

सभी समस्त पद भेदक भेद सम्बन्ध बोधक हैं । जिन समासा में द्वितीय पद प्रधान हैं उनके लिंग वचन का निर्धारण एव क्रिया का सम्बन्ध द्वितीय पद के अनुसार ही होता है । इस प्रकार के योग को व्यधिकरण के नाम से अभिहित किया है ।

७ कोड़ी का डी मनख मनख लुगायो लुगायाँ आदि ।

उपयुक्त समस्त पद द्विरुक्ति प्रधान हैं । जत प्रथम पद की प्रधानता है । इकाई संज्ञा हाते हुए भी विशेषण का काम करती है अथ सभी प्रकार के सम्बन्ध प्रथम पद की प्रथम इकाई के अनुसार होते हैं ।

८ मोटरकार आदि ।

द्विरुक्ति प्रधान समस्त संज्ञा पद होते हुए भी ध्वनि विकार उत्पन्न हुआ है । अथ में अतिशयता एव विस्तार के आवेग की गति का बोध होता है । अन्य सभी प्रकार के सबधा का विश्लेषण द्विरुक्ति प्रधान समस्त पदा के अनुरूप किया जा सकता है ।

९ हाडा-होडी, भमा भमी, रोल गदोल आदि ।

दाना पद सना वाची होते हुए भी अन्तिम पद निरधकता को प्राप्त कर लेता है अतः इसके सभी प्रकार के सम्बन्ध का विश्लेषण द्विरक्ति प्रधान समस्त पदा के अनुसार योजित किया जा सकता है ।

(ख) सज्ञा + कर्तृवाचक सज्ञा

रगरसियाँ गऊ घाती मनस मारणाँ आदि ।

उक्त समस्त सना पद भेद्य भदक सम्बन्ध वाचक हैं । रूप रचना की दृष्टि से इनका सम्बन्ध बोध दम प्रकार व्यक्त किया जा सकता है — शब्द १ + शब्द २ = शब्द १ २ । व्याकरणिक सम्बन्ध बोध कराने के सादभ म इस सूत्र का परिवर्तन शब्द १ + शब्द २ = शब्द ३ होगा ।

(ग) सज्ञा + कृदन्त

१ जगतारण, गरगारी रॉड गावणा वापखावणी

इस वग के सभी पद भेद्य भदक सम्बन्ध वाचक हैं । इनका व्युत्पन्न रूप कर्तृवाचक है । रूपात्मक दृष्टि से इनका सम्बन्ध शब्द १ + शब्द २ = शब्द १ से व्यक्त किया जा सकता है । व्याकरणिक सम्बन्ध बोध कराने समय इस सूत्र का रूप दूसरे प्रकार का होगा । वही कही पर तो यह द्वितीय पद प्रधान भी लक्षित होता है ।

२ हयलेवों देवभावना आदि ।

इस वग में समस्त सना पद कर्तृवाचक सना का रूप धारण कर सामान्य सना का रूप धारण करते हैं । सभी प्रकार के सम्बन्ध का विश्लेषण विनेप्य वाची समस्त पदा के अनुरूप व्यक्त किया जा सकता है ।

(घ) सज्ञा + विनेपण

घनस्माँभ

इस वग में सना पद विनेपण विनेप्य सम्बन्ध वाचक है किन्तु विनेप्य विनेपण सम्बन्ध बोध कराने के कारण पृथक् वग में रक्षे गये हैं ।

(ड) सना + निरर्थक शब्द

१ राग्नी-वाग्नी, पौंशी वांशी पोथी बोथी

य द्विराक्त प्रधान पद हैं जिसका द्वितीय पद रूप एक अथ दाना दृष्टिया
त निरर्थक है ।

२ घडा घडी

ध्वयात्मकता के कारण निरर्थकता की व्याप्ति हा गई है ।

(च) सजा + अव्यय

होठों-वार (बाहर) आदि ।

इस वग म भेद्य भेदक सवध बोधक समस्त मज्ञा पद की रचना हुई है ।

२ २ १ ५ २ प्रथम पद विभेपण जाने समस्त-सजा-पद

रूपात्मक ऋष्टि से जिन समस्त पदा का यहाँ विभेपण किया जा
रहा है उनका प्रथम पद विभेपण है तथा द्वितीय पद इनर व्याकरणिक रूप
निए हुए हैं । इनर व्याकरणिक रूपा के योग से समस्त पद का प्रयोग सजा रूप
म हुआ है । अत जो समस्त पद विभेपण का रूप धारण किय हुए हैं यहाँ
उनका प्रयोग सजाबाची पद मे हुआ है । इसलिए इह इम वग में स्थान
न्या है । इनका सवध निम्न प्रकार ने प्रस्तुत किया गया है -

विभेपण + सजा = सजा

एकोंनी, दोवॉनी, वउरपीयाँ, चाँवाराँ

उन समस्त पदो म प्रयुक्त ण्मा मे विभेपण विगप्य मप्रथ हैं किंतु
प सजा बने हुए हैं । केवल एक या दो उदाहरण दार हम स्पष्ट कर
सकत हैं ।

‘एकोंनी’

यहा एक विभेपण है और ‘कोंनी सजा ण्मु एकोंनी’ मुद्रा

विशेष के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द सज्ञा है । (आजकल इस शब्द का प्रयोग भी कम प्रचलित है क्योंकि यह मुद्रा प्रयोग में नहीं आती । अब प्रायः बोली में 'दसपाई' (दस नये पैसे) शब्द का प्रयोग प्रचलित है) 'बजरूपीयो' में बज (बहु) रूप (सूरत शकल) का वाचक है । इसमें एक पद विशेषण व दूसरा विशेष्य है पर 'बजरूपीयो' बीकानेरी में एक व्यक्ति विशेष होता है जो अनेक वेश व रूप धारण करता है तथा उसको पर मनोरंजन का साधन बनता है । यह शब्द चालाक का भी वाचक बन रहा है । इसी प्रकार अन्य पद भी विशेषण विशेष्य की परिधि में अपने समस्त रूप में सज्ञा ही बने हुए हैं ।

अध्याय/३

सर्वनाम-पद

३ १ सामान्य विवेचन

सर्वनाम उन विकारी शब्दों को कहते हैं जो पूर्वपर सम्बन्ध से किसी भी शब्द के बदले में आता है ।^१

जो सबके नाम बन जाते हैं उन्हें 'सर्वनाम' कहते हैं । मैं, तुम, यह, वह आदि शब्द 'सर्वनाम' हैं, ये किसी एक ही में सकेतित नहीं हैं ।^२

व्याकरण शास्त्र में नाम-स्वतंत्र रूपांशों का विभाजन किया गया है । नाम शब्दों की व्याप्ति मर्यादित करने एवं इतर स्थानापन्न रहने वाले स्वतंत्र रूपांशों को प्रतिनिधित्व के अनुसार पृथक् पृथक् वर्गों में स्थान दिया गया है । इसलिए जो भी शब्द स्वतंत्र रूपांशों के स्थानापन्न हैं वे सभी इसी वर्ग में अंतर्गत आ जाते हैं । पुनर्विभाजन का कारण भेदकता बोधक सीमा स्थानापन्नता है । इस प्रकार उन स्थानापन्न रूपांशों का प्रयोग भी होने लगा जो केवल नाम रूपों के स्थान पर पुनरुक्ति के द्वारा होने वाले दोषों और भाषा की गिथिलता व हीनता दूर करने में सक्षम थे । ये नाम स्वतंत्र रूपांशों के सवधित और उसी के स्थानापन्न होने के कारण सहज ही सर्वनाम की अभिधा पा गये ।

१— श्री कामता प्रसाद गुप्त हिन्दी व्याकरण, पृ० ७२

२— सिन्धोरीनाथ वाजपेयी शब्दानुशासन, पृ० १७३

४ प्रश्न वाचक	(कू ए)
५ अनिश्चय वाचक	(कोई)
६ आदर वाचक एव निज वाचक	(आप)
७ सब वाचक	(सब)

३- तृतीय वग सावनामिक समस्त पद (हूँ, मैं, ये)

३ २ १ प्रथम वर्ग पुरुष वाचक सवनाम

अप्य जाँडुनिक भारतीय आय भाषाओ के समान वीकानेरी मे भी पुरुष वाची सवनामा के केवल दो ही रूप उपलब्ध होते हैं --

१ उत्तम पुरुष

२ मध्यम पुरुष

अप्य पुरुष म निक्कटवर्ती एग दूरवर्ती निश्चय वाचक सवनाम ही प्रयुक्त हात हैं ।

३ २ १ १ उत्तम पुरुष

हूँ वीकानेरी मे उत्तम पुरुष सवनाम के एक वचन का अविकारी रूप है । बहुवचन म इसके दो रूप उपलब्ध होत हैं --

१ मैं श्रोतृ निरपेक्ष

२ आपों श्रोतृ सापेक्ष

वीकानेरी मे प्रयुक्त हात वाले उपलब्ध उत्तम पुरुष सवनामा की रूप तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है--

	एकवचन	बहुवचन	बहुवचन
		(श्रोतृ निरपेक्ष)	(श्रोतृ सापेक्ष)
वक्ता	हूँ मैं	मैं मैं	आपों
वचन	मने	मैंने	आपोंने
करण	मैंसे	मैंसे	आपोंसे

सम्प्रसाद	म्हारे	म्होरे	म्हारे
भाषणा	म्हें	म्हें	भाषें
सम्बन्ध	म्हारी, रा रा	म्हारे	म्हारा भाषारी भाषारे
			भाषारा
अपिचरण	म्हें	म्हें	भाषें

उत्तम पुरुष सवनाम के उपरुक्त रूपों पर दृष्टिगत करना से विज्ञित होता है कि सवनामों के विभक्ति प्रयोग की दृष्टि से दो रूप उत्पन्न होते हैं—

१- मूल रूप

२- विकारी रूप

मूलरूप से मेरा अभिप्राय उन सावनामिक रूपों से है जो वास्तविकता में किसी परमग को प्रदूषण नहीं करते हैं एवं विकारी रूप में तात्पर्य उन सावनामिक रूपों से है जो वाक्य में गन्ध परमग प्रदूषण करते हैं। इन आधार पर उत्तम पुरुष सवनामों के मूल एवं विकारी रूपों के प्रत्ययों को इन प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

	एकवचन	द्विवचन
(१) (क) मूल रूप	ह	म्हें
(ख) विकारी रूप	म्हें	म्हें
(२) (क) मू० आ० वि० प्र०	/ऊ/	/ए/
(ख) ति० आ० वि० प्र०	/एँ-ओं/	/ओं/

उपर्युक्त सार्वनामिक स्वतंत्र रूपों के विश्लेषण के परिणाम स्वरूप हमें विदित होगा कि इनके अंतर्गत /ऊ/ /मूँ/ /ए/ /आ/ आदि स्वरों का योग स्पष्ट लक्षित होता है। इन प्रत्ययों के विसर्जन के उपरान्त हमारे समक्ष उत्तम पुरुष सवनाम का केन्द्रक रूप /ह/ सामने आता है। अतः /ह/ ही केन्द्रक रूप है। उत्तम पुरुष वाचक सावनामिक स्वतंत्र रूपों में /ऊ/ एवं /ए/ मू आ वि प्र है एण /एँ/ एण /ओं/ ति आ वि प्र है। मूल एवं त्रिक आधार वि० प्रत्ययों में अनुनासिकता का आगमन /मू/ ध्वनि के कारण हुआ है। कभी कभी दीर्घीकरण या ह्रस्वकरण की प्रवृत्ति भी यहाँ पर काम करती

हुई दृष्टिगोचर हानी है। बीकानेरी में भी आदर सूचरता का योज कराने हेतु एक वचन में ही बहुवचन के रूपों का प्रयोग हाता है।

उपयुक्त सबनामा (श्रोतृ निरपेक्ष) क र्पा पर दृष्टिभात करें तो स्पष्ट होगा कि कर्ता नारक एक वचन 'हूँ' के अतिरिक्त षोडश सभी र्पा म 'म' विद्यमान है। अतः यदि यह कल्पना की जाय कि किसी समय बोली में कर्ता नारक एक वचन का रूप 'भूँ' रहा होगा (जसा कि मारवाड़ी की अथ बोलिया में है) और हूँ पर बल अधिक होने से 'म्' का लाप हो गया होगा तो उत्तम पुरुष सबनाम का केन्द्रक रूप / म् / भी माना जा सकता है।

उत्तम पुरुष (श्रोतृ सापेक्ष) रूप म भी उत्त प्रत्ययो का ही योग लक्षित होता है। अतः इन प्रत्यया का विसर्जन करने के उपरान्त हमारे समक्ष 'आप्' अवशिष्ट रहता है। यदि / प् / का श्रोतृ सापेक्ष बोधक मानलें तो इसका केन्द्रक रूप / आ / स्वीकार किया जा सकता है।

३ २ १ २ मध्यम पुरुष

मध्यम पुरुष में प्रयुक्त सावनामिक स्वतंत्र र्पाओं के उपलब्ध रूप इस प्रकार प्रस्तुत किय जा सकते हैं—

	एक वचन	बहुवचन
कर्ता	तू, धूँ तें धें	ये धोँ
कर्म	तने धने	धोँने
करण	धेंमूँ	धोँसूँ
सम्प्रदान	धारें	धोँरें
अपानान	धेंधूँ	धोँधूँ
सम्बन्ध	धारोँ धारी, धारा	धोँ रोँ, धोँरी, धोँरा
अधिकरण	तेँमें धेंमें	धोँमें

मध्यम पुरुष सबनाम के मूल एवं विकारी र्पी व प्रत्यया का विवरण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

	एकवचन	बहुवचन
(१) (क) मूल रूप	तू, धूँ	ये

(ग) विहारी का ने-भे- वा

(२) (क) मू० आ० वि० प्र० / ऊ / / ए /

(ग) नि० आ० वि० प्र० / ण० ओ / / भा० /

उपरोक्त सावनामिक गुण-य स्त्री-ग पर दृष्टिगत करने पर विहित होगा कि इन स्त्रियों में भी उसी गुण के स्त्रियों के अनुरूप ही प्रत्यय का वाग मिलता है। अतः इनके विगजन के उपरांत हमारे सामने कवन / ए / / ए / ही मात्र नामिक केन्द्र रूप उपलब्ध होगा है। / ष / / ए / का ही महाप्राण उचरित रूप है। अतः मध्यम गुण का सावनामिक केन्द्र रूप / न / ही माना जा सकता है। मू० एवं नियक आ० वि० प्र० भी उसी गुण के अनुरूप ही है अतः पुनर्गति नहीं की गई है। मध्यम गुण सबनामा के मू० एवं नियक आधार विधामक प्रत्ययों में भी अनुनासिकता प्रतिरक्षित है। इसका मुख्य कारण उत्तम पुरुष सबनामा का अनुकरण एवं सरलीकरण की प्रवृत्ति है।

३ २ २ द्वितीय वग-मकेनवाचक (निश्चय वाचक) सबनाम

हिन्दी में अथ पुरुष का काम निश्चय वाचक सबनामा से लिया जाता है।^१ बीकानेरी में भी अथ पुरुष का काम निश्चयवाचक सबनामा से लिया जाता है तथा निश्चय वाचक सबनामा के दो ही रूप उपलब्ध होते हैं।

(१) निक्कटवर्ती ओ

(२) दूरवर्ती वा

३ २ २ १ निकटवर्ती

बीकानेरी में निक्कटवर्ती सबनाम 'ओ' के उपलब्ध रूप इस प्रकार प्रस्तुत किये जा सकते हैं—

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	ओ (पु०) जा (स्त्री०) ईय	ओ ईयो
कर्म	ईन ईयेने	ईया न
करण	ईसू ईयंसू	ईया सू
सम्प्रदान	ईरे ईयेरे	ईया रे
अपादान	ईसू, ईयंसू	ईयोसू

सम्बन्ध	ईरो (पु०) ईरी, (स्त्री०), ईरा	ईयोरो, ईयोरी, (स्त्री०)
	ईरो, ईरी, ईय रा	ईया रा
अधिकरण	ईमें, ईमें	ईयामें

३ २ २ २ दूरवर्ती

बीकानरी म दूरवर्ती स नाम 'बा' के उपलब्ध रूप इस प्रकार प्रस्तुत किये जा सकते हैं —

	एक वचन	बहुवचन
कृता	बा (पु०) बा (स्त्री०)	बे, बाँ
कर्म	बेने	बाँने
करण	बँसू	बाँसू
सम्प्रदान	बँरे	बाँरे
धपानान	बँसू	बाँसू
सम्बन्ध	बँरो बँरी, बँरा	बाँरो बाँरी, बाँरा
अधिकरण	बँमें	बाँमें

उपयुक्त सार्थनामिक स्वतंत्र रूपांगों के अतगत संयुक्त वाक्यों का शोध कराने वाले प्रत्यया के विसर्जन के उपरान्त दूरवर्ती एवं निकटवर्ती सार्थनामों के मूल ए। विकारी रूपा ए। प्रत्यया को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है।

निकटवर्ती

	एक वचन	बहुवचन
१ मूल रूप	बा (पु०) बा (स्त्री०)	बे
२ विकारी रूप	ईवे	ईयोँ

दूरवर्ती

	एक वचन	बहुवचन
१ मूल रूप	बा (पु०) बा (स्त्री०)	बे
२ विकारी रूप	बँ	बाँ

१ मू० आ० वि० प्र० / ओं/ (पु०) /-आ/ (स्त्री०) /-ए/

२ ति० आ० वि० प्र० / ऐं/ /ओं

निकटवर्ती सावनामिक स्वतन्त्र रूपांशो के विकारी रूपों का अवेपण करने पर विदित होगा कि ये रूपांश / ईं/ के साथ लिंग-वचन प्रत्यय /य/ के संयोग से निष्पन्न हुए हैं। रूपों में / ईं/ से परे स्वर हान से बीच में /य/ ध्रुति का आगम हुआ है। /य/ के विसर्जन से विकारी रूपों में हमारे समक्ष /ईं/ अवशिष्ट रहता है। अतः /ईं/ को यदि हम त्रियक विधायक स्वीकार करें तो मूल रूप में निकटवर्ती सावनामिक रूपांशो का केन्द्रक रूप /अ/ ही अवशिष्ट रहता है। अतः /अ/ केन्द्रक रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

दूरवर्ती सावनामिक रूपांशो में /ओं/, /आ/ /ऐं/, /ए/ /ओं/ आदि स्वरों का संयोग मूल एवं विकारी रूपों के साथ हुआ है। इनके विसर्जन के उपरांत हमारे समक्ष केवल /व/ अवशिष्ट रहता है। अतः दूरवर्ती सावनामिक केन्द्रक रूप /व/ स्वीकार किया जा सकता है।

निकटवर्ती एवं दूरवर्ती दोनों ही सावनामिक स्वतन्त्र रूपांशो में /-ओं/ /-आ/ /-आ/, /ए/ मू० आ० वि० प्र० एव /ऐं/ एव /ओं/ ति० आ० वि० प्रत्ययों का प्रयोग सम रूप से हुआ है।

३ २ २ ३ द्वितीय वग सम्बन्ध वाचक सर्वनाम

धीकानेरी में सम्बन्ध वाचक सर्वनामों के उपलब्ध रूपों की तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है - -

	पुंल्लिंग		स्त्रीलिंग	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	जको जक	जका जके, जको	जकी	जकपो
कर्म	जके मे	जका ने	जकी ने	जकपो ने
करण	जकें मू	जको मू	जकी मू	जकपो मू
सम्प्रदान	जके रे	जको रे	जकी रे	जकपो रे
अपादान	जकें मू	जको मू	जकी मू	जकपो मू
सम्बन्ध	जकें रो	जको रो	जकी रो	जकपो रो
अधिकरण	जके मे	जका म	जकी म	जकपो मे

सम्बन्ध वाचक सर्वनाम के उपलब्ध रूपों के कारण प्रत्ययों को विमुक्त करने पर इसके मूल व विकारी रूपों एव प्रत्ययों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है -

	एकवचन	बहुवचन
(१) मूल रूप	जको (पु०) जकी (स्त्री०)	जवे (पु०) जवयो (स्त्री०)
(२) विकारी रूप	जके	जको (पु०) जवयो (स्त्री०)
(१) मू०आ०वि०प्र०	/-ओ/(पु०) /-आ/ (स्त्री०)	/ ए/ (पु०) / ओ/स्त्री०
(२) ति०आ०वि०प्र०	/ ऐ/	/ ओ/

सम्बन्ध वाचक सर्वनामों के उक्त रूपांतर पर श्रुतिपात करने से विदित होता है कि इनके अंतर्गत /-आ/, /ई/, /-ए/, /ए/, /ओ/, /-ओ/ आबद्ध अक्षरों का योग मूल व विकारी रूपों में हुआ है एव स्त्रीनिग बहुवचन में ओ से पूर्व /-य/ श्रुति का आगम हुआ है। इनके जिसजन के उपरोक्त सम्बन्ध बोधक सर्वनामिक केन्द्रक रूप /जक/ अवशिष्ट रहता है। /क/ को सम्बन्ध बोधक प्रत्यय को सज्ञा दी जा सकती है। अतः सम्बन्ध बोधक सर्वनाम का केन्द्रक रूप /ज/ माना जा सकता है। सम्बन्ध वाचक सर्वनाम में /-आ/ (पु०) /ई/ (स्त्री०) एव /ए/ /-आ/ (बहु०) मू आ वि प्रत्यय है एव /ऐ/, व /-ओ/ /-ओ/ ति आ वि प्रत्यय है।

सूचना -

डा० क०हेयालाल शर्मा ने सम्बन्ध वाचक सर्वनाम 'जको' में 'ज' को केन्द्रक रूप मानकर 'क' को स्वायक प्रत्यय माना है। इसका कारण बताते इन्होंने लिखा है कि राजस्थानी की अथ अधिकांश बोलियों में जो, जें, जी, आदि रूप ही उपलब्ध होते हैं केवल बीकानेरी में ही यह /क/ उपलब्ध होता है अतः /क/ स्वायक प्रत्यय ही माना जायगा।²

३ २ २ ४ नित्य सम्बन्ध वाचक सर्वनाम

बीकानेरी में नित्य सम्बन्ध वाचक सर्वनाम का स्वतंत्र रूप उपलब्ध

मही होता उससे रपाय पर दूरपत्तो निरुपय वापर सवनाम 'बा' का ही प्रयोग उपलभ्य होता है । यथा -

'जवो आया बाँ बाँ गया'

'जो आया पा वह गया

'जवो पढ़गी बाँ गुण पातो

'जो पढ़ेगा वह गुण पायगा

३ २. ० ५ द्वितीय वर्ग प्रत्ययाचक सवनाम

बीसवारी म प्रत्ययाचक सवनाम के रूप न 'कू ए' रूप उपलभ्य होता है । इनके अतिरिक्त बोलो म कई कया कयाँ कयू आदि रूप उपलभ्य होत हैं ।

यु ए रूप की तात्तिका दस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है—

'कू ए'

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	कू ए	कू ए
कर्म	के ने	के ने
करण	के मू	के मू
सम्प्रदान	के रे	के रे
अपादान	के मू	के मू
सम्बन्ध	के रो, के री (स्त्री०)	के रा, रो, री
अधिकरण	के मे	के मे

उपयुक्त प्रत्यय वाचक सवनाम के उपलभ्य रूपा के आधार पर मूल एवं विवारी रूपों व प्रत्ययों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है -

	एकवचन	बहुवचन
१ मूल रूप	कू ए	-
२ विवारी रूप	के ए	-

	एकवचन	बहुवचन
१ मू० आ० वि० प्र०	/ ऊँ ।	१- - - १
२ ति० आ० वि० प्र०	/ एँ, / ओँ /	-

उपयुक्त सावनामिक स्वतंत्र रूपांगों में ऊँ, एँ, ओँ आदि प्रत्ययों का योग हुआ है। इनके विसर्जन के उपरान्त हमारे समस्त 'कण्' अवशिष्ट रहता है। यदि 'ण्' को व्यक्ति बोधक मान कर इसका विसर्जन कर लिया जाय तो हमारे समस्त 'वि' केन्द्रक रूप में रह जायगा है। इस प्रकार क् को प्रश्नवाचक सावनामिक केन्द्रक रूप में स्वीकार किया जा सकता है। इसके अनिश्चित बोलों में क ई, कया, कयो क्यु, आदि रूप भी उपलब्ध होते हैं जो स्पष्टतः हीनो के प्रश्नवाचक सवनाम कया के ही विकृत व विकसित रूप हैं। 'क ई' रूप बोलों में वस्तु वाचक सवनाम क रूप में प्रयुक्त होता है।

प्रश्नवाचक सवनामा में /-ऊँ/ मूल आधार विधायक प्रत्यय एव /-एँ/ अपवा अँ ति० आ० वि० प्र० का प्रयोग हुआ है।

३ २ २ ६ द्वितीय वग अनिश्चय वाचक सर्वनाम

बीकानेरी में प्रयुक्त अनिश्चय वाचक सर्वनामा के उपलब्ध रूप इस प्रकार प्रस्तुत किये जा सकते हैं।

'कोई'

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	कोई	कोई
कर्म	कईने	कईने
करण	कईसू	कईसू
सम्प्रदान	कईरे	कईरे
अपादान	कईसू	कईसू
सम्बन्ध	कईरो, रा री	कईरो री, री
अधिकरण	कईमें	कईमें

इनके वारक बोधक प्रत्ययों के विसर्जन के उपरांत उपलब्ध मूल एवं विकारी रूपों व प्रत्ययों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है ।

	एकवचन	बहुवचन
(१) (क) मूल रूप	कोई	—
(ख) विकारी रूप	कई	—
(२) (क) मू०आ० वि० प्र० / -ओ/		—
(ख) ति० आ० वि० प्र० / -अ /		—

अनिश्चय वाचक सावनामिक स्वतंत्र रूपांशों का विश्लेषण करने के उपरांत हम /ओ/ की व्युत्पत्ति बोधक एक /अ/ को नियत विधायक के रूप में स्वीकार कर सकते हैं । इनके विसर्जन के उपरांत हमें /क्/ अनिश्चय वाचक सावनामिक केन्द्रक रूप उपलब्ध होता है । मू० एवं ति० आ० वि० प्र० के रूप में /-ओ/ एवं /-अ/ का याग क्रमशः दृष्टिगत होता हो।

अनिश्चय वाचक सवनामो पर दृष्टिपात करने पर विदित होगा कि इसके मूल रूप में हिन्दी के समान /कोई/ रूप का प्रयोग हुआ है पर विकारी रूप में हिन्दी के समान /किसी/ का प्रयोग नहीं हुआ है इसका मुख्य कारण यह है कि बोली में अनिश्चय वाचक सवनाम के विकारी रूपों के दो रूप उपलब्ध हैं— /कई/, /कोई/ पर अधिक प्रचलित 'कई' ही है । यदि /कोई/ रूप को ही विकारी रूप में स्वीकार किया जाय तो मूल एवं विकारी रूपों में भेदकता हेतु /०/ विभक्ति को कल्पना करनी होगी ।

३ २ २ ७ द्वितीय वग आदर वाचक एवं निज वाचक सर्वनाम

बीकानरी में आदर वाचक सवनाम आप के उपलब्ध रूप इस प्रकार प्रस्तुत किये जा सकते हैं—

‘ आप ’

	एक वचन	बहुवचन
वर्तनी	आप	आप

कम	आपने	आपने
करण	आपमू	आपमू
सम्प्रदान	आपरे	आपरे
असादान	आपमू	आपमू
सम्बन्ध	आपरो, री, रा	आपरो, री, रा
अधिकरण	आपमे	आपमे

उक्त सावनामिक स्वतंत्र रूपों पर दृष्टिपात करने से विदित होता है कि आदर वाचक सवनाम के मूल एव विकारी दोनों रूपों के एकवचन एव बहुवचन में 'आप' ही प्रयुक्त हुआ है। विकारी 'आपने' 'आपमू, आपरो' आदि रूपों में मूल रूप 'आप' का ही प्रयोग हुआ है, जिसमें 'ने', 'मू, रो' आदि परसग हैं। अतः इनके स्वरूप निर्धारण हेतु / ० / तिर्यक विभक्ति की कल्पना की जा सकती है। तत्परिणाम स्वरूप हमें ये विकारी एव मूल रूप उपलब्ध हुए हैं—

	एकवचन	बहुवचन
(१) (क)	मूल रूप आप	आप
(ख)	विकारी रूप आप	आप
(२)	मू० एव ति० आ० वि० प्र०	। - ० ।

इन रूपों के विश्लेषण के उपरान्त हमें /आ/ के द्वक रूप में उपलब्ध होता है एव / प / को आदर बोधक की सज्ञा दी जा सकती है। वीकानेरी म निजवाचक सवनाम के रूप में 'आप' का ही प्रयोग उपलब्ध होता है। परन्तु 'आप' का बोली में स्वतंत्र प्रयोग उपलब्ध नहीं होता है। आप का प्रयोग सदा सवनाम पुरुष वाचक सवनामो(उत्तम मध्यम व अन्य पुरुष)के साथही होता है। यथा हूँ आप मुँहें आप म्हाआप म्हेआप मन आपने, आदि। निजवाचकता का बोध उत्तम एव मध्यम पुरुष के रूपों के प्रयोग से ही हो जाता है। यथा मू धारो काम करले = तुम अपना काम करलो। हूँ म्हारो काम करलीस = मैं अपना काम कर लूँगा। निजवाचकता के बोध के लिये बोली में विदेशी शब्द 'खुद' का प्रयोग भी उपलब्ध होता है जिसके रूप आप के समान ही चलते हैं।

सर्ववाचक सर्वनाम 'सर्व' की रूप तात्त्विका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है -

'सर्व'

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	सर्व	सर्व
कर्म	सर्वने	सर्वने
करण	सर्वगू	सर्वमू
सम्प्रदान	सर्वरे	सर्वर
अपादान	सर्वसू	सर्वमू
सम्बन्ध	सर्वरो, रा, री,	सर्वरो, रा, री,
अधिकरण	सर्वम	सर्वम

उक्त सभी साधन निम्न स्वतन्त्र रूपांग सर्ववाचकता का अर्थ बोध कराते हैं। विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि 'सर्व' म/व/आवद्ध अंग का नियक विधायक प्रत्यय के रूप में योग विद्यमान है। नियक रूपा को दूर करने पर हमारे समक्ष केवल /स/, रूप अवशिष्ट रहता है। इस प्रकार सर्ववाचक स्वतन्त्र रूपांग का मूल केन्द्रक रूप /स/ स्वीकार किया जा सकता है। स विचक सर्वनामिक सर्वनाम के मूल एक विकारी रूपों में अभेदकता दृष्टिगत होती है अतः इनकी भेदकता सिद्धि हेतु /०/ विभक्ति का योग स्वीकार किया जा सकता है।

३ २ ३ तृतीय वग सर्वनामिक समस्त-पद

बीकानेरी में सर्वनामिक पद अपने समस्त पद के रूप में भी उपलब्ध होते हैं। यह सामासिकता सर्वनामिक पदों के ही समीपी सपटकों के रूप में विद्यमान हैं। उपलब्ध सर्वनामिक समस्त पद इस प्रकार हैं।

महे धे म्हाँ यो हूँ पू ईम-वेमे म्हारी धारी म्हारे धारँ, धोँरो म्हाँरो धोँसू म्हाँसू आँ-वाँ।

उक्त सवनाम सघटक पदों से समस्त पद सर्वनामों की मरचना हुई है। इनके प्रथम तथा द्वितीय सघटक भी सवनाम ही हैं। इस मृष्टि में सावनामिक के अतगत निविभक्तिक एवं सविभक्तिक रूपों का प्रयोग हुआ है। कहीं कहीं वे साथ भेदक भेदक सूचक आबद्ध रूपों का प्रयोग भी देखने को मिलता है, यथा

म्हारी-पारी, म्हारे-पारे आदि। कहीं-कहीं इतर कारक सम्बन्ध बोध देने वाले आबद्ध अर्थात् सहित पदों का योग समीपी सघटक के रूप में समस्त मृष्टि के अतर्गत हुआ है। यथा-ईने-बैने

उपयुक्त सामासिक पदों में समस्त-पद एवं समीपी सघटकों के रूपात्मक सम्बन्ध की दृष्टि में रखा जाय तो प्रतीत होगा कि समीपी सघटक भी सवनाम हैं व उपलब्ध मृष्टि भी हमारे समक्ष सवनाम समस्त पद ही है।

उपयुक्त सवनाम समीपी सघटक पदों का सम्बन्ध सयोजक अव्यय और / के द्वारा अभिव्यक्त किया गया है जो यहाँ पर लुप्त है।

यौगिक विधान

उपयुक्त सावनामिक समस्त पदों के यौगिक विधान पर दृष्टिपात करने से विदित होता है कि सावनामिक समस्त पदों का निर्माण सयोजक अव्यय के सौप के परिणाम स्वरूप हुआ है। इसलिये इनमें सखिलप्यता का ध्वंसारमक विकार हमें देखने को नहीं मिलता। जहाँ पर दोनों समीपी सघटकों की पृथक् पृथक् सत्ता दृष्टिगत होती है वहाँ पर प्रायः सभी समस्त-पद विखिलप्य हैं।

ध्याकरणात्मक रूप एवं प्रयोग की दृष्टि में भी ये पद सवनाम स्वतंत्र रूपों के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। ये पद अपना सावनामिक अर्थ छोड़कर सज्ञा का स्वरूप धारण करने में भी सक्षम हैं। इसलिये रूपात्मक दृष्टि से इन्हें इस प्रकार के प्रयोगों में अन्य पद सत्ता स्वतंत्र रूपों के अतगत स्वीकार किया जा सकता है। यद्यपि इन पदों का प्रयोग अपने मूल रूप में भी बीकानेरी में उपलब्ध होता है। बीकानेरी सावनामिक समस्त पदों की विशेषता है कि उनका ध्याकरणात्मक रूप निर्धारण प्रयोग एवं प्रकरण पर ही आश्रित है। इस हेतु समस्त पदों के अतः मध्युत्पादक / ०/ विभक्ति के प्रयोग द्वारा भेदक रखा खोबी जा सकती है तथा 'यु-

त्पादक प्रत्यय सावनामिक समस्त पद रूपांश संज्ञा स्वतंत्र रूपांग के क्षेत्र में लागू जा सकता है।

सावनामिक स्वतंत्र रूपांशों की द्विरक्ति का भी समस्त पद रूप में विग्रह महत्त्व है। बीजानेगी में उगना होने वाले द्विरक्ति के विभिन्न रूप निम्नलिखित हैं—

१—हूँहूँ, तूँतूँ, यूँयूँ, म्हँम्हँ, म्हँम्हँ

२— वाँवाँ आँआँ,

३— कई-कई कूँकूँ कोई-कोई जूँजूँ-जूँजूँ

४— तूँ-तूँ थूँ-थूँ हूँ-हूँ

१२— यह द्विरक्ति देवता बोधक है।

३— यह द्विरक्ति समतार्थक गणना में भेदकता का बोध कराती है।

४— इस वर्ग में द्विरक्ति दृढ़ निश्चय व आदेश का बोध कराती है।

उक्त सावनामिक स्वतंत्र रूपांगों के अतिरिक्त बोली में आगलौ, फलींणीं, ढीकडाँ आदि विविध रूप भी उपलब्ध होते हैं।

उपयुक्त सावनामिक स्वतंत्र रूपांगों के विश्लेषण के आधार पर हम निम्नलिखित निष्कर्ष प्रस्तुत कर सकते हैं—

१— सावनामिक कर्त्रक रूप निम्न लिखित हैं—

१— प्रथम वर्ग पुरुष वाचक सवनाम—

(१) उत्तम पुरुष / हँ / / म् /

(२) मध्यम पुरुष / तू /

२— द्वितीय वर्ग (१) सकेत वाचक सवनाम—

(१) निकटवर्ती / अ /

(२) दूरवर्ती / व /

(२) सम्बन्ध वाचक सवनाम / ज् /

(३) नित्यसम्बन्ध वाचक सवनाम —

(४) प्रश्न वाचक सवनाम / क् /

(५) अनिश्चय वाचक सवनाम / क् /

(६) आदर वाचक एवं निजवाचक सर्वनाम / अ /

(७) सबवाचक सर्वनाम / स /

१- ;। उपर्युक्त सभी सावनामिक स्वतंत्र रूपों के मूल एव विकारी रूपों के प्रत्ययों का निष्कर्ष रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

मूल एवं विकारी रूप मू० आ० वि० प्र० ति० आ० वि० प्र०

१- उत्तम पुरुष एकवचन बहुवचन एकवचन बहुवचन
हूँ मैं मैं /ऊँ/ /ए/ /एँ/ /आँ/

२- मध्यम पुरुष-

तू तू तूँ तूँ /ऊ/ /ए/ /एँ,ओँ/ /आँ/

३- निकट एक दूरवर्ती-

ओ आ ओँ ओँ, ऐँ, ईँ /आँ/ /आ/ /ए/ /एँ ओँ/ /आँ/

वा वा वे वें वों

४- सम्बन्ध वाचक-

जहाँ, जहाँ, जहाँ /-आँ/(पु०), /ए/ /आ/ /एँ-ओँ, / /-आँ/

जहाँ, जहाँ जहाँ /ईँ/(स्त्री०), /ओँ/(स्त्री०)

५- प्रश्न वाचक-

कूण के एण /ऊँ/ /ऊँ/ /एँ ओँ/ /एँ ओँ/

६- अनिश्चय वाचक-

कोई कई /आँ/ /ओँ/ /-अ/ /अ/

७- आत्मीय निजवाचक / ० / / ० / / ० / / ० /

आप

८- सर्व वाचक / ० / / ० / / ० / / ० /

सब

१- इनके लिए-वचन एवं वारक धादि का निवारण जिन रूपों के ये स्थानापन्न हैं उन्हीं के अनुरूप किया जा सकता है।

२- समस्त पद के रूप में सर्वनामों का प्रयोग सनाचत एव द्विरक्ति मूलक प्रयोग सावनामिक रूप में हुआ है।

विशेषण-पद

४ १ सामान्य विवेचन

जिस विकारी शब्द से सज्ञा की व्याप्ति मर्यादित होती है, उसे विशेषण कहते हैं।^१

विशेषण पद वाक्यों में अपने विनाप्य की विशेषता को प्रकट करते हैं। वाक्यान्तगत विशेष्य पद सज्ञा भी हो सकता है और सवनाम भी। दूसरे शब्दों में विशेषण पदों का वाक्यगत कार्य सज्ञा अथवा सर्वनाम पदों की विशेषता प्रकट करना है। अर्थ की दृष्टि से विशेषण शब्दावली गुण परिमाण, सर्वत मंग्यादि भेद विभेदों में वर्गीकृत की जाती है किन्तु यदि पद रचनात्मक दृष्टि से विचार किया जाये तो स्पष्ट होगा कि लिंग-वचन और कारक सम्बन्धों को प्रकट करने वाले विभक्ति प्रत्ययों की संयोजना में ये सज्ञा तथा सवनाम शब्दों से भिन्न नहीं। इसलिए सज्ञा, सवनाम और विशेषण शब्दावली को नाम के अन्तगत परिगणित किया जाता है।

‘यल्लिंगं यद्वचनं या विभक्ति विशेष्यस्य, तल्लिंग, तद्वचनं

सैव विभक्ति विशेषणस्यापि” इस सूत्र से प्राचीन भारतीय भाषाशास्त्र में विशेष्य के लिंग वचन एवं कारक के अनुरूप ही विशेषण में परि

बर्नत होना है । मध्यकालीन भारतीय आय भाषाओं पालि, प्राकृत, अपभ्रंश आदि में भी यही प्रवृत्ति दृष्टिगत होती है । परन्तु अद्य आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं (हिन्दी आदि) की भाँति बीकानेरी में यह प्रवृत्ति नहीं है । बीकानेरी में कुछ विशेषण तो अपने विशेष्य के लिंग वचन एवं कारक के अनुरूप परिवर्तित होते हैं और कुछ विशेषण अपने विशेष्य के लिंग वचन एवं कारक से सवथा अप्रभावित रहते हैं ।

इस आधार पर बीकानेरी के समस्त विशेषण पदों को दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है -

- १ विशेष्य के लिंग वचन एवं कारक के अनुरूप परिवर्तित विशेषण पद
- २ विशेष्य के लिंग वचन एवं कारक से अप्रभावित विशेषण पद

४ १ १ विशेष्य के लिंग-वचन एवं कारक के अनुरूप परिवर्तित विशेषण-पद

इस वर्ग के अंतर्गत बीकानेरी के प्रायः सभी ओँकारात् विशेषणों की गणना की जा सकती है क्योंकि ओँकारात् विशेषण शब्दावली अपने विशेष्य के लिंग वचन कारक के अनुरूप विभक्ति प्रत्यय को ग्रहण करती है । यथा -

	विशेषण	विशेष्य	लिंग
१	कालोँ	घोटोँ	पुल्लिंग
२	कानी	घोडी	स्त्रीलिंग
३	घोडोँ	राबड़ियोँ	पुल्लिंग
४	घोडी	रबडी	स्त्रीलिंग

१- पूर्णक गणना वाली ओँकारात् विशेषण (दो, सोँ आदि) इसके अपवाद हैं । ये अपने विशेष्य के लिंग वचन एवं कारक से प्रभावित नहीं होते हैं । यथा दो आदमी, दो लुगायों आदि ।

परिवर्तन प्रक्रिया

आकारान्त पुल्लिङ्ग विशेषणों के अक्षर 'आ' का लोप करके तथा 'ई' प्रत्यय समाहार स्त्रीलिङ्ग विशेषणों के रूप बनाये जाते हैं। यथा -

	पुल्लिङ्ग रूप	प्रत्ययहीन रूप	स्त्रीलिङ्ग प्रत्यय	स्त्रीलिङ्ग रूप
१	कालाँ	काल	ई	काली
२	घोडों	घोड	"	घोड़ी
३	दूगरोँ	दूगर	"	दूसरी
४	चौंयाँ	चौत्	,	चौली

[सूचना - किवारी बहुवचन अर्थात् अि सहित रूप काला' का प्रयोग बोली में तभी मिलना है जबकि विशेषण का समावत् प्रयोग होता है। यथा-

कालाँ मोँय मू एक उठाय लेँ

काते (घाडे अथवा अन्य वस्तुओं) में से एक उठा लो'

४ १ २ विशेष्य के लिङ्ग-वचन एवं कारक से अप्रभावित विशेषण-पद

इस वर्ग के जन्मगत बीजानरी के आकारान्त ईकारान्त, ऊकारान्त एवं व्यञ्जनांत विशेषणों की गणना की जा सकती है। यथा -

(क) आकारान्त विशेषण

१	बुद्धियाँ घोडों	पुल्लिङ्ग एकवचन
२	बुद्धियाँ घोड़ी	स्त्रीलिङ्ग एकवचन
३	बुद्धियाँ घोड़ा	पुल्लिङ्ग बहुवचन
४	बुद्धियाँ घोडयाँ	स्त्रीलिङ्ग बहुवचन

(ख) ईकारान्त विशेषण

१	मूजी (कजूस) आत्मी	पुल्लिङ्ग एकवचन
---	-------------------	-----------------

१ मू जी लुगाई	स्त्रीलिंग एकवचन
२ मू जी आम्ह्यो	पुंलिंग बहुवचन
४ मू जी लुगायो	स्त्रीलिंग बहुवचन

(ग) ऊकारान्त विशेषण

१ उडाऊ (सर्बोना) धारा	पुंलिंग एकवचन
२ उडाऊ छोरी	स्त्रीलिंग एकवचन
३ उडाऊ छोरा	पुंलिंग बहुवचन
४ उडाऊ धारयो	स्त्रीलिंग बहुवचन

(घ) व्यजनान्त विशेषण

१ सुपातर वेणो	पुंलिंग एकवचन
२ सुपातर वेनी	स्त्रीलिंग एकवचन
३ सुपातर वग	पुंलिंग बहुवचन
४ सुपातर वेटयो	स्त्रीलिंग बहुवचन

४ २ सावनामिक विशेषण

बीकानेरी म पुरुष वाचक एक निज वाचक सवनामो को छोड़ कर शेष सवनामो का व्यवहार विशेषण रूप में भी होता है। परिणामत हम उन्हें सावनामिक विशेषण की मना प्रदान कर सकते हैं। बीकानेरी में सावनामिक विशेषणों के उपलब्ध रूप निम्नलिखित हैं -

- १ निश्चयवाची सावनामिक विशेषण आँ।
यथा - ओ छोरी
- २ अनिश्चयवाची सावनामिक विशेषण कोई।
यथा - कोई आरमो कोई बात।
- ३ प्रश्नवाची सार्धनामिक विशेषण -कू एण एव कई।
यथा - कू एण धाराँ, कई बात
- ४ सम्बन्धवाची सावनामिक विशेषण - जकोँ।

५— समूहवाची सार्थनामिक विशेषण—अत्ता जता ।

यथा— अत्ता छोरा, जता आदमी ।

६— परिमाणवाची सार्थनामिक विशेषण—अत्ताँक, उताँक

यथा— अताँक घास, उताँक आटोँ कताँक दूध ।

७— गुणवाची सार्थनामिक विशेषण—अस्ताँ, बस्ताँ जम्माँ ।

यथा— अस्ताँ घर (ऐसा घर), बस्ताँ घोडाँ (वैसा घोडा) जस्ताँ आदमी (जैसा आदमी) ।

आपाँरो, परायोँ आगलाँ सारलाँ आदि शब्द भी सार्थनामिक विशेषण ही हैं, क्योंकि इनका प्रयोग भी विशेषणवत् हाता है ।

यथा— आगोँरोँ छोरोँ (अपना लडका), परायोँ टावर(दूसरे का बच्चा), आगलोँ घोडोँ (जागे वाला घोडा) सारलोँ छोरोँ (पीछे वाला लडका) ।

३ ४ तुलनात्मक विशेषण

अब आधुनिक भारतीय भाषा भाषाओं की भाँति वीकानेरी में भी तरार्थी एवं तमार्थी विशेषण उपलब्ध नहीं होते हैं । वीकानेरी में तरार्थी विशेषण का भाव 'कम् ज्यादा,' घणोँ 'वैसी' आदि शब्दों को विशेषण के पूर्व रखकर एवं करणकारक के 'सू' परसग का प्रयोग करके प्रकट किया जाता है । यथा—

१— ओँ छोरोँ बेँ छारेँ सू कम पढियोडोँ है ।

२— आ छोरोँ बेँ छोरोँ सू ज्यादा चोखो है ।

३— ईयेँ दोनोँ सू ओँ घणोँ पूटरोँ है ।

४— रोँम मदन सू 'वैसी दूध पीवेँ ।

कभी कभी तुलना के लिये 'उगणीस 'इक्कीस' एवं बीसा इक्कीसी आदि शब्दों का प्रयोग भी उपलब्ध होता है । यथा—

१— रोँम मोवन सू इक्कीस पडेँ ।

२— दोएँ वैलवोनाँ रोँ बीसा इक्कीसी है ।

तमार्थी विशेषण का भाव वीकानेरी में सगम सगलीँ म सगलाँ सू आदि शब्दों के प्रयोग द्वारा प्रकट किया जाता है । यथा—

१— आँ छोरोँ सबसू चोखोँ है ।

- २- आँ घोणे सबसू वडिया है।
 ३- घॉलकी गाय सगलामें चोखी है।

४ ४ सख्यावाचक विशेषण

दीकानेरी सख्यावाचक विशेषणों को मुख्य रूप से हम तीन वर्गों में विभक्त कर सकते हैं—

- १- निश्चित सख्यावाची विशेषण ।
 २- अनिश्चित सख्यावाची विशेषण ।
 ३- परिमाणवाची विशेषण ।

४ ४ १ निश्चित सख्यावाची विशेषण

इस वर्ग के विशेषणों को भी हम अध्ययन की सुविधा के लिए निम्न लिखित पाँच उपवर्गों के अंतर्गत विभाजित कर सकते हैं ।

- क गणनात्मक विशेषण
 ख क्रमवाचक विशेषण
 ग जावृत्तिवाचक विशेषण
 घ प्रत्येक बोधक विशेषण
 च समुदाय बोधक विशेषण

उक्त सभी वर्गों एवं उपवर्गों का नीचे विस्तार से विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है ।

४ ४ १ १ गणनात्मक विशेषण

गणनात्मक विशेषणों को भी दो अन्तर्गत किये जा सकते हैं—

- अ पूर्णांक बोधक
 आ अपूर्णांक बोधक

४ ४ १ १ १ पूर्णांक बोधक

दीकानेरी में पूर्णांक बोधक विशेषण निम्न लिखित हैं—

धीकानेरी

एक
 दो
 तीन
 चार
 पाँच
 छी
 सात
 आठ
 नौ
 दस
 इग्यारे
 बरे
 तेरे
 चवदे
 पनरे
 सोल
 सतरे
 अठारे
 उगणीस
 बीस
 इक्कीस
 बाइस
 तेईस
 चाईस
 पञ्चीस
 छ्वाईस
 सत्ताईस

हिन्दी

एक
 दो
 तीन
 चार
 पाच
 छ
 सात
 आठ
 नौ
 दस
 ग्यारह
 बारह
 तेरह
 चौदह
 पंद्रह
 सोलह
 सत्रह
 अठारह
 उन्नीस
 बीस
 इक्कीस
 बाईस
 तेईस
 चौबीस
 पञ्चीस
 छद्बीस
 सत्ताईस

बीकानेरी

अठ्ठाईस
 गुणतीस
 तीस
 इक्कीस
 बत्तीस
 तेतीस
 चाँतीस
 पैंतीस
 छत्तीस
 सेँतीस
 अडतीस
 गुणतालीस ७ गुतालीस
 चालीस
 इक्तालीस
 बयालीस
 तयालीस
 चम्मालीस
 पेंतालीस
 छयालीस
 सचास
 अडचास
 गुणचास
 पच्चास
 इक्काँवन
 बावन
 तेपन
 चाँपन

हिंदी

अठ्ठाईस
 उतीस
 तीस
 इक्कीस
 बत्तीस
 तेंतीस
 चौतीस
 पतीस
 छत्तीस
 संतीस
 अडतीस
 उतालीस
 चालीस
 इक्तालीस
 ब्यालीस
 तियालीस
 चवालीस
 पतालीस
 छियालीस
 सतालीस
 अडतालीस
 उचास
 पचास
 इक्कावन
 बावन
 तिरेपन
 चौपन

वीवागेरी	हिनी
पचपन	पचपन
छप्पन	छप्पन
सत्तावन	सत्तावन
अठोवन	अठठावन
गुणसठ	उमठ
साठ	साठ
इक्कसठ	इक्कसठ
बासठ	बासठ
तेसठ	निरसठ
चोसठ	चोमठ
पेंसठ	पसठ
छयासठ	छियासठ
सडसठ	सडसठ
अडसठ	अडसठ
गुणतर	उनहतर
सुत्तर	सत्तर
इकोत्तर	इक्कहत्तर
बवोत्तर	बहत्तर
तेवत्तर	तिहत्तर
चोवत्तर	चोहत्तर
पचत्तर	पचहत्तर
छीयत्तर	छिहत्तर
सत्तत्तर	सत्तत्तर
अठत्तर	अठहत्तर
गुणियासी	उनासी

बीकोनेरी	हिन्नी
थरसी	अम्सी
इक्यासी	इक्यासी
बयानी	बयासी
तयासी	तिरानी
चौरासी	चीरासी
पचासी	पचासी
छयासी	छियासी
सत्तासी	सत्तासी
अठ्यासी	अठासी
नयासी	नवासी
नु०ब	नव्व
इकोणम	इक्यानवे
वोणम	वानवे
तेणम	तिरानवे
चोणमे	चोरानवे
पचोणम	पचानवे
छामें	छियानवे
सताणम	सतानवे
अठाणम	अठानव
नयोणम	नियानवे
सौ	सौ

४ ४ १ १ २ अपूर्णाक बोधक

अपूर्ण सख्यावाचक विशेषणों से पूरा सख्या के किसी भाग का बोध होता है ।^१ वाकानरी में अनेक अपूर्ण बोधक सख्याया का व्यवहार किया

१— डा० धीरेन्द्र वर्मा हिन्दी भाषा का इतिहास पृ० २७०

जाता है, जो पाव, आपा, पूणों आदि से या इनके योग से निमित्त होते हैं । वाक्य रचना में ऐसी संख्याओं के साथ विनाप्य आता है

बीकानेरी में निम्नलिखित अपूर्ण बोधक विनियोग उपलब्ध होते हैं ।

पाव	(पाव)
आपो	(अप)
पूणों या पूणा	(पौन)
सवा	(सवा)
ढेँढे मा ढेँढे	(ढेँढे)
ढाई मा अढाई	(ढाई)

बीकानेरी में साढी साढा आदि शब्दों से भी अपूर्ण सख्यावाची शब्दों का निर्माण होता है । यथा— साढी पोंच ओना, साढा चालीस रपिया, पूणा चम्मालीस रपिया इत्यादि ।

४ ४ १ २ क्रम वाचक विशेषण

बीकानेरी में क्रम वाचक संख्याओं का निर्माण प्रथम चार अकों के उपरान्त समान रूप से होता है यद्यपि छट्ठा रूप में असमानता है । संख्याओं के पीछे अविकारी पुल्लिङ्ग एकवचन में वों प्रत्यय जुड़ता है दोष पुल्लिङ्ग विकारी रूपा में वें प्रत्यय प्रयुक्त होता है । स्त्रीलिङ्ग के रूपों में -वी प्रत्यय प्रयुक्त होता है । बीकानेरी में कतिपय संख्याओं के क्रमवाचक विनियोग निम्नलिखित हैं—

पेँलो पेँलडों

दूजों दूसरों

तीजों तीसरों

चोंचों

पोंचवों

पाच + व + ओं = पाँचवों

छट्टों

सातवों

सान् + व + ओं = सातवों

आठवों

नध्वो

दसवो

४ ४ १ ३ आवृत्तिवाचक विशेषण

पूर्णांक बोधक विशेषणों के आगे 'गुणों' शब्द लगाने से आवृत्ति वाचक विशेषणों का निर्माण होता है। बीजानेरी में गुणात्मक सख्याओं में 'दुगना' के भाव को 'दूणों' शब्द द्वारा भी व्यक्त किया जाता है। बोध गुणात्मक सख्याओं में त, चो, छौ आदि पूरे सख्यावाची शब्दों का प्रयोग किया जाता है। यथा—

दूणों

दो ८ दु + -गुणों = दुगुणों ८ दुगणों

तीन ८ त + -गुणों = तगुणों ८ तगणों

चार ८ चो + -गुणों = चोगुणों ८ चोगणों

बीस + -गुणों = बीसगुणों

४ ४ १ ४ प्रत्येक बोधक विशेषण

प्रत्येक बोधक विशेषण के द्वारा कई वस्तुओं में से प्रत्येक का बोध होता है। यथा—

'हरेक चीज न सोच समझर काँम में लेवणी चइजे'

बीजानेरी में गुणात्मक विशेषणों की द्विरुक्ति से भी यही अर्थ व्यक्त होता है। यथा—

'दो-दो रोट यो मगतो न वा ट दो'

(प्रत्येक भीसमग को दो-दो रोटो वाट दो) ।

'पाँच-पाँच रुपिया मजूरी देसो'

(प्रत्येक को पाँच पाँच रुपये मजूरी दे मे)

अपूर्णांक बोधक विशेषणों की द्विरुक्ति से भी यही प्रयोजन सिद्ध होता

है—

ठेँठ ठेँठ रुपियाँ दे दो

ढाई ढाई ओना 'बेंच दो'

४ ४ १ ५ समुदाय बोधक विशेषण

बीरानेरी मे कुछ समुदाय बोधक विशेषण निम्नलिखित हैं-

१- जाड़ा	=	दो के लिये
२- चौबड़ी	=	चार के लिये
३- छक्की	=	छ के लिये
४- पचा	=	पाच के लिये

इसके अतिरिक्त बीरानेरी मे पूर्णक बोधक विशेषणों के आगे निश्चित भाव प्रकट करने के लिए ऊ अथवा आ लगाकर समुदाय बोधक विशेषणों का निर्माण होता है। यथा-

(ऊ)

पूर्णक बोधक विशेषण	प्रत्यय	समुदाय बोधक विशेषण
१- तीन	-ऊ	तीनू
२- चार	-ऊ	चारू
३- सात	-ऊ	सातू

(-आ)

पूर्णक बोधक विशेषण	प्रत्यय	समुदाय बोधक विशेषण
१- तीन	-आ	तानी
२- पाच	-आ	पाचो
३- आठ	-आ	आठा

४ ४ २ अनिश्चित सख्यावाचक विशेषण

बीरानेरी मे सख्यावाचक शब्दों के आगे 'एक' जोड़कर अनिश्चित सख्यावाची विशेषण का निर्माण किया जाता है। यथा-

१- दो + एक	=	दोएक
२- चार + एक	=	चारक
— सात + एक	=	सातेक
४- दस + एक	=	दसक

[सूचना- बीकानेरी में स्वतंत्र रूप से अनिश्चित सख्या वाचक विशेषण उपलब्ध नहीं होता है ।]

इसके अतिरिक्त बीकानेरी में द्वा निवृत्तवर्ती सदृशाओं के योग से एक साथ ही दो दूरस्थ सख्याओं के योग से भी अनिश्चित सख्या वाचक विशेषण के भाव को प्रकट किया जाता है । यथा-

- १- पाँच + छौ = पाच छौ
 २- सात + आठ = सात आठ
 ३- बार + तेरे = बार-तेरे
 ४- आठ + दस = आठ दस
 ५- तीस + चालीस = तीस चालीस
 ६- सौ + दोस्रो = सौ-दोस्रो

४ ४-३ परिमाण वाचक विशेषण

बीकानेरी में निम्नलिखित परिमाण वाचक विशेषण उपलब्ध होते हैं —

१ पूरा	(पूरा)	२- अधूरा	(अधूरा)
३ थोड़े	(थोड़ा)	४ घणा	(बहुत)
५ बोट	(बहुत)	६ घणा सारो	(अल्पधिक)
७ सगला	(सारा)	= कमती	(कम)
८ बेसी	(ज्यादा)	१०- अतो	(इतना)
११ उतो	(उतना)	१२ कतो	(कितना)
१३ जतो	(जितना)	१४- अत्ता सारो	(इतना सारा)
१५ घणसोक	(जरासा)	१६ ज्यादा	(अधिक)

४ ५ क्रियामूलक विशेषण

रूपा के 'ओडाँ' प्रत्यय के योग से भी क्रियामूलक विशेषणों की रचना होती है। यदि धातु स्वरान्त हो तो -तोँ एव णोँ प्रत्ययों के पूर्व 'व' श्रुति का आगम हो जाता है। ओडाँ प्रत्यय के पूर्व स्वरान्त धातु में 'य' श्रुति का आगम हो जाता है एव व्यजनान्त धातुओं में तोँ एव-णो प्रत्ययों के पूर्व श्रुति का आगम नहीं होता परंतु -ओडाँ प्रत्यय के पूर्व -इय' का आगम हो जाता है। यथा-

स्वरान्त धातु एव '-तोँ' प्रत्यय

खा + व + -तोँ = खावता (क्रियामूलक विशेषण)

खावताँ	आदमी	पुँलिंग	एकवचन
खावता	आदमी	पुँलिंग	बहुवचन
खावती	सुगाई	स्त्रीलिंग	एकवचन
खावती	सुगायाँ	स्त्रीलिंग	बहुवचन

व्यजनान्त धातु एव '-तोँ' प्रत्यय

पढ़ + -तोँ = पढताँ

पढताँ	छोराँ	पुँलिंग	एकवचन
पढता	छोरा	पुँलिंग	बहुवचन
पढती	छोरी	स्त्रीलिंग	एकवचन
पढती	छोरयाँ	स्त्रीलिंग	बहुवचन

स्वरान्त धातु एव '-णोँ' प्रत्यय

रो + व + -णोँ = रोवणोँ

रोवणोँ	छोराँ	पुँलिंग	एकवचन
रोवणा	छोरा	पुँलिंग	बहुवचन
रोवणी	छोरी	स्त्रीलिंग	एकवचन
रोवणी	छोरयाँ	स्त्रीलिंग	बहुवचन

व्यजनान्त धातु एव '-आडोँ' प्रत्यय

खायोडो केला	पुल्लिग एकवचन
खायोडा केला	पुल्लिग बहुवचन
खायोडी अनार	स्त्रीलिग एकवचन
खायोडी अनारयो	स्त्रीलिग बहुवचन

व्यजनान्त धातु एव 'ओडो' प्रत्यय

मर् + इय + ओणे = मरियोडो

मरियोडो ओं-दरो	पुल्लिग एकवचन
मरियोडा ओं-दरा	पुल्लिग बहुवचन
मरियोडी वा-दरी	स्त्रीलिग एकवचन
मरियोयी वा-दरयो	स्त्रीलिग बहुवचन

[सूचना-

- १— उरयुक्त प्रत्ययों -नाँ-णों, -ओडो में मूलप्रत्यय त, ए, -ओड ही है जिनमें ओं, आ ई प्रादि लगिक बाची प्रत्यया का योग हुआ है ।
- २— क्रियामूलक विशेषण अपने विशेष्य के लिग-वचन एव कारक के अनुरूप परिवर्तित होते हैं । अतः क्रियामूलक विशेषणों को वग १ 'अपने विशेष्य के लिग-वचन कारक के अनुरूप परिवर्तित विशेषण' के अन्तगत स्थान दिया जा सकता है ।]

नामपदों के निर्माणकारी प्रत्यय

५ १ सामान्य विवेचन

संस्कृत सज्ञा प्रायः तीन अक्षर मिलकर बनती है - धातु प्रत्यय तथा कारक चिह्न।^१ धातु और प्रत्यय से मिलकर मूल शब्द बनता है और फिर उसमें आवश्यकतानुसार कारक चिह्न लगाये जाते हैं।^२ आधुनिक भारतीय भाषाशास्त्रियों में संस्कृत कारक चिह्न प्रायः लुप्त हो गये हैं। आधुनिक भाषाशास्त्रियों में कारक रचना का सिद्धांत ही भिन्न हो गया है। गत अध्यायों में सज्ञा के मूल एवं विकारी रूपों व कारक चिह्नों पर विस्तार से विचार किया गया है। इस अध्याय में बीकानरी में नामपदों के निर्माणकारी प्रत्ययों पर विचार किया गया है।

शब्द के जिस अक्षर में स्वतंत्र अस्तित्व शोचक कोई अर्थ अभिन्न नहीं होता और वाक्य में स्वतंत्रता पूर्वक प्रयुक्त होने की क्षमता जिसमें नहीं होती तथा जो प्रकृति-मूल प्रकृति अथवा युत्पन्न प्रकृति अथवा पद प्रकृति-के आश्रय से

१— बोम्स कपरेटिव ग्रामर आव दी माडन एरियन लंग्वेज आव इण्डिया,
भाग २ पृष्ठ १

२— श्रीरेड वर्मा हिन्दी भाषा का इतिहास, पृ० २२२

एक वाक्य गठन में कोई अंतर उल्लिखित नहीं होगा यथा - 'लडका मर गया' ।

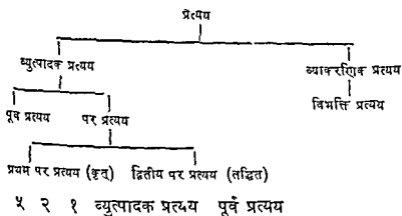
(४) प्रत्ययों में 'प' एक अभिनव गण मृष्टि करने की शक्त होती है पर निपातो एवं परसगों के द्वारा अभिनव गण मृष्टि नहीं होते ।

(५) मसृष्ट जादि प्राचीन आय भाषाभाषा में प्रत्ययों को मुख्य रूप से चार वर्गों में विभाजित किया गया है - गुप्, तिङ्, शृत् एवं तद्धित । गुप् एवं तिङ् व्याकरणिक कोटि के प्रत्यय हैं एवं शृत् तथा तद्धित व्युत्पादन प्रत्यय हैं । निपात एवं परसग इनमें से किसी भी श्रेणी में नहीं आ सकते ।

इस प्रकार परसगों एवं निपाता को प्रत्यय की सीमा में स्वीकार करना अवैधानिक है । वस्तुतः प्रत्यय वे आवद्ध अक्षर हैं जो प्रकृति (घातु प्रातिपदिक) के पूर्व अथवा पर में सलग्न होकर अभिनव गण मृष्टि करते हैं एवं जिनका प्रयोग वाक्यात्मगत स्वतंत्र रूप से नहीं होता । इस आधार पर हम प्रत्ययों को निम्न वर्गों में वर्गीकृत कर सकते हैं (१) व्युत्पादन प्रत्यय- वे प्रत्यय जो किसी घातु अथवा प्रातिपदिक के पूर्व अथवा पर में सलग्न होकर अभिनव 'पद' की मृष्टि करते हैं पुनः प्रत्यय कहलाते हैं । पुनः प्रत्यय के दो भेद होते हैं - (१) पूर्व प्रत्यय (२) पर प्रत्यय । पूर्व प्रत्ययों का प्रयोग घातु अथवा प्रातिपदिक के पूर्व होता है । पर प्रत्यय के पुनः दो उपभेद किये जा सकते हैं - (१) प्रथम पर प्रत्यय (कृत्) (२) द्वितीय पर प्रत्यय (तद्धित) । जो प्रत्यय घातुओं में जुड़ते हैं वे प्रथम पर प्रत्यय (कृत्) कहलाते हैं एवं जो प्रत्यय सना विनोदण आदि में जुड़कर पुनः अभिनव सना विनोदण आदि व्युत्पन्न करते हैं द्वितीय पर प्रत्यय (तद्धित) कहलाते हैं ।

(२) व्याकरणिक प्रत्यय- इसके अन्तर्गत विभक्ति प्रत्ययों की गणना की जा सकती है । वे प्रत्यय जो घातु अथवा प्रातिपदिक में जुड़ कर पद रचना करते हैं एवं वाक्यात्मगत लिंग, वचन कारक, काल, वाच्य रीति आदि का बोध कराने हैं विभक्ति प्रत्यय कहलाते हैं यथा- "लडके ने पुस्तक पढ़ी वाक्य में /लडके/ तथा /पढ़ी/ क्रमशः सज्ञा तथा क्रिया पद हैं तथा ये पद /लडका/ प्रातिपदिक एवं /पढ़/ घातु से सिद्ध हुए हैं । /लडका/ प्रातिपदिक में लगने वाली

/ए/ विभक्ति त्रियक कारक पुल्लिङ्ग एक वचन की द्योतक है । /पठ/ घातु के पश्चात् लगने वाली /ई/ विभक्ति अय पुरुष, एक वचन, स्त्रीलिङ्ग, भूतकाल आदि की द्योतक है । इस प्रकार विभक्ति प्रत्ययों के योग सज्ञा, सवनाम, विशेषण, क्रिया विशेषण आदि पद सिद्ध होते हैं । उपयुक्त विवेचन के आधार पर वीकानेरी नामपदों के निर्माणकारी प्रत्ययों का वर्गीकरण एवं प्रत्यय विधान इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है —



वीकानेरी में पूर्व प्रत्यय का प्रयोग सज्ञा विशेषण, क्रिया विशेषण एवं घातुओं के पूर्व होता है एवं इनके योग से प्रवृत्त्यय में अभिनवता आ जाती है । पूर्व प्रत्ययों का प्रयोग सवनामों के पूर्ण उपलब्ध नहीं होता । वीकानेरी में उपलब्ध पूर्व प्रत्यय निम्नलिखित हैं—

/अ/ /अन/ /अघ/ /अल/, /ऊ/ /ओ/ /क/ /कु/ /दर/
/डु/ /डुर/ /न/ /पठ/, /पर/ /वि/, /वँ/, /ला/ /स/ /सर/ मु/

उपयुक्त पूर्व प्रत्ययों का वचनान्तरक विशेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है —

५ २ १ १ सज्ञापदों के निर्माणकारी पूर्व प्रत्यय

(क) पूर्ण प्रत्यय + सज्ञा = व्युत्पन्न सज्ञा रूप

पूर्वा प्रत्यय	सज्ञा →	व्युत्पन्न सज्ञा रूप	अर्थ
अ	याव	अयाव	'हीनता'
अ	काल	अकाल	"
अध	कचरो	अधकचरो	'अद्ध'
अन	हित	अनहित	अभाव
अल	मस्त	अलमस्त	निश्चय
ऊ	खल	ऊखल	वस्तु वा०
ओ	गुण ७ गण	आँगण	हीनता
क	पूत	कपूत	"
कु	ठोँड	कुठोँड	"
कु	टाबर	कुटाबर	"
दु	भाग ७ हाग ७ वाग	द्वभाग	"
दुर	आसीस	दुरासीस	,
पड	पोतो	पडपोतो	'पूर्वापीढ़ी'
पर	देस	परदेस	'पराया'
वे	ईजत/ई	वेइती	'बिना'
वे	रहम ७ रेम/ई	वेरेमी	"
व	राग	वे राग	अभाव'
ला	परवाह ७ परवा/ई	लापरवाई	निषेध'
स	पूत	सपूत	अच्छा'
सर	पच	सरपच	'प्रधानता
मु	माँणस	मुमोँणस	'श्रेष्ठता

(स) पूर्वा प्रत्यय + धातु = व्युत्पन्न सज्ञा रूप

पूर्वा प्रत्यय	धातु →	व्युत्पन्न सज्ञा रूप	अर्थ
अ	पच्/आ	अपचो	'बिना'
अण	बोल/आ	अणबोला	,
अण	इण	अणइण	,

५ २ १ २ विशेषण पदों के निर्माणकारी प्रत्यय

(क) पूर्व प्रत्यय + सज्ञा = व्युत्पन्न विशेषण रूप

पूर्व प्रत्यय	सज्ञा	→ व्युत्पन्न विशेषण	अर्थ
अ	थाग	अथाग	अभाव
अ	चेत	अचेत	"
अन	मोल	अनमोल	"
अण	समम्भ	अणसमम्भ	"
कु	द्व	कुद्व	हीनता
डु	बल/ओ	डुबलो	हीनता
नः	घटक	नघटक	बिना
न	पूत/ई	नपूती	"
नु	गुरू/गुर/ओ	नुरो	"
वे	घटक	वेघटक	"
वे	तुक	वेतुक	"
व-	राग/ई	वरोगी	अभाव
स	जन	सजल	सहित
स	पूत/ई	सपूती	"

(ख) पूर्व प्रत्यय + विशेषण = व्युत्पन्न विशेषण रूप

पूर्व प्रत्यय	विशेषण	व्युत्पन्न विशेषण रूप	अर्थ
अ	छूत/ओ	अछूतो	अभाव
कु	मारग/ई	कुमारगी	हीनता
कु-	नोम/ई	कुनामी	"
पुण ^१	तीस	तीस	"

१— 'गुण' पूर्व प्रत्यय केवल संख्यावाची विशेषणों के पूर्व ही लगता है जो सस्वृत के 'ऊन स विकसित है। यौवनोनेरी म उनीस' विशेषण के स्थान पर 'उणोस रूप मिलता है। इस रूप में 'गुण' में विपर्यय हुआ है।

स	नोँम/ई-	सनी मी	श्रेष्ठता
(ग) पूव प्रत्यय	+ घातु	= व्युत्पन्न विशेषण रूप	
पूव प्रत्यय	घातु	→ व्युत्पन्न विशेषण रूप	अथ
अ	टल	अटल	अभाव
अ	धूरु	अधूरु	"
अन	पड	अनपड	"
अन	जाँण	अन्जोँण	,

५ २ २ पर प्रत्यय

बीकानेरी म पर प्रत्यया का प्रयोग सज्ञा सवनाम, विशेषण, क्रिया विशेषण एव घातुओ के पश्चात् होता है एव इनके योग से अनेक प्रकार के सज्ञा, विशेषण आदि रूप व्युत्पन्न होत हैं ।

५ २ २ १ प्रथम पर प्रत्यय (कृत्)

जो प्रत्यय घातु मे सलग्न होकर सज्ञाओ एव विशेषणो का निर्माण करते हैं वे प्रथम पर प्रत्यय (कृत्) कहे जाते हैं एवं इनसे निमित्त शब्द वृद्धत कहलाते हैं । बीकानेरी मे प्राय स्वरात् घातुओ म पर प्रत्यय लगने से पूव 'व अथवा य' श्रुति का आगम हो जाता है एव व्यजनात् घातुओ मे पर प्रत्यय लगने से पूव श्रुति का आगम दष्टिगत नही होता । बीकानेरी मे उपलब्ध प्रथम पर प्रत्यय निम्नखिलित है ।

/ ० / | अक /, | अत / | -अण /, | -अण / ई / | अस /, | -अ त /, | अ द /
 | आ / ई /, | आक / | आप / ओ / | | ार / ई / | आव / | -आव / ओ /, | -आव / अण / ई /
 | जावट /, | इय / ओ / | उ /, | एज /, | एर / ओ /, | जोड / | -ओड / ई /, | -ओट / ई /
 | -ओ ण / | -ओ ण / ई / | -ओ ण / ओ /, | -ओत / ई /, | व / ई / | कार /, | ट / आ /
 | -ट / ई / | -ण / ई /, | त / आ /, | त / ई / | त / इय / ओ / | -न / ई / | | -न / ओ /, | ब / ई /
 | -वार / ओ /, | वय / आ /, | -स / ओ / | अक्कड / | आ / ऊ /, | -आक / इय / ओ /
 | -आव / आण / ओ /, | इयल / | इय / भा /, | एल /, | ओकडाँ / | ओ / अ /,

उप्युक्त पर प्रत्ययों का वगनात्मक विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है —

५ २ २ १ १ सज्ञापदों के निर्माणकारी प्रथम पर-प्रत्यय (कृत्)

(क) धातु + पर प्रत्यय = ध्युत्पन्न सज्ञा रूप

पर प्रत्यय	धातु	पर प्रत्यय →	ध्युत्पन्न सज्ञा रूप
/०/	तप्	-०	तप भा०वा०स०
	जप	०	जप "
	नाच्	-०	नाथ "
/अक/	बैठ	-अक	बैठक स्थान० वा०
	बैस्	-अक	बैसक "
/अत/	तप	-अत/ई	तपती भा०वा०स०
	बल	-अत	बलत "
	रम्	-अत	रमत "
/अण/	चल	-अण	चलण "
	घडक	-अण	घडकण "
	बेल	अण	बेलण "
/अण/ई/	मीष	-अण/ई	मीषणी "
/अस/	मल ५ माल	-अस	मालस "
/अत्/	भङ्	अत्	भङ्गत "
/अद/	तड	-अद	तडद "
	बड	-अद	बडद "
/आ/ई/	कर	आ/ई	कराई "
	जड	आ/ई	जडाई "

पर प्रत्यय / आ/ई/	पातु पठ	पर प्रत्यय -- -आ/ई	पुन न नंशा क्त पडाई भा० वा० म०
	घो /व/ गी /व/	-आ/ई -आ/ई	घोराई " " गावाई " "
/-आव/	तद् पद्	-आव आव	तदाव " " पादाव " "
/-आव/माँ/	पुन् पद्	भाव/माँ भाव/माँ	पुजावाँ " " बाजावाँ " "
/-आव/ई/	पुन् पचव	-आव/ई आव/ई	पुजारी कर्ता० वा० पचकारी करण० " "
/-आव/	पुम पदक	-आव आव	पुमाव भा० वा० म० पदकाव " "
/-आव/माँ/	पुन् पदव	-आव/माँ -आव/माँ	पुजावाँ " " पदवावाँ " "
/-आव/अण/ई/	पे० र	-आव/अण/ई	पे० रावणी " "
/-आवट/	जम् घव बण	-आवट -आवट -आवट	जमावट " " घवावट " " बणावट " "
/ इय/माँ/	रमत्	इय/माँ	रमतिमाँ " "
/ ई/	हम् घोल्	ई ई	हसी " " घोनी " "
/ ऊ/	षा	-ऊ	षाऊ व्यक्ति० वा० म०
/ एज/	बो० घ ७ वघ	एज	बधेज भा० वा० म०
/ एर/माँ/	० घात ७ वत	एर/माँ	बसेराँ
/-ओड/	हल	-ओड	हलोड ,

पर प्रत्यय	धातु	पर प्रत्यय →	व्युत्पन्न	सज्ञा रूप
/-ओट/ई/	षस्	-ओट/ई	षसोटी	भा० वा० स०
	मस	-ओट/ई	मसोटी	"
/-ओड/ई/	पक	-ओड/ई	पकोडी	वस्तु वा० म०
/-ओँण/	लग्	-ओँण	लगाँण	भा० वा० स०
	षड	-आँण	षड़ोँण	"
/-ओँण/ई/	केँ ल क	-ओँण/ई	काँणी	"
/ओँण/ओँ/	बध्	-ओँण/ओ	बध्ओणो	वस्तु "
/-ओत/ई/	कट	-ओत/ई	कटोती	भा० वा० स०
/ क/ई/	भप	क/ई	भपकी	
/कार/	फट	-कार	फटकार	"
	दुत्	कार	दुतकार	,
/ ट/आ/	खर ल खर	ट/आ	खराटा	,
/ट/ई/	भप	ट/ई	भपटी	"
/-ण/ई/	कर्	-ण/ई	करणी	"
	चट	-ण/ई	चटणी	"
/-त/आ/	कर्	-त/आ	करता	कृ वा० स०
	घर	-त/आ	घरता	"
/ त/ई/	चढ	-त/ई	चढती	भा० वा० स०
	बन्	-त/ई	बलना	"
/ त/इय/ओँ/	भर	-त/इय/ओँ	भरतियो	वरतु वा० स०
/-न/ई/	चाल्	११ -न/ई	चालनी	" ११
	मल्	११ -न/ई	मलनी	भा० वा० स०
/-न/ओँ/	भर	-न/ओँ	भरनो	वम वा० स०

/ ऊ/	चा	ऊ	चाऊ
	अकड	ऊ	अकडू
	रट्, रट्	ऊ	रट्
/ ए/	वगड्	एल	वगडेल
	छाँट्, छद	एल	छटेल
/ ओकडो /	सा	-आकडो	साओकडो
	पी	-ओकडो	पीओकडो
	चट्	ओकडो	चटोवडो
/ आडो /	ली /प/	-ओडो	लीयोडो
	खा /प/	-ओडो	खायोडो
	चूट् /इय/	ओड/ओ	चूटियोडो
	गल /इय/	ओड/आ	गलियोडो
/ वार/	जाँण	-वार	जाँणवार
/ -ण/ओ	खा /व/	ण/आ	खावरणो
/ ण/ इयाआ	गा /व/	ण/इय/ओ	गावरणियो
/ व आ /	ढल्	-व/ओ	ढलवो
/ व/ओ /	गा ७ ग	-वै/आ	गवैयो

५ २ २ २ द्वितीय पर प्रत्यय (तद्धित)

जो प्रत्यय सज्ञा, सवनाम, विनेपण क्रिया विगपण आदि शब्दों के अत्य भाग में सलग्न होकर पुन विविध सज्ञा सवनाम विनेपण आदि पदों की संरचना करत हैं व द्वितीय पर प्रत्यय (तद्धित) कहलाते हैं। बीकानेरी में उपलब्ध द्वितीय पर प्रत्ययों का योग की दृष्टि से निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—

- १— सज्ञा में सज्ञा व्युत्पत्तक पर प्रत्यय
- २— सवनाम में सज्ञा व्युत्पत्तक पर प्रत्यय
- ३— विगपण से सज्ञा व्युत्पत्तक पर प्रत्यय
- ४— क्रिया विनेपण से सज्ञा व्युत्पत्तक पर प्रत्यय

पर प्रत्यय	संज्ञा	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न संज्ञा रूप
/-आक/ओ/	पट घम	-आक/ओ/ आक/ओ/	फाटका ^० वस्तु ^० वा ^० स ^० घमाको ^० ,
/-आह/	जोग ५ जुग सात ५ सत	आह/ -आह	जुगाह भा ^० वा ^० स ^० सनाह
/-आप/ओ/	रौंड ५ रड	-आप/आ/	रहापो भा ^० वा ^० स ^०
/-आयत/	पच	आयत	पचायत भा ^० वा ^० स ^०
/-आर/	सो ब/	-आर	नावार व्यवसाय वा ^० स ^०
	सोना ५ सोन	आर	सोनार ,
/-आर/ई/	जूओ ५ जू	-आर/ई	जूआरी व्यवसाय वा ^० स ^०
/-आर/ओ/	वाणियो ५	रणज आर/ओ/	वणजारो ^० वृ ^० वा ^० स ^०
/-आल/ई/	हाय ५ हय	-आल/ई	हाली अगवा ^० स ^०
/इय/आ/	लोटो ५ लुट	इय/आ/	लुटिया लघु वा ^० स ^०
/इय/ओ/	रोकड ओडत	इय/ओ/ इयो/ओ/	रोकडियो ^० व्यवसाय वा ^० आडतिया ,
	जोग	इय/ओ	जोगिया ^० वस्त्र वा ^० स ^०
/इ द/ओ/	वास रात	-इ द/ओ/ इ द/ओ/	वासिने वृ ^० वा ^० स ^० रातिदा ^० रोग ^० वा ^० स ^०
/ई/	खेत घोर तेल परख	ई ई ई	खेती भा ^० वा ^० स ^० घोरी तेली व्यवसाय वा ^० स ^० परखी वस्तु ^० वा ^० स ^०
/ईन/ओ/	माह ५ म	ईन/ओ/	मईनो भा ^० वा ^० स ^०
/ईच/ओ/	बाग ५ बग	ईच/ओ/	बगीचो वृ ^० वा ^० स ^० ,
/एह/ओ/	कौम	-एह/ओ/	कौमेडा ^० सम्बन्ध वा ^० स ^०
/एल/	फूल ५ फुल	एल	फुनल सम्बन्ध वा ^० स ^०
/ओ/ई/	नराद	आ/ई/	नरादोई

पर प्रत्यय	सना	पर प्रत्यय	युत्पन्न सज्ञा रूप
/ओ/ई/	बे०न /न/	आ/ई	वे०दोई १, सवध वा० स०
/-ओट/आ०/	लिंग ल लग	ओट/आ०	सगोटो वस्त्र वा० स०
/ओडाओ०/	हाय ॥ हय	-ओड/ओ०।	हपोडो० वरण वा० स०
/-ओ०ण/आ०/	घर	-ओ०ण/ओ०/	परो०णो० भा० वा० स०
/आ०ण/ई/	सेठ	ओ०ण/ई/	सेठो०ली स्त्री० वा० स०
	जेठ	-ओण/ई/	जेठा एी "
	देवर ॥ देर	-ओ०ण/ई/	देरो०ली
/ जोत/ई/	बाप	ओत/ई/	बापोती भा० वा० स०
	काठ कठ	-ओत/ई/	कठोती सम्ब०घ वा० स०
/-आल/ई/	नीम ॥ नीम्ब	-ओल/ई/	नीम्बोली
/-क/	कण	-क	कणक अन वा० स०
/व/ई/	घम	-क/ई	घमकी भा० वा० स०
/-वार/	फू	कार	फू बार भा० वा० स०
	हू	-कार	हूकार
/ गर/ई/	नेता	गरो	नेतागरी भा० वा० सं०
/-ग/ई/	बँद	ग/ई	बे०गी सवध वा० स०
/ गर/	सो०दो० ॥ सो०दा-गर	सो०दा-गर	सो०दागर
	जाहू	-गर	जाहूगर कत वा० सं०
	याद	-गार	यादगार सम्ब०घ वा० सं०
/-गार/	पेमो ॥ पसा	-गीर	पेसागीर सम्ब०घ वा० सं०
/-गोप/	घोबी	डो	घोबीडो० हपाय वा० सं०
/ड/आ०/	तबलो ॥ तबन	घ/ई/	तबलचो व्यवसाय वा०
/-घ/ई/	माई	-घारो	माईघारो० भा० वा० सं०
/घार/ओ०/	माई ॥ मनी	-घ/आ०	मनीजा० सम्ब०घ वा० सं०
/-ज/आ०/	भण्ट	-ट/गा०	भण्टा० भा० वा० सं०
/-ट/आ०	जन	-त/आ/	जनता समुदाय वा० सं०
/-त/आ/	राई ॥ राय	त/आ०	रायतो० समूह वा० सं०
/-त/आ०			

१— य-दोई म 'ट' ध्रुति वा आगम नएदोई के सादृश्य पर हुआ है ।

पर प्रत्यय	सज्ञा	पर प्रत्यय →	ध्रुत्पन	सज्ञा रूप
/-दोन/	पोन	दोन	पाँनदोँन	पात्र वा०
	अतर	दोँन	अतरदोँन	"
/न/ई/	मोर	नी	मोरनी	स्त्री० "
/नोम/ओँ/	खोलोँ ७ खोना	नोँम/ओँ	खोलानोँमाँ	सवध ,
/-ण/ई/	भील	-ण/ई	भीलणी	स्त्री० ,
	घोद ७ घोँन	-ण/ई	घोँनणी	वस्तु० ,
	हाथी ७ हथ	ण/ई	हथणी	स्त्री० "
/-पण/	सगाँ ७ सग	-पण	सगपण	सम्बन्ध ,
	बाल	-पण	बालपण	भा०वा०स०
/पण/ओ /	मनख	-पण/ओँ	मनखपणोँ	सम्बन्ध ,
/पाल/	खेत ७ खेतर	पाल	खेतरपाल	स्वामी० "
/ब/ओँ/	मल	ब/ओँ	मलवोँ	सम्बन्ध ,
/म/ओँ/	सूर	म/ओँ	सूरमोँ	गु०वा०स०
/-यार/ई/	पाँणी ७ पण	यार/ई	पणधारी	सम्बन्ध "
/र/ई/	वोँस ७ वस	-र/ई	वमरी	"
/र/ओँ/	देव	र/ओँ	देवगँ	,
/ल/ई/	सूत	-ल/ई	सूतणी	"
	ढफ	ल/ई	ढफणी	लघुवा०स०
/ल/ओँ/	भाई ७ भाय	-ल/ओँ	भायवाँ	सम्बन्ध
	छाज	ल/ओँ	छाजवाँ	वस्तु वा०
/वाड/ओँ/	राज ७ रज	वाड/ओँ	रजवाण	सम्बन्ध "

५ २ २ २ २ सवनाम मे सज्ञा नृत्पादक पर प्रत्यय

बीकानेरी में सवनाम मे सज्ञा ध्रुत्पादक पर प्रत्यय निम्नलिखित है -

-ओ, ए/ओ

इनका वर्णनात्मक विश्लेषण इस प्रकार है—

पर प्रत्यय	शब्दनाम	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न संज्ञा रूप
/ओ/	आप	-ओ	आपों भा०वा०स०
/ए/ओ/	आप ए अपण	-ए/आ	अपणों

५ २ २ २ ३ विशेषण से संज्ञा व्युत्पादक पर प्रत्यय

वीकानेरी में विशेषण से संज्ञा व्युत्पादक पर प्रत्यय निम्नलिखित है—

/अक/	/-अण/	/अत/	/-अस/	/आ/ई/	/आप/आ/
/-आर/ओ/	/आवट/	/आस/	/इय/ओ/	/ई/	/एल/ओ/
/क/ओ/	/ग/ई/	/ज/	/ज/ओ/	/ठ/	/य/
/-य/ओ/	/-स/			/-एण/	/म/ई/

इनका वर्णनात्मक विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

पर प्रत्यय	विशेषण	पर प्रत्यय →	व्युत्पन्न संज्ञा रूप
/अक/	पाँच ए पच	अक	पचक समुदाय
/अण/	भूठ	-अण	भूठण भा०वा०स०
/अत/	खलाफ	अत	खलाफत
/-अस/	बारें ए बार	-अस	बारस तियाँ,
	तेरें ए तेर	-अस	तरस "
/आ/ई/	एक ए इक	-आ/ई/	इकाई भा० व०स०
	फीटों ए फीट	-आ/ई/	फीटाई
/-आप/ओ/	बूढो ए बूढ	आप/ओ	बूढापों
/आर/ओ/	अ घ	आर/ओ	अ घारों सबब बा०
/आवट/	तर	अवट	तरावट भा०वा०स०
	जम	-आवट	जमावट

पर प्रत्यय	विशेषण	पर प्रत्यय	→ ध्युत्पन्न	सज्ञा रूप
/-आस/	खारो ७ खार	-आस	खारास	भा०वा०स०
	बाडो ७ बाड	-आस	बाडास	"
/इय/ओ/	पीलो ७ पील	इय/ओ	पीलीयो	रोग०व०
/ई/	लाल	-ई	नाली	भा०वा०स०
/-एल/ओ/	आघा ७ अघ	-एल/ओ	अधेलो	मुद्रा "
/-आ/	दो ७ दू	-ओ	दूओ	सम्बन्ध ,
/-आ ए/	लम्बो ७ लम्ब	-ओ ए	लम्बोए	भा०वा० "
	नीचो ७ नीच	-आ ए	नीचो ए	"
/-क/ओ/	च्यार ७ चो	-क/ओ	चोको	सम्बन्ध ,
	एक	-क/ओ	एका	सवारी ,
/-ग/ई/	सादो ७ साद	-ग/ई	सागो	भा०वा० ,
/-ज/	दो ७ दू	ज	दूज	तियि ,
/-ज/ओ/	पोंच ७ प	ज/ओ	पजा	सग्रह "
/-ठ/	छो ७ छ	-ठ	छठ	तियि "
/-थ/	च्यार ७ चो	-थ	चोथ	"
/-पण/	बडो ७ वड	-पण	बडपण	भा० ,
/म/ई/	दस	-म/ई	दसमी	तियि ,
/-य/ओ	सात	-य/ओ	साथो	,
/-व/ओ/	घारें ७ वार	-व/ओ	घारवो	मंत्कार ,
/स/	चौद ७ चौद	स	चौदस	तियि बा० "

५ २ २ २ ४ क्रिया-विशेषण से सज्ञा व्युत्पादक पर प्रत्यय

बीकानेरी में क्रिया विशेषण से सज्ञा व्युत्पादक पर प्रत्यय निम्न-
लिखित हैं —

/-अत/, / इय/ओ/, / ई/, /-नार/, /-वार/,

उपपुक्त पर प्रत्ययो का वगनात्मक विनयण इम प्रकार है —

पर प्रत्यय	क्रिया विशेषण पर प्रत्यय → व्युत्पन्न संज्ञा रूप			
/-अत/	जहर	प्रत	जहरत	भा०वा०सा०
/ इय/ओ/	फटफट	इय/ओ/	फटफटियों	सम्बन्ध ,,
/ ई/	रोज	-ई	रोजी	भा०वा०सा०
/-वार/	पेस	वार	पेसवार	कर्तृ ,
	रोज ७ रज	-फार	रजवार	भा०वा० सा०
/ वार/	पंदा	-वार	पदावार	,,

५ २ २ २ ५ संज्ञा से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय

बीकानेरी मे संज्ञा से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय निम्नलिखित है—

/-अत/, /-अस्वी/ |अ ग/, |आई/ |आती/, /-आर/क/,
 /आल/आ/, /-इयल/, /-इय/आ/ |इद/ओ/, / ई/, / ईन/, / ईल/ओ/,
 /क/, |एड/ई/, /-एर/ |-एल/क/ |एल/, |ओ/ |आन/आ/
 /वार/, |की/, |खोर/, |गार/, |ची/, /-दार/, |नाक/, /-बाज/,
 /मद/ |ल/ओ/, |लु/, /-वर/, |वोन/ |वार/, /-वी/,

पर प्रत्यय	संज्ञा	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न विशेषण रूप
/-अत/	चोटी ७ चोट	-अल	चोटल
	घाव ७ घय	-अल	घायल
/अस्वी/	तेज	अस्वी	तेजस्वी
	तप	अस्वी	तपस्वी
/अ ग/	दड	-अ ग	दडग
/आई/	पूरव ७ पुरव	आ/ई	पुरवाई
/-आती/	बर	-आती	बराती

पर प्रत्यय	सज्ञा	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न विभेपण रूप
/ आर/ऊ/	दूध	-आर/ऊ	दूधारू
/आल/आ/	धू धराँ ७ धुधर	-आल/आ	धुधराला
/ इयन/	दाढी ७ दड	इयल	दडियल
/ इय/आ/	केसर	-इय/आ	केसरिया
	दूध	इय/आ	दूधिया
/ इ/आँ/	०वायु ७ ०वा	-इ द/आ	०वाइ दोँ
/ ई/	०वास	ई	०वासी
	देस	-ई	देसी
/ ईन/	सग	ईन	सगीन
	रग	ईन	रगीन
	सो ख	-ईन	सोँ खीन
/ ईन/आँ	जेँर	-ईल/आँ	जेँरीलोँ
	ऐब	-ईल/आँ	ऐबीलोँ
/ ऊ/	घर	ऊ	घरू
/ एड/ई/	भाग ७ भग	-एड/ई	भगेडी
/ एर/	०दल	एर	०दलेर
/ एल/ऊ/	घर	एल/ऊ	घरेतू
/ एल/	०वगड	-एल	०वगडेल
/-ओँ/	एकतरफ	-ओ	इकतरफाँ
/-ओँन/आ/	जन	-ओँन/आ	जनोंना
	मरद	-ओँन/आ	मरदोंना
/-कार/	सला	-कार	सलाकार
/ की/	सन	की	सन्की
/-खोर/	धू स	-खोर	धू सखोर
/-गार/	गुना	-गार	गुनागार
/ ची/	अफीम	ची	अफीमची
/ गर/	रम	-दार	रसदार

/ दार/	दल	दार	दल+ार
/ नाक/	खतराँ ७ खतर	नाक	खतर+नाक
/ बाज/	रडी	बाज	र+डीबाज
	घोखोँ ७ घोखा	-बाज	घाखा+बाज
/ म द/	अवल	-मद	अकल+मद
/ ल/ओँ/	साड	-ल/ओँ	साड+ला
	घू घ	ल/ओँ	घू घ+लोँ
/ लू/	दया	लू	दया+लू
/-वर/	ताकत	-वर	ताकत+वर
/-वोंन/	घन	वोंन	घन+वोंन
	रूप	-वोंन	रूप+वोंन
/-वार/	उम्मीद	वार	उम्मीद+वार
/-वी/	मापा	-वी	मापा+वी

५ २ २ २ ६ सर्वनाम से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय

बीकानेरी में सर्वनाम से विशेषण व्युत्पादक प्रत्यय निम्नलिखित हैं—
त/ओँ/, स/ओँ/, -स/ईं/

उपयुक्त पर प्रत्ययों का विश्लेषण इस प्रकार है—

पर प्रत्यय	सर्वनाम	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न विशेषण रूप
/ त/ओँ/	ओँ ७ अ	-त/ओँ	अत्तोँ
	वों ७ व	त/ओँ	वत्तो
	कू राँ ७ क	त/ओँ	कत्ताँ
/-स/ईं/	आप	स/ईं	आपसी
/ म/ओँ/	आँ ७ अ	-स/ओँ	अस्तोँ
	वों ७ व	स/ओँ	वस्तोँ

त/ओँ/ -म/ओँ/प्रत्याया का द्वित्व (सत/ओँ त/ओँ जाति) कमश त
एव स पर बल अधिक होने के कारण हुआ है ।

५ २ २ २ ७ विशेषण से विशेषण व्युत्पादक प्रत्यय

बीचानेरी में विशेषण से विशेषण व्युत्पादक प्रत्यय निम्न लिखित हैं—

/-आ/ई/, /-आय/ओ/, / इय/ओं / ए/ / एल/, / ओ/, /-ओन/ / खर/, / ती/ /-णी/, / म/आं/, / लो /, /-व/ओं /

उपयुक्त प्रत्ययों का वर्णनात्मक विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

पर प्रत्यय	विशेषण	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न विशेषण रूप
/-आ/ई/	चौथोँ ५ चौथ	-आ/ई	चौथाई
/-आय/ओ	पर	-आय/ओ	परायोँ
/ इय/आं/	पच्चीस	इय/ओँ	पच्चीसियाँ
/ ए/	दो	ए	दोए
/ एन/ओं/	एक	एल/ओँ	एकेलाँ
/-आ/	सात	ओ	सातो
	पाँच	-ओ	पाँचा
/-ओन/	०.दीस	-ओन	०.दीसोन
	पचास	-ओन	पचासोन
/-खर/	घण्टाँ ५ घण्टा	-खर	घण्टाखर
/-ती/	बम	-ती	बमती
/-णी/	तपस्वी ५ तपस्व	-णी	तपस्वणी
/ म/आं/	नौ ५ न	म/आँ	नमाँ
/-लोँ/	हेठो ५ हेठ	-लोँ	हेठलोँ
/-व/ओँ	नौ ५ न	-व/ओँ	नवोँ

५ २ २ २ ८ क्रिया-विशेषण से विशेषण व्युत्पादक प्रत्यय

बीचानेरी में क्रिया विशेषण से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय निम्न लिखित हैं—

पर प्रत्यय	त्रियाविशेषण	पर प्रत्यय	श्रुत्य न विशेषण रूप
/ आवर/	गरद	-आवर	गरदावर
/ ई/	ऊपर	ई	ऊपरी
	चटपट	ई	चटपटी
/ बाज/	जल्दी * जल्द	-बाज	जल्दबाज

५ ३ व्याकरणिक प्रत्यय विभक्ति प्रत्यय

जिन आवद्ध रूपों के प्रातिपदिक अथवा धातु में जुड़ने पर पद रचना होती है उन आवद्ध रूपों को विभक्ति प्रत्यय कहते हैं। विभक्ति प्रत्ययों द्वारा रचित पदों को मुख्य रूप से तीन वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है—नामपद क्रियापद, क्रियाविशेषण पद। प्रबंध सीमानुसार यहाँ केवल नामपदों की निर्माणकारी विभक्तियों पर ही विचार किया गया है।

जब किसी प्रातिपदिक अथवा धातु में कोई विभक्ति प्रत्यय लगना है तो उसके द्वारा एक साथ कई व्याकरणिक कोटियों का बोध हाता है यथा—

‘घोड़े’ में ‘छूटे’ सू बोध दे’ वाक्य में /घोड़े/ /छूटे/ पद दृष्टव्य है। इन पदों में /ए/ विभक्ति का योग हुआ है। इस विभक्ति के द्वारा एक साथ पुल्लिंग, एकवचन विकृत कारक का बोध होता है। बोकानेरी में कुछ विभक्तियाँ इस प्रकार की भी हैं जो विविध व्याकरणिक सम्बंध बोध कराने के साथ-साथ व्युत्पादन क्षमता भी रखती हैं। उदाहरणार्थ/ बीटी/पद प्रस्तुत किया जा सकता है/इस पद में /ई/विभक्ति एक ओर तो स्त्रीलिंग एकवचन, मूलकारक का बोध करती है एवं दूसरी ओर इससे आभूषणार्थक बोध भी होता है।

५ ३ १ सज्ञापदों के निर्माणकारी विभक्ति प्रत्यय

बोकानेरी प्रातिपदिकों में लिंग, वचन, कारक के अनुरूप विभक्तियों का योग होता है एवं इनके योग से सज्ञापद निर्मित हात है। जैसा कि यद्यत् अध्यायों में उल्लेख किया जा चुका है कि बोकानेरी में दो लिंग दो वचन एवं तीन कारक रूप हैं। इस प्रकार एक सज्ञापद के तीनों कारकों में लिंग एवं वचन की दृष्टि से

बाह्य रूप सिद्ध होने हैं - छ पुल्लिङ्ग रूप एव छ स्त्रीलिङ्ग रूप परंतु यह नियम उन सज्ञापदों के लिए है जिनके स्त्रीलिङ्ग एव पुल्लिङ्ग रूप दोनों वचनों में प्रयुक्त होते हैं क्योंकि बीकानेरी में कुछ इस प्रकार के सज्ञापद भी हैं जो या तो केवल पुल्लिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं या केवल स्त्रीलिङ्ग में।

बीकानेरी में सज्ञापदों के विभक्ति रूप भिन्न भिन्न हैं। इस दृष्टि से बीकानेरी के समस्त सज्ञापदों को मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किया जा सकता है- पुल्लिङ्ग एव स्त्रीलिङ्ग। इनके अतगत विविध अरथ वाले सज्ञापदों का उदाहरणों में विभाजित किया जा सकता है। यथा —

५ ३ १ १ पुल्लिङ्ग सज्ञापदों के निर्माणकारी विभक्ति प्रत्यय

(क) आकारात् पुल्लिङ्ग सज्ञा रूप — इस वर्ग के अतगत बीकानेरी के सभी आकारात् पुल्लिङ्ग सज्ञा रूप आते हैं। बीकानेरी में आकारात् पुल्लिङ्ग सज्ञा रूपों में निम्नलिखित विभक्तियाँ लगती हैं।

	एकवचन	बहुवचन
मू० आ० वि० प्र०	०	-०
ति० आ० वि० प्र०	०	-ओं
स० आ० वि० प्र०	-०	-ओं

(ख) ईकारात् पुल्लिङ्ग सज्ञा रूप — इस वर्ग के अतगत बीकानेरी के सभी ईकारात् पुल्लिङ्ग रूप आते हैं। इन रूपों में लगने वाली विभक्तियाँ निम्नलिखित हैं।

	एकवचन	बहुवचन
मू० आ० वि० प्र०	-०	-०
ति० आ० वि० प्र०	०	-य/ओं
स० आ० वि० प्र०	-०	-य/ओं

ईकारात् सज्ञा में -ओं -ओं आदि विभक्ति प्रत्यय लगने से पूर्व य श्रुति का आगम हो जाता है।

(ग) ऊकारात् पुल्लिङ्ग सज्ञा रूप — इस वर्ग के अतगत बीकानेरी के

समस्त ऊकारात् पुल्लिङ्ग शब्द आते हैं। इनमें लगने वाली विभक्तियाँ निम्नलिखित हैं—

	एकवचन	बहुवचन
मू० आ० वि० प्र०	-०	-०
ति० आ० वि० प्र०	-०	व/ओं
स० आ० ति० प्र०	-०	-व/ओं

ऊकारात् दाढ्या में विभक्ति प्रत्यय जुड़ने से पूर्व 'व' श्रुति का आगम हो जाता है।

(घ) एकारात् पुल्लिङ्ग सज्ञा रूप — इस वर्ग में बीकानेरी के समस्त एकारात् पुल्लिङ्ग सज्ञा रूप आते हैं। इनमें लगने वाले विभक्ति प्रत्यय निम्नलिखित हैं—

	एकवचन	बहुवचन
मू० आ० वि० प्र०	०	-आ
ति० आ० वि० प्र०	-०	-आँ
स० आ० वि० प्रा०	०	-ओ

(ङ) ओकारात् पुल्लिङ्ग सज्ञा रूप — इस वर्ग के अंतर्गत बीकानेरी के समस्त ओकारात् पुल्लिङ्ग सज्ञा रूप आते हैं। इनमें जुड़ने वाले विभक्ति प्रत्यय निम्नलिखित हैं—

	एकवचन	बहुवचन
मू० आ० वि० प्र०	-०	-आ
ति० आ० वि० प्र०	-एँ, ओ	-ओँ
स० आ० वि० प्र०	-आ	-ओ

(च) व्यजनात् पुल्लिङ्ग सज्ञारूप — इस वर्ग के अंतर्गत बीकानेरी के समस्त व्यजनात् पुल्लिङ्ग सज्ञारूपों में लगने वाले विभक्तियाँ निम्नलिखित हैं—

एकवचन	बहुवचन
मू० आ० वि० प्र० -०	-ओं
ति० आ० वि० प्र० ०	-ओं
स० आ० वि० प्र० -०	-ओं

५३१२ स्त्रीलिंग सज्ञापदों के निर्माणकारी विभक्ति प्रत्यय

(क) आकारात् स्त्रीलिंग सज्ञा रूप—

इस वग में बीकानेरी के समस्त आकारात् स्त्रीलिंग सज्ञा रूप आते हैं। इन रूपों में लगने वाले विभक्ति प्रत्यय निम्नलिखित हैं—

एकवचन	बहुवचन
मू० आ० वि० प्र० -०	-य/ओं
ति० आ० वि० प्र० ०	-य/ओं
स० आ० वि० प्र० ०	-य/ओं

(ख) ईकारात् स्त्रीलिंग सज्ञा रूप—इस वग के अतः त बीकानेरी के समस्त ईकारात् स्त्रीलिंग सज्ञा रूप आते हैं। इनमें लगने वाले विभक्ति प्रत्यय निम्न लिखित हैं—

एकवचन	बहुवचन
मू० आ० वि० प्र० ०	-य/ओं
ति० आ० वि० प्र० -०	-य/ओं
स० आ० वि० प्र० ०	-य/ओं

(ग) ऊकारात् स्त्रीलिंग सज्ञा रूप—इस वग में बीकानेरी के समस्त ऊकारात् स्त्रीलिंग सज्ञा रूप आते हैं। इनमें लगने वाले विभक्ति प्रत्यय निम्नलिखित हैं—

एकवचन	बहुवचन
मू० आ० वि० प्र० -०	-य/ओं
ति० आ० वि० प्र० -०	-य/ओं
स० आ० वि० प्र० ०	व/याँ

(घ) व्यञ्जनात् स्त्रीलिंग सज्ञा रूप—इस वग में बीकानेरी के समस्त व्यञ्जनात्

स्त्रीनिग रूप आते हैं। इनमें लगने वाले विभक्ति प्रत्यय निम्न लिखित हैं—

एकवचन	बहुवचन
मू० आ० वि० प्र० ०	यू/ओ
ति० आ० वि० प्र० -०	य/आ
स० आ० वि० प्र० -०	-य/ओ

स्त्रीनिग के बहुवचन रूपों में ओ विभक्ति प्रत्यय लगने से पूर्व म् श्रुति का आगम होता है परंतु ऊकारात् बहुवचन में 'य' के स्थान पर 'व' का आगम होता है।

५ ३ २ पदनाम पदों के निर्माणकारी विभक्ति प्रत्यय

सवनाम पदों के मूल एक तिपक् आधार विधायक प्रत्ययों का विस्तेषण अध्याय तीन में किया जा चुका है अतः पुनरुक्ति नहीं की गई है। सवनाम पदों का सवाधन कारक रूप नहीं होते।

५ ३ ३ विशेषण पदों के निर्माणकारी विभक्ति प्रत्यय

बीकानेरी में कुछ विशेषण पदों में विभक्तियाँ अपने विशेष्य के लिंग, वचन एवं कारक के अनुरूप लगती हैं एवं कुछ विशेषण अपने विशेष्य की विभक्तियों से सवया अप्र-
भावित रहते हैं। बीकानेरी में ममस्त ओकारात् विशेषण पदों में अपने विशेष्य के लिंग वचन एवं कारक के अनुरूप विभक्तियाँ लगती हैं। ओकारात् विशेषणों के विभक्ति प्रत्ययों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

पुंल्लिंग एवं स्त्रीलिंग

एकवचन	बहुवचन
मू० आ० वि० प्र० ०	आ, -य/ओ
ति० आ० वि० प्र० ०	ओ, -य/ओ

बीकानेरी के आकारात्, ईकारात् ऊकारात् एवं व्यञ्जनान् विशेषण अपने विशेष्य के लिंग वचन एवं कारक के अनुरूप विभक्तियाँ ग्रहण नहीं करते अतः उन विशेषण पदों में /-०/ विभक्ति का योग स्वीकार किया जा सकता है।

उपभुक्त विशेषणों के आधार पर बीकानेरी नामपदों के निर्माणकारी प्रत्ययों के अध्ययन को निष्पन्न रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

बीकानरी म सना एव विनोपण पदा के निर्माणकारी विभक्ति प्रत्यया को निष्पन्न रूप म इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

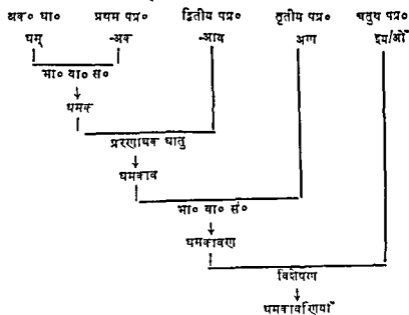
- मू० एव वि० स० वि० रू०, मू० आ० वि० प्र०, ति० आ० वि० प्र० स० आ० वि० प्र०
- (१) आकारान्त पु० स० एक० बहु० एक० बहु० एक० बहु०
 राजा राजाओं /०/, /०/, /०/, /-ओं/, /०/ /-ओं/
- (२) ईकारान्त पु० स०
 दरजी, दरज्यों /०/, /०/, /०/, /-ज्यों/, /-०/, /य्/ओं/
- (३) ऊकारान्त पु० स०
 बालू बालुओं /०/, /०/ /०/, /-व/ओं/, /०/, /-व/ओं/
- (४) एकारान्त पु० स०
 दूर दूरा दूरों /०/, /-आ/ /०/ /-ओं/, /-०/ /ओं/
- (५) ओकारान्त पु० स०
 धारों धोरा धोरे /०/, /-आ/, /ए/ /-ओं/, /-आ/, /ओं/
- (६) व्यञ्जनात् पु० स०
 पर् परोँ /०/, /०/ /०/ /-ओं/ /०/, /-ओं/
- (७) आकारान्त स्त्री० स०
 मा मायों /-०/ /-य/ओं/ /०/, /-य/ओं/ /-०/ /-य/ओं/
- (८) ईकारान्त स्त्री०/स०
 छोने छोरयाँ /०/ /-य/ओं/ /०/, /-य/ओं/, /-०/, /-य/ओं/
- (९) ऊकारान्त स्त्री० स०
 बुक बुक्यों /०/, /-व/ओं/ /०/ /-व/ओं/ /-०/ /व/ओं/
- (१०) व्यञ्जनात् स्त्री० स०
 पाग पाग्यों /०/ /य/ओं/, /-०/ /-य्/ओं/ /०/, /-य/ओं/
- (११) आ ई ऊ व्य वि
 बेसरिया, ऊपरी घर /०/, /-०/, /०/ /०/ /०/, /०/
 मुपातर
- (१२) ओकारान्त वि०
 घोला, घोली /०/ /आ/(पु०) /द्व/ऐ/ /-ओं/ (पु०) /०/ /ओं/
 घोला याँ /-य्/ओं/(स्त्री०) /य/ओं/(स्त्री०) /-य्/ओं/

बीकानेरी में पूव तब पर प्रत्यय के अतिरिक्त मध्य प्रत्यय का योग भी उपनस्य होता है। मध्य योग के अतगत स्वर विचार ही मय अभिनवा का आधार बनता है। यथा—

सना रूप	मध्य प्रत्यय	शुभान मजा रूप
पग (पर)	अ > आ	पाग
यद (यट वृण)	अ > आ	वाद
पीर	ई > आ	गार
पटी	ए > आ	पाटी
ढडो	अ > आ	दाँडा

विश्रुतित प्रत्यय के योग्य के आधार पर कहा जा सकता है कि कुछ प्रत्यय इस प्रकार के हैं जो एक ओर तो ध्वारणिक क्रिया के विभिन्न अर्थों का बोध कराते हैं तो दूसरी ओर विभिन्न अभिनवाय भी हैं।

बीकानेरी में मूत्र पद के पदार्थ अधिष्ठान चार पर प्रत्ययों का योग सम्भव है। चार पर प्रत्यय के योग के उदाहरण पर्याप्त मात्रा में उपनस्य होने हैं। यौगिक प्रक्रिया के साथ आने वाले चार पर प्रत्यय का समीचीन सबंध निम्न प्रकार से प्रकृत किया जा सकता है—



का प्रयोग दृष्टिगत होता है परन्तु यह प्रयोग भी नवीन नहीं। मरहूम वैयाकरणों ने भी इसका उल्लेख किया है। पाणिनि के सूत्र तद्धितानामविभक्ति १ म इसी धोर गन्त है। इस सूत्र की व्याख्या करने हुए मरहूम वैयाकरणों ने निम्ना है सर्वा वानप्रयासिभिरा विभक्ति यन्मातोऽप्यथा विभक्तयानामपयोपचले म तद्धितानोऽप्ययमम न्यायित पत्रनि यपनि त्रिम शब्द क प्राप्ते गुरी विभक्ति नहीं प्राय सदा अत्रवचन ही प्राय यह तद्धितान् शब्द भी अभ्यय है। हिन्दी वैयाकरणों ने भी विभक्ति युक्त शब्दों को अभ्यय माना है।^१ इसका मूल कारण यह है कि विभक्तियों का प्रयोग शब्दों पर भी अभ्यय शब्दों को अभ्ययत्व की दृष्टि नहीं होती। हिन्दी वैयाकरणों ने कुछ परिवर्तनों की क्रिया विभाषणा को भी अभ्यय माना है एवं उक्त विद्वत् अभ्यय की गणा दी है^२ परन्तु डॉ० मोलानाथ त्रिवाङ्ग जैसे शब्दों को मूलतः अभ्यय या क्रियाविभाषणा न मानकर विशेषण प्रयुक्त शब्द ही मानते हैं।^३ हालाँकि बोली म भी कुछ ऐसे क्रियाविशेषण हैं जो परिवर्तनों है पर उनका उल्लेख यहाँ नहीं किया गया है क्योंकि इसमें अभ्ययों की सीमा दोष आ जाता है।

६ २ प्राय एव प्रयोग के आधार पर धीमानेरी अभ्ययों को निम्नलिखित : से वर्गीकृत किया जा सकता है—

१ पाणिनि अष्टाध्यायी १/१/३८

२ क प० कामता प्रसाद गुरु हिन्दी व्याकरण पृ १३६

ख प० किशोरीदास बाजपेयी शब्दानुशासन पृ २५१

३ प० कामता प्रसाद गुरु हिन्दी व्याकरण पृ ३२५

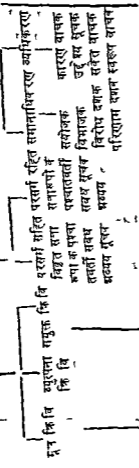
४ डॉ० मोलानाथ त्रिवाङ्गी हिन्दी भाषा पृ ६३७

अन्तारमक शब्दार्थ
(निपात)

समुच्चय बोधक
विस्मयादि बोधक

सवध सूचक

त्रिधा विशेषण



हृष सूचक
शोक सूचक
आश्चर्य सूचक
अनुमोदनार्थक
तिरस्कार सूचक
सबोधन सूचक

परसर्ग सहित
सना रूपो व
पश्चात्तवर्ती
सवध सूचक
अव्यय सूचक

परसर्ग रहित
व्यधिकरण
कारण वाचक
उद्देश्य सूचक
सर्वे वाचक
परिणाम वशव स्वरूप वाचक

सना से व्युत्पन्न कि वि
सावनामिक वे-द्रक रूपो से
व्युत्पन्न कि वि
आनुमो से व्युत्पन्न कि वि
अव्यया से व्युत्पन्न कि वि

स्थान वाचक
काल वाचक
रीति वाचक
परिणाम वाचक
स्वीकार-निरोध वाचक
वाचक
निश्चय एव
प्रतिश्रव्य वाचक

६ २ १ क्रियाविशेषण

जिस अव्यय शब्द से क्रिया की विशेषणा छोटा होनी है उसे क्रिया विशेषण कहते हैं। रचानारमक दृष्टि में बीजानेरी में तीन प्रकार के क्रियाविशेषण उपलब्ध होते हैं—

१ मूल क्रियाविशेषण २ श्युलप्र क्रियाविशेषण ३ समुक्त क्रियाविशेषण

६ २ १ १ मूल क्रियाविशेषण

जो क्रियाविशेषण द्वारा शब्द में नहीं बनने में मूल क्रियाविशेषण का मात है। धर्म की दृष्टि में बीजानेरी में मूल क्रियाविशेषणा की छह वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

१ स्थान वाचक २ मात्र वाचक ३ रीति वाचक ४ परिमाण वाचक
५ स्वीकार के निषेध वाचक ६ निश्चय एवं अनिश्चय वाचक

६ २ १ १ १ स्थान वाचक

वाक्यान्तरी में दो प्रकार के स्थान वाचक क्रियाविशेषण उपलब्ध होते हैं—

१ स्थिति वाचक २ दिशा बोधक

६ २ १ १ १ स्थिति बोधक

बीजानेरी में स्थिति वाचक त्रि० वि० निम्नलिखित हैं

/घासे लारे ऊपर नीचे धार मांय खने

सो मनें माधे मग सामे /

प्रायोगिक स्थितिया

/बोँ म्हारे आगे रे वेँ / वह मर आग रहना है / लारेँ होसी / पीछे
होगा / ऊपर राख / ऊपर रखो / नीचे बैठ / नीचे बैठो / धार जाण /
बाहर कबो / मा म वेँ ठोँ हेँ / मोत बठा है / म्हारेँ घर रेँ खनेँ रेँ वेँ /

'मेरे पर के पास रहता है' / 'म्हारे सामने सूतो है' / 'मेरे सामने सोया है' -
/ ठगण मो मन जाया / 'स्टेशन अगवानी हेतु जाना / 'वरे साथे रेवे' / 'उसने
नाय रहता है / सग छूट्या' / 'साथ छट गया - / 'वेरे सामे गयो है' / 'उसने
नाय गया है'

६ २ १ १ २ दिशावाचक

बीकानरी म समस्त दिशा वाचक क्रियाविशेषण अय शब्द रूपो स
स्युपन्न होने हैं अत इनका उल्लेख व्युत्पन्न क्रियाविशेषण म किया गया है ।

६ २ १ १ २ काल वाचक

बीकानरी म दो प्रकार के काल वाचक क्रियाविशेषण उपलब्ध होते हैं—
१ समय वाचक २ अवधि वाचक

६ २ १ १ २ १ समय वाचक

बीकानरी म निम्नलिखित समय वाचक क्रियाविशेषण उपलब्ध होते हैं—
/ आज कात परमू तरमू अवार पछे पँला अजकाले पँलवे' /

प्रायोगिक स्थितिया

/ आज आय जाय / आज आ जाना / काल दलसा' / कल देखेगे / परसू:
मरियाँ / परसा मरा / मे तरमू बरमियो / वपी नरमा हुई / अवार जा / अभी
जाया / पछे पन्मो' / 'बाल म पढेगे / 'वे' ना आ / पहले आओ / अजकाले कठुटे'
रेवे ह' / 'आजकल कहा रत्न हो ? / 'वे' लव' जमो ना होयो' / परसाल फसल
हुई'

६ २ १ १ २ २ अवधि वाचक

बीकानरी म निम्नलिखित अवधि वाचक क्रियाविशेषण उपलब्ध है—
/ हाल नत रोज हमेसा /

प्रायोगिक स्थितिया

/हाल गयो बोपनी/ 'अभी तक नहीं गया /नत प्राप्त/ हमशा प्राप्त है /रोज/ एव /हमेसा/ 'नत के ही पर्याय हैं।

बाल वाचक क्रियाविशेषणा के बाला का बोव परवर्ती वतमान, अनीन एव भविष्यत क्रियारूपो के अनुरूप हाता है यथा आज हें (वत०) आज हा (भू०) आज होसी (भवि०)

६ २ १ १ ३ रीति वाचक

बीकानेरी में निम्नलिखित रीतिवाचक क्रियाविशेषण उपलब्ध होते हैं—
/धीरें होले, धीमे भट जल्दी फुरती/

प्रायोगिक स्थितिया

/धीरें ला/ धीरे लागो /होले चालो / धीरे चलो /धीम पा/ कम धावाज करके अथवा मद्र गति से पत्ते /भट जा/ जल्दी जाओ /फुरती/ एव /जल्दी/ वसी के पर्याय हैं।

६ २ १ १ ४ परिमाण वाचक

बीकानेरी में निम्नलिखित परिमाण वाचक क्रियाविशेषण उपलब्ध होते हैं—

६-

/खूब बोत वस कम कमती/

/खूब दीया / खूब लिया /बोत पत्तियो/ बहुत पटा /कम कर/ कम कर' /कम लाए/ कम लाना /कमती घाले/ कम डानना'

६ २ १ १ ५ स्वीकार व निषेध वाचक

बीकानेरी में निम्नलिखित स्वीकार एव निषेध वाचक क्रियाविशेषण उपलब्ध होते हैं—

क- स्वीकार वाचक— /हाँ, अच्छया ठीक चोखा, हँ हाऊ/
ख- निषेध वाचक— /ना मन नई नी बोपनी बोण ऊह/

प्रायोगिक स्थितिया

/होँ आवरो / 'हा घा जाओ' /अच्छया पढलें / 'अच्छा पढलो /ठीक जाण परो / ठीक चले जाना /चौँवाँ लेइया / 'अच्छा न आओ /हूँ ना / 'हा जाओ /हाऊ आगया / 'हा आगया' /ना या / 'मत खाओ /मत रो / मत रोओ' /नई आवरो / 'नहा आ जाओ /ओँ का आवँनी / व नहा आना' /वाँ घर में बौयना / 'दर घर म नही है'

६ २ १ १ ६ निश्चय एव अनिश्चय वाचक

वीजानेरी म निम्नलिखित निश्चय एव अनिश्चय वाचक क्रियाविशेषण उपन्यास होने हैं—

क- निश्चय वाचक— /पक्कायत / /जरूर /

ख- अनिश्चय वाचक— /मायत / हायमक /

प्रायोगिक स्थितिया

/वा पक्कायत पडिधोँ है / 'वह निश्चय ही गिरा है' /जरूर जा / निश्चय जाओ /मायत मरगया / 'सम्मकत मर गया'

६ २ १ २ व्युत्पन्न क्रियाविशेषण

वीजानेरी म सजापना सावनामिक केद्रक रूपा, अव्यया एव घातुआ म प्रत्यया परमगोँ व गय शब्दा का योग म क्रियाविशेषण व्युत्पन्न होते हैं। योगक्रम के आधार पर पुरान क्रियाविशेषण का निम्नलिखित वर्गों म विभक्त किया जा सकता है—

- १ सजा से व्युत्पन्न क्रियाविशेषण
- २ सावनामिक केद्रकरूपा से व्युत्पन्न क्रियाविशेषण
- ३ अव्यया से व्युत्पन्न क्रियाविशेषण
- ४ घातुआ से व्युत्पन्न क्रियाविशेषण

६ २ १ २ १ सजा से व्युत्पन्न क्रियाविशेषण

क- पूव प्रत्यय + सजा = व्युत्पन्न क्रियाविशेषण

सात्वते म निर्मात्रित पूवप्रत्यया के योग से क्रियाविशेषण व्युत्पन्न होत है—

/प्र न, वे पले तापले, हर, नर/

भौगिक विधान

पूव प्रत्यय	सजा	व्युत्पन्न क्रियाविशेषण
म	धारण	प्रधारण
न	घडवो, घणव	नपडव
नर-	भे	नरभे
वे	सटवो, सटके	वेसटवे
वे	मुर/घो	वेमुरो
वे-	दन	वेदन
पेले	दन	पेलेदन
तापले-	दन	तापेलेदन
स	परवार	सपरवार
हर	मान	हर्मान
हर	रोज	हरोज
हर	घडी	हरघडी
हर	बखत	हरबखत
हर	जग	हरजग

प्रायोगिक स्थितियां

/प्रधारण सड/ बिना बाग्य ही लडता है /नपडव बनो जा/
निपडव होकर फले जाभा /नरभे होकर जा/ निर्भय होकर जाओ /वेसटवे

रें/ निपटकर रहो' /बंसुरों गावे/ 'वेमुरा गाता है' /वेँ दिन आयो/ 'उस दिन आया' /पिँलेँ दिन या तापेँलेँ दिन आसी/ 'नरसो के एक या दो दिन बाद मे आयेगा' /बाड मँ सपरिवार डूबग्यो/ 'बाड म सपरिवार डूब गया' /बोँ कलकत्तेँ सू हसलि आवे/ 'बह कलकत्ता से हर वष आता है' ।

ख सज्ञा+पर प्रत्यय, परसग, वाक्याश =व्युत्पन्न क्रियाविशेषण

सज्ञापनों म निम्नलिखित पर प्रत्ययों परसगों, वाक्याशों के योग से क्रिया विशेषण व्युत्पन्न होते हैं—

/-सू, -नँ, कार -तक, भर/

योगिक विधान

सज्ञा	पर प्रत्यय परसग, वाक्याश	क्रियाविशेषण
प्रेम	सू	प्रेमसू
ध्योंन	सू	ध्योंनसू
खोर	-सू	जोरसू
भाग	-सू	भागसू
दन	ऊगेँ	दनूगेँ
सज्या	-तक	शाम तक
ऊमर भर	भर	ऊमरभर

प्रायोगिक स्थितियाँ

/सब कोँ म प्रेमसू करो/ 'सारे काम प्रेम से करो' /चीठी ध्योंन्सू पढ/ बिट्टी ध्यान से पढा /भागसू बोँ बठेँ पाँचग्यो/ भाग्य से बह बहा पहुँच गया' /दनूगेँ आये/ सबेरे घाना' /भाखरकार जाबणोंँ पडियोँ/ भाखिर में जाना पडा /सज्यातक आय जासी/ शाम तक आजायेगा /पसोँ ऊमरभर नमायाँ पण भरतीटेँ म एक पसाँ ईँ बोँ म की आयोँनी/ उम्र भर घन नमाया पर मरते समय एक पसा काम नहीं आया ।

६ २ १ २ २ साव्यनामिक केन्द्रक रूपो से व्युत्पन्न क्रि विशेषण

बीकानेरी म-पुरुष वाचक (उत्तम पुरप) निश्चयवाचक (निकटवर्ती व दूरवर्ती) सबब वाचक एव प्रश्न वाचक साव्यनामिक केन्द्रक रूपा म—

/ब्वेँ, म्मँ मूँ एँ अलेँ वके द मकी वकी ईनेँ/

व योग स स्थानवाचक काल वाचक परिमाण वाचक एव रीति वाचक क्रियाविशेषण युत्पन्न होते है।

यौगिक विधान

क- साव्यनामिक केन्द्रक रूप + /म्मँ एँ मकँ मकानेँ ब्वेँ वकी वकेँ वकानी द/ = स्थानवाचक क्रि वि

यौगिक विधान

सवनाम	केन्द्रक रूप	आवृद्ध अण	व्युत्पन्न क्रि वि	अर्थ
उत्तम पुरप /ह/	ह	म्मे	हम्मँ	अव
	हँ	एँ	हएँ	अभी
	ह	मकँ मकी	हमकँ हमकी	अवकी
		मकानेँ	हमकानेँ	आर
निकटवर्ती /ओँ/	अ	वव	अवव	अव
	अ	वकी वन	अवकी अवनेँ	अवकी
		वकालेँ	अवकालेँ	आर
सबब वाचक /जवोँ/ ज	ज	द	जद	जव
	ज	एँ	जएँ	तव
प्रश्न वाचक /कूण/ क		द	कद	कव

ख- साव्यनामिक केन्द्रक रूप + /ठ/एँ/ = स्थानवाचक क्रि वि

सवनाम	केन्द्रक रूप	आवृद्ध अण	व्युत्पन्न रूप	अर्थ
निकटवर्ती /ओँ/	अ	ठ/एँ	अण्डँ	यहाँ

दूरवर्ती /बो /	ब		बठ्ठे	वहा
सवध वा जकाँ	ज	"	जठ्ठे	जहा
प्रश्न वाचक /कूरा/	क	"	कठ्ठे	कहा

ग- साधनामिक केन्द्रक रूप + ठ/झिने = दिशावाचक

सवनाम	केन्द्रक रूप	आवद्ध अक्षर	व्युत्पन्न रूप	अर्थ
निकटवर्ती /घा /	घ	ठ/झिने	अठीने	इधर
दूरवर्ती बाँ	ब	" "	बठीने	उधर
सवध वा /जकाँ/	ज	" "	जठीने	जिधर
प्रश्न वाचक /कूरा/	क	" "	कठीने	किधर

उपयुक्त रूपा के अलावा दिशावाचक क्रियाविशेषणार्थ अथवा सूना रूपों सवनामा म -लं/पामं, नं/खोनी पासी क योग से भी दिशा वाचक क्रिया-व्युत्पन्न विशेषणहाने हैं यथा अठीनेले पासं बठीनेले पासं कठीनेले पाम, जठीनेले पामं अठीनेले माना बगीचेले पाँनी कठीनेले लाँनी, जठीनेले खाँनी, डावँ खाँनी जावले खोनी इय पासा आदि ।

घ- साधनामिक केन्द्रक रूप + य/आँ = राति वाचक क्रि वि

सवनाम	केन्द्रक रूप	आवद्ध अक्षर	व्युत्पन्न रूप	अर्थ
निकटवर्ती /घाँ /	घ - ई	य/आँ	ईयाँ	गग
दूरवर्ती /बाँ /	ब - बी	'	बीयाँ	दग
सवध वाचक /जकाँ/	ज - जी	'	जायाँ	जग
प्रश्न वाचक /कूरा/	क - का	'	कायाँ	कग

प्रायोगिक स्थितिया

/हम्मं आयाँ ३/ 'धव माया ३ /हणुं जा/ 'अभी जाओ /धनुं ३

भाईस/ 'घब साऊना /बराता हमर' हमकी, हमवाले, घबकी घबवाले घबरे
 भासी/ बर्षा भवनी बार भायेगी /भठठ बँठ/ 'यहाँ बठो /बठे जा/
 'वहाँ जाओ /जठठे दीसे बठडे जा/ 'जहाँ दिखाई दे वही जाओ /कठठे हे/
 'यहाँ है /भठीन दी हग्यो/ 'इधर भाग गया /बठीने सू/ 'उपर सोओ /जावे
 जठीने ई जा/ जिधर चाहो जाओ /कठीन गयो/ 'किधर गया' /जावणुँ लोनी
 देव/ 'दाहिनी घोर देखो आदि ।

६ २ १ २ ३ अन्वयो से व्युत्पन्न क्रियाविशेषण

अन्वय शब्दों में /-तक, ईज/ के योग में अवधि एक परिधि वाचक
 निश्चयायक व केवलायक क्रियाविशेषण व्युत्पन्न होते हैं यथा—

भठे + तक = भठठ तक भठठे + ईज = भठठ ईज

प्रायोगिक स्थितिया

/बो भठठ तक आगयो/ वह यहाँ तक आ गया/ बो भठठे ईज
 वे ठो हे/ वह यही बठा है ।

६ २ १ २ ४ धातुओं से व्युत्पन्न क्रियाविशेषण

धातुओं में /ए/ एक पूर्वकालिक /र/ के योग से क्रियाविशेषण
 व्युत्पन्न होते हैं । व्यजनात् धातुओं में /ए/ के योग से पूर्व /इय/ का भागम
 होता है एव स्वरात् धातुओं में नहीं । आकारान्त व ऊकारान्त स्वरात् धातुओं
 में /र/ के योग से पूर्व /य/ का भागम होता है । शेष स्वरात् व व्यजनात्
 धातुओं में नहीं ।

योगिक विधान

धातु		भावद अक्षर	व्युत्पन्न क्रि वि
पठ	/इय/	ए	पठिये
बूट	'	ए	बूटिए

घ्रा	×	घ	घ्राए
ला	×	ल	लाए
पढ	×	र	पढर
घ्रा	/घ/	-र	घ्रायर
सू	/घ/	र	सूयर
पी	×	-र	पीर

प्रायोगिक स्थितिया

/पढिये जा/ 'पढत जाओ /पढर राबिया कर/ पढ कर रखा करो'
/घ्राणी पीर घ्रा/ 'पानी पीकर घ्राओ'।

६ २ १ ३ समुक्त क्रियाविशेषण

६ २ १ ३ १ द्विरक्ति मूलक समुक्त क्रियाविशेषण

क- सनापदो की द्विरक्ति

/दनन् घरघर पढी घड़ी, घढघडियार, हाथोहाथ, बीषोबीच
दुनोदुन, दुनरात, ननुन सज्या, घरबार/

ख- विशेषणा की द्विरक्ति

/एक-एक दो दो च्यार-च्यार एकाएक ठीक-ठीक साफ साफ/

ग- क्रियाविशेषणा की द्विरक्ति

१ स्थानवाचक क्रियाविशेषणों की द्विरक्ति

/भागे भागे नारे-नारे उपर-ऊपर नीचे-नीचे बार-बार माँय-
माँय भटे-भटे, बठे-बठे, बठे-बठे जठे-जठे खने-खने/

२ काल वाचक क्रियाविशेषणों की द्विरक्ति

/पानो-पान, बायो बाय रोत रोत हुनसा हुनसा/

- ३ रीतिवाचक क्रियाविशेषणों की द्विरक्ति
/धीरे धीरे हो नें हो लें, धीमं धीमं, जल्दी जल्दी, मट मट/
४ परिमाणवाचक क्रियाविशेषणों की द्विरक्ति
/कम-कम कम-कम कमती कमती/
५ अनुकरणात्मक क्रियाविशेषणों की द्विरक्ति
/सरसर फटाफट हडाहडा तानतड दडादड/

प्रायोगिक स्थितियाँ

/बो बेटा री बान्मं घर घर गयां पग कंगी बेटे दी बापनी/ व
पुत्री के लिए घर घर गया पर किसी ने भी नहीं दी/ बिं बेटे नें घर घर
जोयलियो पग लाधियो कोयनी/ उसने पुत्र को घर घर डूढ लिया पर मित
नही /तू घटघटियार मत जा/ तुम बार-बार मत जाओ /एकए
मरग्यो/ अचानक मर गया /लायरे बीचोबीच पोचग्यो/ भाग के बीचोबीच
पहुच गया /हायोहाय कर/ हायोहाय करो /होले होले चाल/ धीरे धीरे
चलो /फटाफट कर/ जल्दी जल्दी करो आदि ।

६ २ १ ३ २ दो मित्र-मिश्र क्रियाविशेषणों का संयोग

/भागें लारें ऊपर-नीचे माँय-भार भठीन-बडानें काल-परसू
भाज-वाल, जद कदे/

६ २ १ ३ ३ दो समान क्रियाविशेषणों में /-न/ का प्रयोग

/बने-न-बदे/ बठठ-न बठठे/

६ २ १ ३ ४ सजा + राँ + सजा = संयुक्त क्रियाविशेषण

/हपनेँ रो हपनेँ मईनेँ राँ मईनेँ,

२ २ १ ३ ५ अ-यय + रोँ + अ-यय = कि वि

/भागँ रोँ भागँ, लारँ रोँ लारँ/

६ २ १ ३ ६ विशेषण + मज्ञा = क्रियाविशेषण
/एके साथ, एके सामे, एक्बार, /

६ २ १ ३ ७ विशेषण + विशेषण + पूव० का० /कर/ = क्रि वि
/एक एककर /

६ २ १ ३ ८ सज्ञा + धातु + ए = क्रि वि
/दनचक्रिये /

६ २ १ ३ ९ विशेषण + तरे = क्रि वि
/चोचीतरे, घाछीतरे /

प्रायोगिक स्थितियां

/रस्ते में घागे-नारें ध्यो न राम/ रास्ते में घागे-पीछे ध्यान रखना
/कताब ऊपर-नीचे मोय-द्वार अठीने बठीने सबजगें जोयली पण लाधी कामनी/
पुस्तक ऊपर-नीचे भीतर-बाहर इधर उधर सब जगह दू डली पर नहीं मिली'
/वदेनक्रे घासी/ 'कमी न कमी घायगा /मइने रोमईनें घाय पांचे/ हर
महीने घा पहुचता ३ /आग रों घागे रंवे/ घागे का भाग रहता है'
/एके साथे खापलें/ एवसाथ गाला /ये बठठे एकएककर घाया/ तुम बहा
एक एक करके घाना /हू बठठे दनचक्रिय पोचियो/ मैं बहा दिन चठे पहुचा'
/तू बठठे चोचीतरे बेठिये/ 'तुम वहा शच्छी तरह बठना

६ २ २ सबध सूचक

जो शब्द सना अथवा मज्ञा के समान प्रयुक्त होन वाले शब्दों के पीछे आकर उनका सबध वाक्य के विभिन्न शब्द के साथ संबंधित करने के सबधसूचक अर्थ कहलाते हैं। बीजानेरी में अधिकांश जानवाचक एवं ध्यान-वाचक क्रि वि प्रयोग के अनुसार सबधसूचकता के कालवाचकता का भाव देते हैं। जब व क्रिया की विशेषता की ओर द्योतित करते हैं तो क्रि वि हाते हैं एव जब

सजा के साथ प्रयुक्त होते हैं अथवा शब्दों में सत्य जोड़ते हैं तो सबधसूचक अव्यय बड़े जाते हैं। प्रयोग मत्र अध के आधार पर बीकानरी सबधसूचक अव्यय को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।

- १ परसग सहित विकृत सजा रूपा के पश्चातवर्ती सबध सू भ
- २ परमगरहित विकृत सजा रूपा के पश्चातवर्ती स म् भ

६ २ २ १ परसग सहित विकृत सजा रूपा के पश्चातवर्ती सबध सू भ

बीकानरी में निम्नलिखित अव्यय परसग सहित विकृत सजा रूपा के साथ प्रयुक्त होते हैं—

/भागें तारें प ला ऊपर नीचें सोमनं एनं न डा, अठठं, बीच बार दूर माय खानी, खातर वास्तें भनामें सवा ७ स्वाय ८ स्वा (तिवाय) बना/

उपयुक्त सत्रध सूचका के पूर्व अधिकांशत रं/ एव /सू/ परसग का प्रयोग होता है।

६ २ २ २ परसग रहित विकृत सजारूपा के पश्चातवर्ती सबध सू भ

बीकानरी में निम्नलिखित स म् विकृत सजा रूपा के साथ प्रयुक्त होने हैं—

/मर तक समेत सरीसों जुरसों/

६ २ ३ समुच्चयबोधक अव्यय

जो अव्यय शब्द एक वाक्य को दूसरे वाक्य में संयुक्त करत हैं समुच्चय बोधक अव्यय कहलाते हैं। बीकानरी बोली में सके दो भेद उपलब्ध होते हैं—

- १ समानाधिकरण (समान वाक्यों को संयुक्त करने वाले)

स० बा० घ०

- २ अधिकरण (एक या अधिक आश्रित वाक्यों का संयुक्त करने वाले)

स० बी० घ०

६ २ ३ १ समानाधिकरण

समानाधिकरण स० दो० अव्यया के चारों उपभेद किये जा सकते हैं—

१ सयोजक २ विभाजक ३ विरोधशक ४ परिणामशक

६ २ ३ १ १ सयोजक /ओ र भा अर भा र/
/हू ओ र भा पढतां/ /धूर बाँ जाया/

६ २ ३ १ २ विभाजक /कन, या, वे, यास्तां-यास्/

/चाए-चाए, ना-ना या-या/

/बा पढ़ियो कन को पढ़ियो नी/ वह पढा या नहीं पढा

/बाँ भायाँ या कई केँ बायाँ/ 'वह भाया या कुछ कहलवाया'

/कस्ताँ भायो केँ स को भायो नी/ 'या तो भायेगे या नहीं भायेगे'

/चाए भाया चाए जाया/ 'या तो भायो या जायो'

/ना तोँ भायोँ ना पढ़ियोँ/ न तो वह भाया न ही पढा'

/यास्तोँ भा यास जा/ या तो भायो या जायो'

६ २ ३ १ ३ विरोधशक

/पण/

जो शब्दाश दो वाक्यों में पहले का निषेध या परिमिति सूचित करने में विरोधशक अव्यय कहनात है। बीकानेरी में विरोधशक अव्यय /पण/ है।

इसकी प्रायोगिक स्थितिया निम्नलिखित हैं।

/हू जाईस तो पराँ पण लारली तू मभाल लीये/

मैं चला तो जाऊगा पर पीछे की तू मभाल लेना'

६ २ ३ १ ४ परिणामशक

बीकानेरी में स्वतंत्र रूप से परिणामशक अव्यय उपलब्ध नहीं है। अतः अतः इसके लिए निरुद्धवर्ती सवनाम के तिथक रूप के साथ /वास्तै/ का प्रयोग किया जाता है अथवा उच्चारण में अल्पकालीन रुकाव में भी इसका बोध होता है यथा—

/बाँ हम्मँ भासी, तू जापरो/ वह भ्रम भायेगा, तुम जायो'

/बाँ भायग्याँ इयँ, वास्ताँ हू तोँ गयोँ पराँ/ वह भागया इसलिय मैं तो चला गया।

६ २ ३ २ व्यधिकरण

जब एक वाक्य में एक या अधिक प्राप्ति वाक्य जिन सभ्ययों के योग में
आए जाते हैं वे व्यधिकरण समुच्चयवाचक कहलाते हैं। इनके भी चार भेद हैं—

१ कारणवाचक २ उद्देश्यवाचक ३ सक्तवाचक ४ स्वल्पवाचक

६ २ ३ २ १ कारणवाचक

/क्या के कारण/

/हूँ पढ़सकियाँ बोयनी क्यों वे म्हारें बाग तन पू जी ही वायनी/

मैं पढ़ नहीं सका क्योंकि मेरे पिता के पास धन नहीं था

/हूँ बठ्ठल आऊँ बोयनी कारण बँसने देयने इ बने/

मैं वहाँ नहीं आऊँगा क्योंकि वे मुझे देखते ही जलने हैं।

६ २ ३ २ २ उद्देश्यवाचक

/ताकि जकँसू/

/हूँ जोरसू बोजू ताकि तन मुर्गीजजाव/

मैं जोर से बोलता हूँ ताकि तुझे सुनाई दे जाय

/हूँ पेँसा मूई केँदू जनेसू पछे कारे नद कवे/

मैं पहले ही कह देता हूँ जिससे बाद में कोई न बोले

६ २ ३ २ ३ सक्तवाचक

/ज-ताँ, हात्ताकि-पण चाए-पण/

/जे तू गयो परो तोँ थारे-म्हारे बणसी कायनी/

यदि तू चला गया तो तेरे-मेरे बनेगी नहीं

/जे तू आवतकेँ ताँ सुई खायलेवतकेँ/

यदि तू आता तो तू भी खा सता

/हात्ताकि हूँ प्रायो तोँ हीँ पण तू गयो परकेँ/

यद्यपि मैं आया तो था पर वह चला गया

/चाए तू रेँ चाएजा पण म्हे तोँ जासो/

चाहें तुम रही चाह जाओ हम तो जायेंगे

६ २ ३ ४ स्वरूपवाचक /के, जणै कोए, जोणै बोर्ड/
 /बकेयाँ न म्हारो तो बाल बच्चाई चारे द्वारे को चढे नी/
 'उसने कहा कि मेरा तो बाल बच्चा भी तुम्हारे द्वार नहीं चढ़ेगा
 /प्रैस्नाँ दीये अणै कोए रापस आयग्याँ होवै/
 ऐसा दिखई देता है मानो कोई राक्षस आ गया हो'

६ २ ४ विस्मयादिवोधक अव्यय

इन अव्ययों के द्वारा विविध मनोविस्तारों का भावो की अभिव्यक्ति
 होती है—

हपसूचक— /आहा, ओहो चारे वा-वा, धन धन, मराम/
 शोकसूचक— /ऊरू, ओपरे, हेरोम, ओयमा, गंमराँम/
 आश्चर्यसूचक— /हू हैं, क्या, अच्छ्या राँ/
 अनुपादनसूचक— /ठीक हाँ हाँमो/
 संबोधनसूचक— /ओ धरे रे धरे/
 निरस्कारसूचक— /दर चर, हट दर दट/
 ६ २ ५ बलात्मक शब्दाश (निपात)

जिन शब्दाशा का कोपात्मक अर्थ नही होता पर वे वाक्यान्तगत अर्थ
 शब्द रूपों के साथ बलाघातपूर्वक प्रयुक्त होकर अभिन्नव्ययों का बोध कराते हैं
 बलात्मक शब्दाश (निपात) कहलाते हैं।

बीकानेरी में निम्नलिखित बलात्मक शब्दाश (निपात) है—
 /तोँ मरो सई ईज ई बी धकेँ/
 इनकी प्रायोगिक स्थितियाँ इस प्रकार हैं—

/तोँ/ यह निपात किसी भी शब्द भेद के साथ प्रयुक्त हो सकता है यथा—रोँम
 नोँ आसी (स० नि०) है तोँ आयग्याँ (स० पू०) बनरियोँ तोँ मरग्योँ (नि०
 पू०) अठेँ तोँ बोयनी (अ० नि०), पडेँ तोँ हेँ (क्रि० नि०)। इससे निश्चय
 भाषण का बोध होता है यथा—म्हे ताँ बढठेँ जासाँ (नि०) ये तोँ जीम जाया
 (आ०)। इसका प्रयोग प्रश्नवाचकता के रूप में भी होता है यथा—तोँ हूँ
 आऊँ ? प्रत्यक्ष विषय में वाक्यान्त में इसका प्रयोग होने पर धमका का अर्थ

व्यक्त होना है यथा—यू आतो । इसके प्रयोग से अनुमान की अभिव्यक्ति भी होती है—मो बग से राँ बेटो तो वीँयनी हँ । सनेनाथक वाक्यों में इसका प्रयोग होता है—यू पत्तो तो पास होय जावतो ।

/मरी, सई/— ये निपात /तो/ के पश्चात्बर्ती है । स्वतंत्र रूप से इन निपातों का प्रयोग नहीं होता । जब इनका प्रयोग वाक्यान्त में होता है तो इनमें आग्रह व समावना की पूर्ति का बोध होता है—आयो तो सरी सई (स० पू०) आया तो सरी सई (आ०) । विरोधशक्त वाक्यों में इनका प्रयोग /तो/ के पश्चात् एव पण के पूर्व होता है—म्हे आया तो सरी पण पार पडा कायनी । भविष्यत्-कालिक क्रियाओं के साथ इनका प्रयोग निश्चय का बोध कराता है—हू आऊनो ताँ सरी । जा तोँ सई ।

/ईज/— यह निपात किना भी शब्द के साथ प्रयुक्त होने पर निश्चय एव क्वलाभयता का बोध कराता है यथा—हरियो ईज दोँडसी (नि०) यू ईज आय (ब०) /ई/-प्रायनात्मक वाक्यों में सना विशेषणादि के पश्चात् /ई/ का सश्लिष्ट प्रयोग का होना है—/पनी दे कताबी दे/ सना, सवनामो के साथ इसका प्रयोग होने पर समेतायकता का बोध होता है यथा—/राबी खाये/ /खीचडो ई खाये/ द्विरक्तिपूर्वक वतमानकालिक कृदन्तीय रूपों के साथ इसका प्रयोग होने पर प्रसंगानुरूप अर्थों का बोध होता है /पडनाँ पडनोँ ई मा/ सूतोँ पूनोँ ई मरयोँ/ /सायतू/ के साथ प्रयुक्त होने पर असमावना का बोध होता है सायतू ई आवे /, /सायत ई हासी/

/बी/— यह निपात /ई/ का पश्चात्बर्ती एव द्विगु /मो/ का स्थानापन्न है । समे समेतायकता का बोध होता है—/यू ई बी आवे/ /वृण बी लागोँ हे/

/धके/— यह निर्गत अस्तिस्वद्योतक है एव अधिकशक्त वाक्यान्त में ही इसका प्रयोग होता है, यथा—/धकेँ धन धूखो मरँ/ वाक्य के मध्य में भी इसका प्रयोग होता है पर अन्त में कभी नहीं । यारँ धकँ इँहोँ नै कूणँ मार सकेँ/

अध्याय / ७

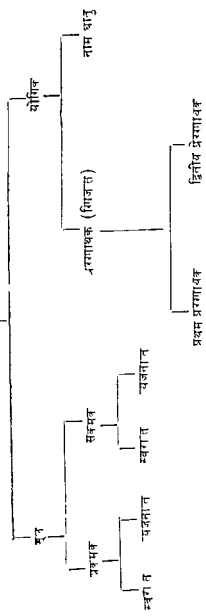
क्रियापद

७ १ जिस पद के प्रयोग में हम किसी वस्तु के विषय में विधान करना है उसे क्रियापद कहते हैं यथा—/छोरा गया/ वाक्य में /गया/ क्रियापद द्वारा 'रुखे' के विषय में विधान किया गया है। बीकानेरी क्रियाशास्त्र के प्रयोग के आधार पर निम्नलिखित तीन वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

१ धातु २ क्रियापद संरचना ३ संयुक्त क्रिया

७ २ धातु

जो अक्षर मूलतः क्रियापदों में सभी रूपों में विद्यमान रहता है उसे धातु कहते हैं यथा—पठ् पठ् पठिष्ये पठिष्ये पठिष्ये आदि रूपों में √पठ् अक्षर मूलतः विद्यमान है अतः यह धातु है। प्रयोग एवं संरचना की दृष्टि में बीकानेरी धातुशास्त्र के अन्तर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है—



उप्युत्त कर्णोत्तरगा म मवप्रथम वीकानरा धातुआ को मून एव योगिक दा मागा म विभक्त किया गया ह । मून धातुआ को कमत्व के आधार पर प्रकम्ब एव सकम्ब दो भागा म विभक्त किया गया ह । पुनश्च प्रकम्ब एव सकम्ब धातुआ का अत्य ध्वनि क आधार पर स्वरात एव यजनात् न भागा म विभाजित किया गया ह । स्वरात धातुआ म आ ह ऊ ँ ए एव आ म अत हान वानी धातुण ही उपन्य हानो ह । एतन् इतर स्वरा म अत हान वानी धातुण उपन्य ननी होती । अक्षरिचना का दृष्टि मे सभी स्वरा त धातुण एकाक्षरी ह । यजनात् धातुआ म अन्व स्वर य व तथा ह म्ह एव ल्ह वा छात्कर शप सभी यजना म अत हान वानी धातुण उपन्य होती ह । अक्षरिक्ता या दृष्टि म यजनात् धातुण एकाक्षरा एव द्व्यक्षरी दो रूपा म उपन्य हानो ह । मून वीकानरी म धातुण द्व्यक्षरामकता म अधिक उपन धनी हानो एव सामान्यत द्व्यक्षरी धातुआ क एतना स्वर ल्हस्व एत है । प्रायोगिक दृष्टि

म वाकान्तेरी म अधिकांश मून धातुण म० पु० एव वचन प्रत्यय विध्यथ म प्रयुक्त
हानी है यथा /त् पत्/ /तू आ/ /तू मू/ /तू रा/ /तू दू/ आदि । इन रूपों
म पत् रचना की दृष्टि से /०/ प्रत्यय वा योग स्त्रीकार किया जा सकता है ।
यहा बीकानेरी बोली म बह्वचनता मे प्रयुक्त अकमक सकमक स्वरान एव व्यजनात
मून धातुण रूप-गठन एव ह्य-यात्मक नग्नन क आहार पर प्रस्तुत की जा
रहा है—

७ २ १ मूल धातुए

७ २ १ १ स्वरात धातुण

अ— √आ

इअऽ— √खा गा चा टा जा ण वा (गुहाना) भा (रुचिर
नगना) ना जी पी मी चू दू तू (पाछता) मु के र
बँ सँ, द वा जा धो णो पा रा

इअ — √हा, गला~गो उलो~ना नचा~को

७ २ १ २ व्यजनात धातुए

७ २ १ २ १ एकाभनी यजनात धातुण

अ/ह √अन् उह ऋ

अऽ/ह √ऊग ऊभ ऊर आर आर ओर

अग/ह √कट कड कन कर तम तुन् खज खट खप खम खद्
खुभ गुन गुम खत् खत् जन गग गत् गच गुम् गज
घत् घत् घन घम घुट घुम चत् चत् चर चत् चण
चप नट चग चुग छत् द्रग धा ठत् तुन जच जन्
जप जम जह जग जुत् जुन भत् भत् भर भत् भुप
भुत् टन टक् टुर ठग् ठर तम डर डट् डम डर
टन् हुन तक् तट् तप तल नर तुन ख ज १५
न् धर धम धुर नर तत् पत् पत् पच ख प प

पुन प्र प्रच घट प्र वड प्रण प्रन भ्र भम भव
 भन मन मर मट मुट मुच मर मज रम् रट रण
 र्न लव लय रुक रुट मर मज मर मुण हक हट
 र्म हन हग ।

हग२/ह—

१ कृक कूट कृद काप खीच मूग मूट मूज मूथ मूद
 गाठ धीम घूम धोन त्रात चात्र चाट चीर चूक चूग चूस
 चूर चार उट छोट जाग जीत जीम् जोंग भाख भीख
 भूमू टू टाच ठम ठर ठोक डाक डाट डूव ट्व तीव
 धूक टीग दूग धाप धूज धोर नीर नॅत हाख~नाँख
 पाट पीर पीम पूज पूछ पॅर पोँच फाक फाट फून
 फक फाट वाच वोन भूक भूज भूल भार माग
 रात्र राच मूज मूक सूत् लाग लाद् नीप् सीच सीज
 मूग सोच हाल हाक ।

७ २ १ ० ० द्वयक्षरी यजनात् घातुण

अ/हअ/ह—

✓ अकड अवर अटर अगाय् उकल् उखण् उतर उसण
 उपगल् उबल् उखड उपड उगल उचक् उछन् उजड
 उयन उपड उलड उफन उछर ।

अ/उ/ह

✓ उडीक ।

अऽ/हअ/ह

✓ इतर ।

हअ/हअ/ह

१ कनर कपट कचर कुचर खुतर बगड पन् पटक
 फक् चमक् चरक ममन मचक् नमट राड समज मरक्
 समल लचक भगड ।

अ/हअ/ह

१ खणीग मरोन् ।

७ २ १ २ ३ ग्युंन यश्न न धानुभा म आन्त्रिक ध्वनि विना
 मनसा धानु रूप व्युत्पन्न होत है। अथ धी ध्वनि मे -म परिवर्तन के परिणाम-
 रूप अ० ग० क० हो जाती ह। म आन्त्रिक विरर प्रक्रिया म
 /अ- आ/ /घ- ण/ उ- ओ अ > ओ-ट- ट/ धनु > णच/ /घ > घर/
 म परिवर्तन ह जे २१ तुष्ट उदाहरण दृश्य २—

८ २ १ २ * आन्त्रिक ध्वनिलि धानु

मूळ धानु रूप	आन्त्रिक ध्वनि विरर	व्युत्पन्न रूप
कट	अ > आ	काट
नक्		ताक्
मक्		माक्
बक्		बाक्
मट	अ > ण	मट
(घट)	"	घट
सक्	"	सक्
दक्		दक्
कुट	उ > आ	काट
जुन	"	जान्
गप	"	रोप्
गुन्		गव
छट	उ > आ-र > ड	काड
फूट		फाट
बक्	इ > ण-ब > च	बेच
(रक्)		"
रक्	र > त-ऊ > आ-र > र	ताट
बक्	अ > आ-र > र	बाट

बघ	अ > आ	बोँघ
मड	"	मोँड
खच्	"	खोँच

७ २ १ २ ई २ द्वयभरी व्यजनास्त धातुए

द्वयभरी व्यजनान्त धातुआ म आन्तरिक ध्वनि विकार बबल उहा धातुआ म हाता हैं जिनका ध्वन्यात्मक लेखन अ/हप्र/ह अथवा हप्र/हप्र/ह है एव इम ध्वनि विकार म केवल द्वितीय स्वर दीध कर लिया जाना है तथा द्वितीय स्वर यदा हो / अ/ हाता ह । कुछ उदाहरण दृष्टव्य ह—

मूल धातु रूप	आन्तरिक ध्वनिविकार	व्युत्पन्न धातु रूप
उकल	अ > आ	उकाल
नकल	'	नकाल -
बगाड	'	बगाड
नतर	"	नतार
पसर	"	पसार

७ २ २ यौगिक धातुए

मूल धातुओ म प्रत्यया के योग स यौगिक धातुआ का रचना हाती है । धातुओ के अरिक्त सत्ता विशपण, निया विशपण आदि शब्द रूपा म भी प्रत्यय योग से कुछ धातुआ की रचना होती ह । अत यौगिक धातुओ का रचना ध्वनिक दृष्टि से दा भाग म विभक्त किया जा सकता है—

१ प्रेरणाथक धातुए २ नाम धातुए

७ २ २ १ प्रेरणाथक धातुए

मूल धातुआ म / आ/ एव / वा/ प्रत्यया क योग स प्रेरणार्थक धातुओ व्युत्पन्न हाती ह । अत की दृष्टि स प्रेरणाथक धातुआ के दा रूप उपलब्ध हान है—

१ प्रथम प्रेरणाधक धातु ० द्वितीय प्रेरणाधक धातु १ प्रथम प्रेरणाधक धातु द्वारा प्रेरक कता अपन म मित यत्ति का क्रिया कर्न के लिए प्रेरित करना = यथा /छोरें नें पदा/ वाक्य म प्रेरक कता किमी अथ यत्ति का पाठन क्रिया कर्न के लिए प्रेरित करना है । द्वितीय प्रेरणाधक धातु द्वारा प्रेरक कता दूसरे व्यक्ति द्वारा किसी तीसरे व्यक्ति म क्रिया मप तित कर्न की अर्थात् रचना = यथा छोरें न पदावा/ वाक्य म प्रेरक कता किमी दूसरे व्यक्ति क माध्यम म किमी तीसरे स यत्ति कर्न का पठन क लिए प्रेरित करना है ।

बाकानरी म / घ्रा/ प्रथम प्रेरणाधक प्रत्यय ह एव / वा/ द्वितीय प्रेरणाधक प्रत्यय है । धातुघा म प्रत्यय या म पूर्व आ तरिक भूति विकार होता = । कुछ धातु ऐसी भी है जिनम कवन प्रथम अथवा द्वितीय प्रेरणाधक प्रत्यय का योग ही उपलब्ध होता है अन्य धातुघा क ममान प्रयागानुस्य होता प्रथम का प्रयाग उपलब्ध नहा होता यथा १ ग म कवल प्रथम प्रेरणाधक प्रत्यय या म उपलब्ध होता है ग+आ=गआ द्वितीय प्रेरणाधक प्रत्यय का योग उपलब्ध नहीं होता । कुछ धातु ऐसी भी है जिनम प्रेरणाधक रूप उपलब्ध नहीं होता यथा √घ्रा √वा √दा √ही आदि । यहा स्वगत एव व्यजना क धातुघा म प्रथम व द्वितीय प्रेरणाधक धातुघो क उदाहरण प्रस्तुत किय जा रहे हैं ।

७ २ २ १ १ प्रथम प्रेरणाधक धातुएँ

क- स्वगत धातुएँ

स्वगत धातुघा म अधिकतर प्रथम प्रेरणाधक प्रत्यय का योग ही उपलब्ध होता है एव आकारान्त धातुघा म प्रथम या म पूर्व आन्तरिक भूति विकार एव /व/ भूति का आगम उपलब्ध होता है तदुदाहरणस्वरूप /घ्रा>घ/ म परिवर्तित हो जाता = । √घ एव १ घ व १ घा धातुघो म प्रेरणाधक रूपा म एव /माग/ दुप म परिवर्तित हो उपलब्ध होते हैं । यहा कुछ उदाहरण प्रस्तुत किय जा रहे हैं—

मूल धातु	आन्विक ध्वनि विचार	प्रयोगाधिक प्रत्यय	व्युत्पन्न रूप
जा	अ > प्र/ज /व/	घा	जवा
मा	/म "	घा	मवा
गा	/ग "	घा	गवा
इ	×	घा	इघा/इवा
ऊ	\	घा	सूघा/सूवा
सी		घा	साघा/सीवा
दे	र "	घा	दरा/रवा
सू	गाग	×	गेग
धा	'/दुप	—	धादा/दुपवा

व प्रजनात् धातु

प्रजनात् धातुषाम् प्रथम प्रयोगाधिक प्रत्यय ता याश्च ज्ञान पर आन्विक ध्वनि विचार हावा ह त्वाग्निगाभ्रवक्ष्य /मा > प्र अ > ए उ -ओ अ -घा/ म परिवर्तित नो जान के । आन्विकता ता इत्थि म प्रथम प्रयोगाधिक प्रत्यय यात ज्ञान पर एता ता धातु द्वयक्षणे एव द्वय रग धातु नय रग हो जाती । यथा ए म प्रयोगाधिक प्रजनात् धातुषा क मुख्य उदाहरणा प्रस्तुत क्रिय जा रहै —

मूल धातु	आन्विक ध्वनि विचार	प्र प्र प्र	व्युत्पन्न रूप
बट	×	घा	बटा
पट	×	घा	पटा
रट	\	घा	रटा
जान	घा प्र न	घा	नचा
जग	/ज	घा	जगा
चाट	'/च	घा	चटा
पीम	×	घा	पीसा
माच	×	घा	माचा
नीग	×	घा	नीग

पुन	उ > घ्रा/पा	घ्रा	पाना
ग्य	" /रा	घ्रा	गपा
तन	" /ता	घ्रा	नौता
पूड	×	घ्रा	पूटा
पूष	×	घ्रा	पूछा
गूट	×	घ्रा	खूटा
घाट	×	घ्रा	घाटा
टाक	×	घ्रा	टाका
बाच	—	घ्रा	बाचा
मक	घ > ए/सि	घ्रा	मका
बक	' /व	घ्रा	बका
बध	घ > घाँ/बाँ	घ्रा	बाँबा
मन्	' /माँ	घ्रा	माँबा

कुछ एवाचरी व्यजनात घानुघ्रा म प्रथम प्रेरणायक प्रथम / घ्रा/ का
 सपरिवर्तन रूप / घो/ मी उपरान्त हाता है एव प्रत्यय योग मे पूव /ई > घ्र/
 /उ > उ/ घ्रातरिध ध्वनि विचार जाता है यथा—

मन घानु	घ्रातरिध ध्वनि विचार	प्रथम प्रे प्र	उत्पन्न रूप
मीत्र	ई > घ्र/म	घ्रा ~ घ्रा	मजो
मीन	/म		मजा
मूत्र	उ - /म	घ्रा ~ घ्रा	मुका
म्व	/-	घ्रा ~ घ्रा	हुबा

७ ० ० १ २ द्वितीय प्रेरणायक घानुए

द्वितीय प्रेरणायक प्रत्यय योग १ पूव भी घ्रातरिध ध्वनि विचार उत्पन्न-व
 हाता है मत्रा सन्वयन दीप रूप /घ्रा ~ उ/ मत्रा ह्रस्व स्वरा म परि
 वर्तित हो जाना है । यहा मूत्र उच्चारण प्रम्पुन क्रिय जा रहू है—

मूल धातु	आन्तरिक ध्वनि विचार	द्वि प्रे प्र	व्युत्पन्न रूप
पठ	×	वा	पठवा
रट	×	वा	रटवा
सख्	×	वा	सखवा
चाम	घा > घ/च	वा	चमवा
राम	/र	वा	रमवा
धीर	ध > ध/रि	वा	धिरवा
मीच	/मि	वा	मिचवा
मूत	ऊ > उ /मु	वा	मूतवा
गूथ	" /गु	वा	गूथवा
सूब	/सु	वा	सूबवा
उमण	×	वा	उमणवा
नतर	×	वा	नतरवा

यहाँ पर उल्लेख है कि आन्तरिक म बदल द्वि प्रे प्र योग होने पर ही शब्द के आन्तरिक रूपन ह्रस्व /इ/ ध्वनि गुणार्थ पत्नी है अथवा नहीं।

७ २ २ २ नाम धातुएँ

जब सत्ता विभक्ति प्रिया विशेषण आदि म प्रत्यय सलग्न कर धातु रूपा की रचना की जाती है तो उन धातुओं का नाम धातुओं की सत्ता से अभिहित किया जाता है बीकानरी म / आ/ नाम धातु व्युत्पन्न प्रत्यय है। नाम धातुओं के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं—

सत्ता	+	नाम धातु "व्युत्पन्न प्रत्यय"	=	व्युत्पन्न नाम धातु
सरम्		आ		सरमा सरमाव
काम ~ वम		'		कमा, कमाव
बत ~ वत				बता
गत ~ वत		ल/आ ~ आव		बतला वतलाव

सबनाम

घ्राप~घ्रप	रा/भा~घ्राव	घ्रपणा, घ्रपणाव
विशपण		
पाणे	भा~भाव	खाडा खोडाव
घ्रापय		
ऊँर्	भा	ऊँषा
त्रि वि	ना धा ~यु प्र	व्युत्पन्न नाम धातु
सटमट	भा~घ्राव	खटखटा खटपटाव
बटबट	'	बटबटा बटबटाव

बीकारों में कुछ शब्द ऐसे भी हैं जो क्रिया एवं सज्ञा दोनों ही रूपा में रहते हैं। यथा /जणें/ जणें/ की फटकार खोली कायनी/ तथा /भा बन/ फटकार बावना में प्रथम वाच्य में फटकार सनावत प्रयुक्त है एवं द्वितीय वाच्य में क्रिया के रूप में। इसी स्थिति में फटकार सना को मूल आधार मानकर /०/ प्रत्यय योग में नाम धातु व्युत्पन्न स्वीकार की जा सकती है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

सना शब्द	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न नाम धातु
शूक	०	शूक
चूक	०	चूक
बचार	०	बचार
पँचोंरा	०	पँचोंरा

७३ क्रियापद संरचना

धातु में णिट गंधना अंत प्रत्ययों का योग से क्रिया पदों की रचना होती है। रचनात्मक णिट में जीवान्तरा क्रियापदों को भुगतया दा वर्गों में विभक्त किया जा सकता है— १ समापन्न क्रियापद २ असमापन्न क्रियापद ३ समापन्न क्रियापद यावशात्गत वर्तनी धम अथवा भास में अचित रहते हैं एवं असमापन्न क्रियापद सना विशपण अथवा क्रियाविशपणवत प्रयुक्त होने हैं यथा—/छागी नेवनी ही/ नटनी बननी थी वावग में /ध वती/ समापन्न क्रियापद है जिन्में

म निष्ठ प्रत्यय याग से पूर्व /घ/ श्रुति का आगम हो जाता = । वाली म उपलब्ध निम्न रूपों की रचना का विवर्चन इस प्रकार =—

७ ३ १ १ १ १ वतमानकानिच निष्ठत रूप रचना

धानुप्रो म उ पु ण व मे /ऊ/ उ पु ब व म /ओ/ म पु ण व म /ऐ/ म पु घ व म /ओ/ म पु ण व एव व व म /ऐ/ के योग से वर्तमानकानिच निष्ठत रूपा की रचना होती है । इनकी रूप रचना एवं उदाहरण इस प्रकार है—

क रूप रचना

	स्वरान्त धातु ✓ खा		भ्यजनान्त धातु ✓ षट्	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उ पु	खाऊ	खावो	षट्	षटो
म पु	खावे	खावो	षट्	षटो
प्र पु	खावे	खाव	षट्	षट्

ख उदाहरण

/ह ओम्वा खाऊ / मैं ग्राम खाता हूँ / = ओम्वा खावो / हम ग्राम खाने हैं / यू ओम्वा खावे / नू ग्राम खाता हूँ / ये ओम्वा खावो / तुम ग्राम खाने हो / वो ओम्वा खावे वह ग्राम खाता = / वे ओम्वा खावो / व ग्राम खाते हैं / हूँ कतावे षट् / मैं पुस्तक पढ़ता हूँ प्राप्ति ।

त्रिविध परिस्थितियों में वर्तमानकानिच निष्ठत रूपा का प्रायोगिक स्थितिया इस प्रकार =—

१ वर्तमान काल की अपूर्णता या भीत-यत्ना का व्यक्त करने के लिए धातु का नि रूपों का प्रयोग व एव पु के अनुरूप होना है यथा /रियाँ खावे/ हूँ स्नान कर रहा हूँ ।

२ प्रश्नवाचक वाक्यांश में धातु का नि रूपों का प्रयोग होता है यथा—
हूँ खाऊ ?

पत्ना ।

विविध परिस्थितियां में आनायक तिङन्त रूपा की प्रायोगिक स्थिति इस प्रकार है—

१ आदर वाचक वाक्यों में बहुवचन के रूपों का प्रयोग एक वचन में भी होता है यथा—/थ आम्ना / आप आद्य / थ दृष्टिया / 'आप पासना ।

२ पराग विधि के रूपा से उपदेश, प्रार्थना, आना आदि के साथ साथ भविष्यत काल के अर्थ का भी बोध होता है, यथा—/थे आवना आम्ना लाया / आप आत हुए आम लाना'

७ ३ १ १ २ कृदन्त मूलक काल सरचना

बीकानेरी में क्त प्रत्यय चार हैं—१ वतमान कानिक क्त /त / २ भूत कालिक क्त प्रत्यय/र / ३ भविष्यत कालिक क्त प्रत्यय/ण /ळ / ये क्त प्रत्यय वाक्यांतगत लिंग एवं वचन के अनुगुण विभक्ति प्रत्यय ग्रहण करते हैं पुरुष के अनुरूप नहीं । इन क्त प्रत्ययों के योग में निर्मित कालों को कदन्तीय काल कहा जा सकता है । ये क्त प्रत्यय वाक्यांतगत पर्यागानुगुण कही केवल लिंग एवं वचन शीतक विभक्ति प्रत्यय ग्रहण कर अर्थ का बोध कराते हैं एवं कभी कभी लिंग वचन बाधक विभक्तियों के साथ साथ सहायक क्रियाओं का ग्रहण करते हैं । इस आधार पर कदन्तीय कालों का दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—१ मूल कदन्तीय काल २ समुक्त कदन्तीय काल ।

७ ३ १ १ २ १ मूल कृदन्तीय काल

मूल कदन्तीय काल वाक्यांतगत सहायक क्रियाओं का योग ग्रहण नहीं करते । अर्थ की दृष्टि से इनके निम्नलिखित भेद उपलब्ध होते हैं—

- १ भूत पूरण २ भूत अपूरण ३ भवेताथ अपूरण

७ ३ १ १ २ १ १ भूत पूरण

✓ + भू० का० कृ० प्र/घ/+ति० व० बो० प्र० पु० ए०/-

मा /, पु० व०/ मा /, स्त्री० ए० व० / ई /, स्त्री० व० व०/य घो^०
 क याग से मूलपूर्ण लिचदाय रणा का रचना हाती है। पुष्प भद द्रव वात
 के रूपा म गती हाता। यहाँ यह उल्लेखता है कि व्यवसायत धातुओं म
 ति० व० घो० प्र० क याग से पूर्व /य/ क स्थान पर /इय/ का
 याग हाता है एव स्त्री० नि० ए० व० के रूपा म /य/ अथवा /इय/ का
 याग नही हाता। यत्र /-^२ का ही याग हाता है।

एसका रूप रचना एव उदाहरण इस प्रकार है—

य रूप रचना

यजतात धातु य व स्वगत धातु आ

(अ) पु० ए० व० धातु पठ + य + घो = पठिया धातु आ + य + घो
 = माया

(आ) स्त्री० ए० व० धातु पठ + ^२ = पठा धातु आ + ई = माई

(इ) पु० व० व० धातु पठ + इय + घो = पठिया धातु आ + य + घो
 = माया

(ई) स्त्री० व० व० धातु पठ + य + घो = पठिया धातु आ + य + घो
 = माया

ख उदाहरण

ब। पठिया / 'वह पठा /वा पठी, रा म घरे माया / 'राय घर
 माया' /साता अठे मा^२ / गीता यहा गाइ / उ पठिया / 'व प' /वे
 पठियो / 'उ पठी' ।

७, ३ १ १ २ १ २ मूल अपूर्ण

५ + उ० ना० क० प्र०/त/ + ति० उ० घो० प्र० पु० ए० /-घो^०
 /पु० व० / आ/ स्त्री० ए० व० / ^२ / एव स्त्री० व० वचन / य/घा /के योग
 से मूल अपूर्ण क रूपा का रचना होती है। पुष्प भद इस काल के स्त्री
 में नहीं होता। इस रूप सरचना म स्वरात धातुओं म, लिय व० घो० प्र०
 के याग से पूर्व /व/ ध्रुति का योग होता है एव यानात्मक धातुओं म नहीं।
 एसकी रूप रचना क उदाहरण इस प्रकार है—

व्यञ्जनानि धातु लड स्वरात् धातु द्व

(प्र) पु० ण० व० धातु लड + त - प्राँ - लडता धातु द्व + व् + त् + प्राँ
= दूवताँ

(भा) स्वा० ए० व० धातु ल + त + ई = लडती धातु द्व + व् + ती = दूवती

(८) पु० व० व० धातु लड + त + घा = लडना धातु द्व + व् + ता = दूवना

(ई) स्त्री व० व० धातु ल + त + य + प्राँ = लडतयाँ धातु द्व + व् + त् + प्राँ
= दूवयाँ

ख उदाहरण

मातीयाँ लडताँ / मातालाल लडना या / मनडियाँ गायाँ दूवताँ
/ प्रमुक् नाम का व्यक्ति गायेँ दुहता था / गटियाँ र सिवनी का ड रो वास्त
लडना । गटिया और गिरजी चीनी के खानिर लडते थे / 'गीता गयो'
दूवनी / गीता गायेँ दुहती थी ।

७ ३ १ १ २ १ ३ सकेतार्थ अपूर्ण

ए तमूलक भूत अपूर्ण काल के रूपा (पत्ता-पडता आदि) के
माय /-ताँ/ निपात एवम्भूतभूत अपूर्ण के रूप से सकेतार्थ अपूर्ण की रचना
होती है । सन्तार्थ अपूर्ण व भूत अपूर्ण के रूपा म अन्तर उपलब्ध नती
हाला वाक्य गठन म अन्तर उपस्थित जाना है यथा—

क वा ई दापताँ अठ पत्ताँ (वह भी विद्याग यहा पत्ता था)
ख बो पत्ता ता रन क्या हावाँ (वह पडता तो फल क्या
होता)

७ ३ १ १ २ ० सयुक्त कृत्ततीय काल

सयुक्त कृत्तय काल वाक्यान्तगत मूलायक क्रियाप्रा का वाग ग्रहण
कर विविध काला का माय करात हैं । प्रयोग की दृष्टि स इसके चार भेद उप-
लब्ध गत हैं—१ क्तमान कालिक क्त प्रत्यय + सहायक क्रिया । २ भूत
कालिक क्त प्रत्यय + सहायक क्रिया । ३ भविष्यत्कालिक क्त प्रत्यय +
सहायक क्रिया । ४ पूर्वकालिक क्त प्रत्यय + क्रियासमाग + मूलायक क्रिया ।

बोकारेरी म स० क० वा० मे √ ह लय सहायक क्रियाओं का योग रहता है ।
 भत इनकी रूप रचना महा पहल प्रस्तुत की जा रही है । महा यह उल्लेख
 नीय है कि/ह लय/ सत्ताथक तथा /हो/ विकार दशक धातुओं के रूप
 सहायकक्रियाओं के रूप में प्रयुक्त होते हैं ।

१ √ ह वतमान सामा य

	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	हृ	हो
मध्यम पुरुष	हँ	हों
अथ पुरुष	ह	हे

√ ह भूत सामा य

	पु० ए० व०	पु० ब० व०	स्त्री ए० व०	स्त्री० ब० व०
उत्तम पुरुष	होँ था	हा था	हो, थी	हथों० थ्यो
मध्यम पुरुष	,,	,,	,,	,
अथ पुरुष	,	,	,,	,,

[सूचना—बोकारेरी में धातु ह क सपरिवर्तक धातु य का भूत सामा य
 में सम रूप से प्रयोग हाता है यथा हृ हाँ (मैं था), हँ थो (मैं था)]

धातु हो भविष्यत सामा य

	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	होस	होसा
मथम पुरुष	,,	,
अथ पुरुष	होसी	हासी

धातु भविष्यत सभावनाथक

	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	होऊ	होवा
मध्यम पुरुष	हाव	होवाँ
अथ पुरुष	हावें	हावँ

ॐ /ह लय/तथा/ हा/धातुए दो स्वतंत्र धातुए हैं । एक स्थिति सूचक है
 दूसरी दगा या विकार सूचक ।

(धीरे-दरमा हिन्दी भाषा का इतिहास पृ ३०५)

७ ३ १ १ २ २ १ वर्तमानकालिक कृत् प्रत्यय +स क्रि

अय की दृष्टि से व का क प्र +स क्रि के योग से उत्पन्न तीन भेद उपलब्ध होते हैं—१ भूत अपूर्ण २ सदेहाय अपूर्ण ३ सभावनाय अपूर्ण । इनका क्रमिक विश्लेषण इस प्रकार है—

७ ३ १ १ २ २ १ १ भूत अपूर्ण

धातु—व का क प्र भू का पु प्र /-आँ आ/या भू का स्त्री प्र /-ई य/ओ/+धातु के भूत सामान्य क रूपों के योग से भूत अपूर्ण काल की संरचना होती है यथा/हूँ पन्ताँ हाँ/ मैं पन्ता या' न् पन्त्यों प्या / हम पन्ती थी/

७ ३ १ १ २ २ १ २ सदेहाय अपूर्ण

धातु+व का क प्र +भू का पु प्र /-आँ-आ/ या भू का स्त्री प्र /-ई य/ओ/+ धातु ह के भविष्यत सामान्य के रूपों के योग से सदेहाय अपूर्ण काल की रचना हाती है यथा /वाँ पढताँ होसी/ 'वह पन्ता होगा' /व पन्त्यों हासी / वे पन्ती होगी ।

७ ३ १ १ २ २ १ ३ सभावनाय अपूर्ण

धातु + व का क प्र +भू का पु प्र /-आँ-आ/ या भू का स्त्री प्र /-ई य/ओ/+ धातु के भविष्यत सभावनायक के रूपा के योग से सदेहाय अपूर्ण काल की संरचना होती है । वाक्यारम्भ में/ होयसकँ/ या /सायद/ अन्यय का भी प्रयोग जाना है यथा—/सायन हूँ पन्ताँ हाऊ/ 'गायद मैं पन्ता होऊ /होयसकँ' भूँ पन्त्यों' होका/ हो सकता है हम पढती हों' ।

७ ३ १ १ २ २ २ भूत कालिक कृत् प्रत्यय +स क्रि

अय की दृष्टि से भू का क प्र +स क्रि के योग से उत्पन्न चार भेद उपलब्ध होते हैं—१ वर्तमान पूरण २ भूत पूरण ३ सभावनाय पूरण ४ सदेहाय पूरण । इनका क्रमिक विश्लेषण इस प्रकार है—

७ ३ १ १ २ २ २ १ वर्तमान पूरण

धातु+भू क क प्र + लि व बो प्र +धातु ह के वर्तमान

क रूप+घातु ह के वत सा के योग से वतमान पूरा काल की रचना होती है। पूर्वकालिक क प्र /र/व/इ/ का प्रयोग वकल्पिक है, यथा /हैं पडर आया हूँ। 'मैं पडकर आया हूँ।' हूँ पडियाआँ वडियायाँ हूँ। मैं पड कर आया हूँ।

७ ३ १ १ २ २ ४ २ भूतपूर्ण

√ +प का क प्र /र/दा/इ/+ घातु के भू का क रूप + √ ह क भू सा के रूपा के योग से भूतपूर्ण काल का द्योतन हाता है, यथा /जाँ पडर गयाँ थाँ। 'वह पडकर गया था।' हूँ जाइयायाँ था। 'मैं जाकर आया था।

इन रूपों के अतिरिक्त घातु+पू क प्र +वतमान भू भ का क रू +सहायक क्रिया के याग से प्रसगानुत्पन्न क्रिया की पूर्वकालिकता का बोध हाता है। इन प्रयोगों में घातु आ, दे, राख जा, ला, का मयाग मुख्यत होता है यथा -/जाकर आ, जाइया। 'जाकर आओ।' बैठे जावताँ आयर देखे। वहा जाते हुए आकर देखना। अठे राखर दे। 'यहा रखकर दे।' 'लाये।' लाकर दे। देखयो। 'देखकर गया। यही /०/ पूर्वकालिक क प्रत्यय का याग है।

७ ३ १ ० अर्थ

जिस क्रिया व्यापार म विधान की रीति का बाध हो, 'पाकरण के क्षेत्र में उसे 'अर्थ' की सहा से अभिहित किया गया है। व्याकरण ने अर्थ के निम्नलिखित पात्र भेद किये हैं—१ निश्चय २ विषय ३ समावनाथ ४ सदहाथ ५ सनेनाथ।

७ ३ १ २ १ निश्चयार्थ

जिस व्यापार द्वारा विधान का निश्चय 'यक्त होता है उसे निश्चयार्थ कहते हैं। इनके द्वारा निश्चय, अवधारण एवं अभ्यास का बाध होता है। बीकानेरी वाली म निश्चयार्थ के उपलब्ध रूप निम्नलिखित है—

वतमान सामान्य, भविष्यत सामान्य वतमान अपूर्ण भूत अपूर्ण, वत

मान पूरा मूत पूरा के रूपों में निश्चाय का बोध होता है। इन सभी रूपों का निश्चितमूलक काल सरचना एवं पत्र तमूलक काल सरचना में विभक्त पण किया जा चुका है। यहाँ यह विशेष उल्लेखनीय है कि बोली में उप-युक्त रूपों के साथ-ईश/प्रत्यय व त्रिप्रायक मन्त्र के साथ /पठ/ए/ला, सा ई ल्यो / का प्रयोग विगणन होता है यथा -/पत्रीश्रीज/ /पत्रा पठेला/प्राप्ति।

७३१०२ विध्यथ

जब वाक्यात्गत कत व परायणता अथवा टाविर्य हेतु किसी प्रकार का आदेश हो तो उसे विनय की सहा स अभिहित किया जाता है काय सपादन की प्रत्येकता अथवा अप्रत्येकता व आचार पर इनके भा होते हैं—१ प्रत्येक विध्यथ ० अप्रत्येक विध्यथ। इसका विश्लेषण आनावक तिष्ठतमूलक काल सरचना में किया जा चुका है।

७३१२३ सभावनार्थ व सदेहार्थ

जब वाक्यात्गत काय यापार की रीती द्वारा काय की सभावना का बोध होता है तो उस सभावनाथ की सहा दी जाती है। एवं जब सदेह का बाध होता है तो उसे सदेहार्थ की सहा दी जाता है। इनका विश्लेषण काल सरचना में किया जा चुका है।

७३१२४ सकेतार्थ

सकेताथ द्वारा त्रिया की दो घटनाओं की असिद्धता का सकेत मिलता है जिनका पारस्परिक काय कारण सम्बन्ध विवक्षित हो। सकेताथ का भी विश्लेषण काल सरचना में किया जा चुका है।

७३१३ वाच्य

बीकानेरवाली में भारतीय श्राय भाषाओं के समान तीन वाच्य प्रयुक्त होते हैं—१ क्तु वाच्य २ कर्मवाच्य ३ भाववाच्य। त्रिया के जिस रूप से यह बोध होता है कि वाक्य का उद्देश्य त्रिया का कर्ता है तब उसे

कत वाच्य क्तन हैं । जिस रूप से यह बोध हाता है नि वाक्य का उद्देश्य क्रिया का कम है तब उसे कम वाच्य कहते हैं । क्रिया क जिस रूप से यह जाना जाता है कि वाक्य का उद्देश्य क्रिया का कर्ता अथवा कम नहीं है अपितु क्रिया स्वतंत्र पद्धति ग्रहण करती है तब उसे भाव वाच्य कहते हैं । क्तन वाच्य में क्रियाओं सक्रमक और अक्रमक दोनों हा सकती है परंतु कम-वाच्य तथा भाववाच्य में क्रिया अथवा सक्रमक तथा अक्रमक हाती है । ❧

बीकानेरी वाली में कमवाच्य के कुछ रूप परंपरित अथात मस्कत भाषा के अनुसूच कमवाच्य में कता करण कारक में एव क्रिया कम के अनुसूच ग्रहण करती है यथा—/ म्हसू राटी खाईजगी । 'मरे द्वारा रोटी खाई गई ।' / म्हसू राटियाँ खाईजगी । 'मरे द्वारा राटिया खाई गई । एव कुछ रूप स्वकीय विकसित प्रवृत्ति लिए हुए हैं अथात क्रिया ता कम के अनुसूच है पर कता का करण कारक में नहीं हाता यथा/ ह देखियाँ गो गो या खोजियाँ में दखा गया । भाव वाच्य के रूप परंपरानुसूच ही है अर्थात कर्ता में तृतीया एव क्रिया अ पु ण व म । यहा बाती में वाच्य एव अथ के अनुसूच उपलब्ध कमवाच्य एव भाव वाच्य क रूप अथवा प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।

७ ३ १ ३ १ तिड-तीथ काल वर्तमान सामान्य

(क) कमवाच्य

कर्ता करण कारक + √ + वाच्य बाधक अ /ईज/* + अ पु वा ति प्र /ँ/ क याग से या √ + ईज + कम के अनुसूच व का क्रिया क भाग से वर्तमान सामान्य क कम वाच्य की रचना होती है यथा—/ म्हसू आँम्बाँ खाईजँ / 'मरे द्वारा आम खाया जाता है । / ह देखीजू । ' मैं दखा जाता हू । ' म्हे देखीजो । ' हम देखे जाते हैं । ' अस रूप में कर्ता

❧ कामता प्रगाद गुरु हिन्दी वाकरण, पृ ०६

* बीकानेरी में कमवाच्य एव भाववाच्य बाधक प्रत्यय /ईज/ का भीधा विकास मस्कत क कम एव भाववाच्य क र्ता में है यथा स पठयने पजिजइ पनीजे ।

लुप्त रहता है ।

(ग) भाववाच्य

कर्त्ता करण कारक + √ + वा वा प्र / ईज / + अ पु वा ति
प्र / ऐं / के योग से वनमान सामा य भाव वाच्य क र्त्ता की रचना होती
है, यथा—/म्हूँ चालीजँ क यी ।' मेर स चला नहा जाता ।

७ ३ १ ० १ २ भविष्यत् सामान्य

(क) कर्मवाच्य

कर्त्ता करण कारक + धातु + वा वा प्र / ईज / + अ पु वो ति
प्र / सी / म या √ + वा वो प्र / ईज / + कर्म के अनुरूप भ सा कि
रूप के योग से कर्मवाच्य भविष्यत् सामा य के रूपों की रचना होती है,
यथा—/म्हूँ रोटी खाईजती । मेरे द्वारा रोटी खाई जायेगी ।' हरियू
ग्राम्बा खाईजती । हरि स ग्राम गये जायेंगे ।' हूँ दखीजती । मैं देना
जाऊंगा । व दवाजती । वे देन जायेंगे ।

(ख) भाववाच्य

कर्त्ता करण कारक + धातु + वा वो प्र / ईज / + अ पु
वो ति प्र / सी / के योग से भाव वाच्य भविष्यत् सामा य के रूपों की
रचना होती है यथा— / वसू चालीजती कोयनी / तेरे से चला नहीं
जायेगा ।

७ ३ १ ३ १ ३ भविष्यत् सभावनाथ

कर्म वाच्य

कर्त्ता करण कारक + धातु + वा वो प्र + / ईज / + जा धातु
के अ पु ति ति ए व के रूपों से या धातु + वा वो प्र / ईज /
+ कर्म के अनुरूप व वा ति रूप या धातु + वा वो प्र / ईज / + जा
धातु के व वा ति रूप से कर्म वाच्य भविष्यत् सामा द क रूपों की
रचना होती है यथा / सायद् म्हेनू प्रा म्बा खाईज जावँ / शायद मेरे
ग्राम ग्वाए जाय / शायद वसू पोँली पीज जावँ / शायद उससे पानी
पिया जावँ / सायन् हूँ देखीजू / शायद मैं देखा जाऊँ । सायद म्हे देखीजाँ
शायद हम देखे जायें / सायद हूँ देखीज जाऊँ । दोनों ही रूप बोली म

प्रचलित है ।

७ ३ १ ३ २ कृदन्तीय काल

७ ३ १ ३ ० १ मूल कृदन्तीय काल

७ ३ १ ३ २ १ १ भूत पूर्ण

कमवाच्य

कता करण कारण + धातु + वा वा प्र + / ईज/ + कर्मानुरूप धातु ग के भूतकालिक रूप स या धातु + वा वा प्र / ईज/ + कर्मानुरूप धातु ग के रूपों के याग से कमवाच्य भूतपूर्ण की रचना होती है यथा— /मैंसू कताई पट्टीजगी / मेरे से पुस्तक पटी गई । येँसू पाँणा पीज ग्याँ / 'तेरे से पानी पिया गया' /हू देखीजग्याँ / मैं देखा गया । स्वराधात, वनाधात एव स्वरा के आरोह अवरोह के आधार पर उन रूपा से प्रश्नवाचकता एव आश्चय का भी बोध हाता है, यथा—/येँसू दूध पाज ग्याँ ? / तेरे स दूध पिया गया क्या ? / वँसू खाईज ग्याँ/आश्चय/उससे खा लिया गया ।

भाववाच्य

धातु+वा वा प्र /ईज/ + धातु ग कर्मानुरूप भूतकालिक रूपों से भाव वाच्य भूतपूर्ण की रचना होती है यथा—/येँसू चालीज ग्याँ/ तेरे से चला गया ।

७ ३ १ ३ २ १ २ भूत अपूर्ण

कमवाच्य

धातु + वा वा प्र /ईज/ + व वा व प्र /त/ + कर्मानुरूप भू का लिंग वचन वा० प्रत्यय के याग से कमवाच्य भूत अपूर्ण की रचना हाती है यथा—/येँसू घाँम्वा खाईजता / 'उसम भ्राम खाये जान थे / येँसू स'योँ खाईजत्याँ कोपनी / उससे सेवेँ नहीं खाई खाती थी'

भाववाच्य

धातु + वा बो प्र / ईज / + व का क प्र / त् / +
 मू का प्र / आ / के योग से भाव वाच्य भूत अपूर्ण की रचना होती है,
 यथा म्हासू चालीजतो / मुझ से चला जाता था ।

७ ३ १ ३ २ १ ३ सकेताथ अपूर्ण

कमवाच्य

धातु + वा वा प्र / ईज / + √ जा + व वा क
 प्र, / त / + निग वचन बो प्रत्यय / प्रा, आ ई य आ / + / ताँ /
 निपात क योग से सकेताथ अपूर्ण कमवाच्य की रचना होती है यथा- / जे देसू
 आँम्बा राईज जावता ता ठीर रँवता / 'यदि उससे ग्राम छाये जाते तो
 भ्रष्टा रहता'

भाववाच्य

धातु + वा बोष प्र / ईज / + धातु हो + व
 का क प्र / त / + / पाँ / + / ता निपात के योग से भाववाच्य भूत
 ताथ अपूर्ण की रचना होती है यथा- / जे सीता मू चालीजतो हा वता तो
 म्हेँ नयो बँठती / 'यदि सीता से चला जाता होता तो यहाँ नया बँटती ।

७ ३ १ ३ २ २ सयुक्त कृदन्तीय काल

७ ३ १ ३ २ २ १ वर्तमानकालिक कृत् प्रत्यय + सहायक क्रिया

७ ३ १ ३ २ २ १ भूत अपूर्ण

कमवाच्य

धातु + वा बाध प्रत्यय / ईज / + व का क प्र / त / + तिग
 वचन बाध प्रत्यय + धातु ह क भूत सामान्य क म्हाँ के योग से भूत अपूर्ण
 कमवाच्य की रचना होती है । √ ह का प्रयोग वक्त्रिय एय बन्धापात
 पर निभर है । यथा / म्हासू राटी म्हाईजतो हा / 'मर द्वारा राटी म्हाई
 जाती थी / हू देसोजता हा / मैं देखा जाता था ।

भाववाच्य

धातु + वा बो प्र /ईज/ + व वा कृ प्र /त्/ + /प्रो/
 + धातु ह भूत सामान्य के रूपों के योग से भाववाच्य भूत अपूर्ण का सरचना
 होती है, यथा- /मैं मू चालीजता हों था / मुझ से चला जाता था ।

७ ३ १ ३ २ २ १ २ समावनाय अपूर्ण

भाववाच्य

धातु + वचाय बो० प्रत्यय / + व वा व प्र /त्/ + लिंग
 वचन बोध प्रत्यय + धातु ह भविष्यत् समावनार्थ के रूपा के वाग से सभाव-
 नाय अपूर्ण कर्मवाच्य की रचना हाती है, यथा/सायद मैं मू रोटी खाईजती
 हाव / शायद मेरे से रोटी खाई जाती हो / सायद हू देखीजता हऊ / शायद
 मैं देखा जाता हऊ / हायसके मैं पत्न्यां हावों / हो सकता है हम पढ़नी हों ।

भाववाच्य

धातु + वा बो प्र + व वा क प्र + प्रो / + धातु
 हो भविष्यत् समावनार्थ अ पु के रूपों के वाग से भाव वाच्य समावनार्थ
 अपूर्ण काल की रचना होती है, यथा हायसके मैं मू चालीजता हों / हो
 सकता है मुझ से चला जाता हो ।

७ ३ १ ३ २ २ १ ३ सदेहार्थ अपूर्ण

कर्मवाच्य

धातु + वा बो प्र, /ईज/ + व वा क प्र /त्/ + लिंग
 वचन बोध प्रत्यय + धातु हो भविष्यत् सामान्य के रूपों के योग से सदे-
 हाय अपूर्ण कर्मवाच्य की रचना हाती है, यथा / वे मू कताब्यो पढी
 जनी का हामी नी / 'उससे पुस्तकें पनी नहीं जाती हामी । / हू देखीजतां
 होइस / मैं देखा जाता हूँगा ।

भाववाच्य

धातु + वा बो प्र /ईज/ + व वा क प्र /त्/ + /प्रो/

+ हो धातु के भविष्यत् सामान्य अ पु के रूपों के योग से भाववाच्य सदेहाय अणुए काल की रचना होती है, यथा बँसू चालीजतो होसी/‘उससे चला जाता होगा’

७ १ ३ २, २ ० भूतकालिक कृत् प्रत्यय + सहायक क्रिया

७ ३ १ ३ ० २ २ १ सभावनाथ पूर्ण

कमवाच्य

धातु + वा बा प्र / ईज / + धातु ग से भूतकालिक रूपों का सश्लिष्ट प्रयोग + धातु हो से सभावनाथ पूरा कमवाच्य की रचना होती है, यथा—/बोसू घर आईज्या होवे / उनसे घर अया गया हो’ हू देखीज्या होऊ / मैं देखा गया होऊ ।

भाववाच्य

धातु + वा बो प्र / ईज / + धातु ग के भूतकालिक रूप का सश्लिष्ट प्रयोग + धातु हो के सभावनाथ रूपों के योग से सभावनाथ पूरा भाववाच्य की रचना होती है, यथा /बँसू चालीज्या हावे’ । उससे चला गया हो ।

सदेहाथ पूण

कमवाच्य

धातु + वा० बो० प्रत्यय / ईज / + धातु ग के भूत का रूप + धातु हो भविष्यत् सामान्य के रूपों के योग से सदेहाथ पूरा कम वाच्य की रचना होती है, यथा— /महेस गलती हायगी होसी । मुझ से गलती हो गई होगी /हूँ दखीज्या होस्त / मैं देखा गया हूँगा ।

भाव वाच्य

धातु + वा० बो० प्रत्यय / ईज / + धातु ग के भू का रूप + धातु हो भ सा अ पु क योग से भाववाच्य सदेहाथ पूरा की रचना होती है, यथा—/बँसू चलीज्या होसी / मुझ भ चला गया होगा’

७ ३ १ ४ लिंग, वचन, पुरुष

बोकाबेरी म लिंग, वचन, पुरुष विधायकरूप निम्नलिखित है—

मूलकाल
निहमूलक

पुरुष	वतमान सामान्य		भविष्यन् सामान्य	
	एक व०	बहु व०	एक व०	बहु व०
उ० पु०	-/ऊ/	-/घोँ/	-/स/	-/स/घोँ/
म० पु०	-/ए/	घाँ/	„	-/स्/घोँ/
म० पु०	-/एँ/	एँ/	-/म/ई/	-/म/ई/
	आनायक रूप		भविष्यन् मभावनाय	
	एक व०	बहु व०	एक व०	बहु व०
प्र० म० पु०	-०	-पाँ	उ० पु०	-/ऊ/ -/व/घोँ/
प० म० पु०	/ए/	/दप्र/ए/ य/घा/	म० पु०	/व/ए/ -/व/घाँ/
			म० पु०	/व/एँ/ -/व/एँ/

कृत मूलक

लिंग	भूत सामान्य स्वरान धातु		भूत सामान्य व्यञ्जनात् धातु	
पुल्लिङ्ग	/य/घाँ/	-/य/घा/	-/इय/घाँ/	-/इय/घा/
स्त्रीलिङ्ग	-/ई/	/य/घाँ/	-/इ/	-/य/घाँ/

७ ३ २-असमापक त्रियापद

धातुधा के पञ्चान्त व का भू का भका एव पू का प्रत्यया व नि व वा प्रत्यया के याग से असमापक त्रियापदों (बन्त पदों) की रचना होता है। इन त्रियापदों का प्रयोग अथ पद भेदा (सना विभेदण, क्रिया विभेदण आदि) की भांति होता है। रूप गणन की दृष्टि से असमापक त्रियापदों को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है— १ परिवर्तनशील असमापक त्रियापद २ अपरिवर्तनशील असमापक त्रियापद। परिवर्तनशील असमापक त्रियापदों का प्रयोग सामान्यतः सना अथवा विभेदणों की भांति होता है। इस आधार पर इसका तीन बग बनाए जा सकते हैं—

1 भविष्यत् कालिन् क्त प्रत्यय /ण/ के याग से निष्पन्न सनाय या विशेषणायक असमापक क्रियापद 2 वतमानकालिक क्त प्रत्यय, /त/ के योग से निष्पन्न अपूर्ण विशेषणायक असमापक क्रियापद 3 भूतकालिक क्त प्रत्यय /य/इय/ के योग से निष्पन्न पूर्ण विशेषणायक असमापक क्रियापद अपरिवर्तनशील असमापक क्रियापदों का प्रयोग साधारणतः क्रियाविशेषणों की भांति होता है । इमकं पूर्वकालिकता एव तात्कालिकता के आधार पर दो दो वर्ग बनाए जा सकते हैं । पूर्वकालिक क्रियाविशेषणायक अस० क्रियापद 2 तात्कालिक क्रियाविशेषणायक अस० क्रि ।

७ ३ २ १ परिवर्तनशील असमापक क्रियापद

७ ३ २ १ १ सञ्ज्ञार्थक असमापक क्रियापद

✓ + भ का क प्र /ण/ + मू आ वि प्र /मा / ति आ वि प्र /एँ/ के योग से पुलिग सञ्ज्ञायक अस० क्रि की रचना होती है । स्त्री में इन रूपा की रचना नहीं होती । कुत्र उदाहरण इस प्रकार है—घारे पडणें मे कई फायदा कायनी । बठठें घारा जावणों ठीक देसी । वहा तुम्हारा ठीक रहेगा । वहा तुम्हारा जाना ठीक रहेगा । घारे जावणें मे कई फायदों कायनी । तुम्हारे जान मे बाई फायदा नही है ।

७ ३ २ १ २ अपूर्ण विशेषणायक असमापक क्रियापद

✓ + /इ/ विवरण + भ का क प्र /ण/ + मू आ वि प्र /मा/ ति आ वि प्र /ए/ के योग से पुलिग विशेषणायक अस० क्रि की रचना हीनी है । यथा—/ छारों पडगियां होवणों चईजे । लडका पडने वाला होना चाहिये । पडगिया छ रा कदे फेल को होवेंनी । पडने माला लडका कभी पल नहीं होता ।

७ ३ २ १ ३ अपूर्ण विशेषणार्थक असमापक

धातु + व का क प्र /त/ + लि क वो प्र, /मा, मा, ई, य/ माँ/ के योग से अपूर्ण विशेषणायक असमापक क्रियापद सप्त होते हैं, यथा/बडने छोरें न बचा। 'जतते लडके को बचामो ।

७ ३ २ १ ४ पूर्ण विशेषणार्थक असमापक क्रियापद

धानु + नू का क प्र /य्/इय्/ + स्वायक प्रत्यय /ओ/ड/
+ निय वचन बा० प्रत्यय के याग से पूर्ण विशेषणार्थक अस क्रिया की
रचना होती है यथा—/भोमियोडी दाळ मत खाए/ 'मिसी दाल मत खाना'
इसी प्रकार दळियाटा, दळियोडी ग्यायाडी, मारियोडी आदि ।

७ ३ २ २ अपरिवर्तनशील असमापक क्रियापद

७ ३ २ २ १ पूर्वकालिक क्रियाविशेषणार्थक असमापक क्रियापद

धानु + पूर्वकालिक वनप्रत्यय /र/क याग से पूर्वकालिक क्रिया विशेष-
णार्थक असमापक क्रियापदों की रचना होती है । इनका रूप गठन द्विप्रकारीय है—
१ धानु + पू का क प्र /र/ २ धानु + नि व वा परा (पु ए व), परी
(स्त्री एक वचन), परा (पुंल्य बहु वचन) + परया (स्त्री बहु वचन)
+ पू का क प्र /र/ दोनों ही प्रयाग वाली में समरूपेण प्रचलित है,
यथा—/पू पढ पराँर आए, पू पढर आए । तू पढकर आना । तू वर
देखपरीर, देखर आई हू / मैं वहा लवकर आई हू ।

७ ३ २ २ २ तात्कालिक क्रियाविशेषणार्थक असमापक क्रियापद

धानु + वतमानकालिक वन प्रत्यय /त/ + मू आ वि प्र
/ए/ + तात्कालिक वन प्रत्यय /इ/ के योग से तात्कालिक क्रिया विशेष-
णार्थक असमापक क्रियापद की रचना होती है, यथा—/जरपर डगतेई मरगरी
साप के डसते ही मर गया ।

७ ४ सयुक्त क्रिया

सयुक्त क्रियाओं में मुख्य क्रिया का कोई बदल रहता है और सहकारी क्रिया के काल के रूप रहते हैं। जहाँ बदल की क्रिया मुख्य होती है और और काल की क्रिया उस बदल की विवेचना सूचित करती है, वही दोनों को सयुक्त क्रिया कहते हैं। यह बात वाक्य के अर्थ पर अवलंबित रहती है। इसलिए सयुक्त क्रिया का निश्चय वाक्य के अर्थ पर से करना चाहिए। वस्तुतः सयुक्त क्रियाओं में अभिप्राय ऐसी दो क्रियाओं के सखिलष्ट योग से है जिनका योग होने पर एक क्रिया मुख्य एवं दूसरी गौण हो जाती है तथा अभिन्न अर्थ की अभिव्यक्ति होती है। बीकानेरी सयुक्त क्रियाओं को योग प्रथम एवं प्रयोग के आधार पर दो वर्गों में विभक्त कर सकते हैं। १ मुख्य क्रियापद + गौण क्रियापद = सयुक्त क्रिया २ बदल तीय रूप + सहकारी क्रिया = सयुक्त क्रिया।

७ ४ १ मुख्य क्रिया + गौण क्रिया = सयुक्त क्रिया

बगाड	दी (मू का)	बगाडदी
मूल	जा (वि प्र वि)	मूल जा
क	-राख (प्र वि)	के राख
डूब	-ग्या (मू वा)	डूबग्यो
पूट	ग्या (मू वा)	पूटग्या
मल	ग्या (मू वा)	मलग्या

७ ४ २ कृदन्तीय रूप + सहकारी क्रिया = सयुक्त क्रिया

पढ़ता	जा	-पढ़ता जा
देखता	र	देखता र
मुगता	जा	मुगता जा
जाबण	लागी	जाबण लागी
गुमण लन	दे	गुमदे

अध्याय / ८

वाक्य सरचना

८ १ सामान्य विवेचा

वाक्य आकाक्षा, योग्यता एवं सन्निधि स युक्त पदों का सघात है, वह प्रतिभाज्य, एकायक व पूण भावाभिव्यक्तक भाषायी चरम इकाई है। भारतीय वाक्यशास्त्र में सभ्यतसवप्रथम वातिककार ने वाक्य के स्वरूप का प्रतिपादन किया। उनके अनुसार 'आख्यात साययकारकविशेषण वाक्यम्। एकतिड*' अर्थात् साध्यक, सकारक, सकारकविशेषण और सत्रिपात्रिशेषण आख्यात वाक्य है। जमिनि के अनुसार वह पद समूह वाक्य है जो एकायक हो और निम्न दशा में साक्षात् हो — 'अर्थैकत्वादेक वाक्य साक्षात् चेद् विभागे स्यात्*' कान्तान्तर में वाक्य-स्वरूप-प्रतिपादन के सम्बन्ध में आठ मतवाद प्रचलित हुए जिनका भत हरि ने निम्नलिखित कारिकाओं में निर्देश किया है।

आख्यातान्तरं सघातो जातिसघातवर्तिनी ।

एकोऽनवयवस्य क्रमो बुद्धयनुमहति ॥

पदमाद्यप्यथकसवपदसाक्षात्मित्यपि ।

वाक्यप्रतिभतिभिर्ना बहुधा व्यायवादिनाम् ॥*

भत हरि द्वारा उक्त कारिका में निर्दिष्ट आठ मतवादों के अनुशीलन से विदित होता है कि तत्काल में वाक्य के सम्बन्ध में अल्पद पक्ष एवं खण्ड पक्ष दो वाद प्रचलित थे जिनका पुष्पराम ने भा उल्लेख किया है।*

1 वातिक, महाभाष्य 2/1/1/

2 जमिनि, भीमाता सूत्र 2/1/46

3 भतहरि वाक्यपदीयम्

4 डा राममुरेश त्रिपाठी संस्कृत व्याकरण दशम पृ 334

७ ४ सयुक्त क्रिया

सयुक्त क्रियाओं में मुख्य क्रिया का कोई कद त रहता है और सहकारी क्रिया के काल के रूप रहते हैं । जहाँ कद त की क्रिया मुरप हाती है और और काल की क्रिया उस कद त की विनैयता सूचित करता है, वही दोनों का सयुक्त क्रिया कहने हैं । यह बात वाक्य के अर्थ पर अवलंबित रहती हैं । इसलिए सयुक्त क्रिया का निश्चय वाक्य के अर्थ पर से करना चाहिए । वस्तुतः सयुक्त क्रियाओं में अभिप्राय ऐसी दो क्रियाओं के सजिलष्ट योग से है जिनका योग होने पर एक क्रिया मुरप एव दूसरी गौण हो जाती है तथा अभिनेय अर्थ की अभि यक्ति होती है । बीजानेरी सयुक्त क्रियाओं को योग क्रम णव प्रयोग के आधार पर दो वर्गों में विभक्त कर सकते हैं । १ मुख्य क्रियापद + गौण क्रियापद = सयुक्त क्रिया २ कद तीय रूप + सहकारी क्रिया = सयुक्त क्रिया ।

७ ४ १ मुख्य क्रिया + गौण क्रिया = सयुक्त क्रिया

बगाड	दो (मू का)	बगाडदी
मूल	-जा (वि प्र वि)	मूल जा
के	-राख (प्र वि)	कराख
दूब	-ग्या (मू का)	दूबग्यो
पूट	ग्या (मू का)	पूटग्या
मल	ग्या (मू का)	मलग्यो

७ ४ २ कदन्तीय रूप + सहकारी क्रिया = सयुक्त क्रिया

पढ़ता	जा	-पढ़ता जा
देखता	र	देखता र
मुणता	जा	मुणता जा
जावण	लागी	जावण लागी
गुमण ल न	र	गुमण र

अध्याय / ८

वाक्य सरचना

८ १ सामान्य विवेचन

वाक्य आकाशा, योग्यता एवं सन्निधि से युक्त पदों का सघात है, वह अविभाज्य, एकाधिक व पूर्ण भावाभिव्यक्तक भाषायी चरम इकाई है। भारतीय वाक्यशास्त्र में सभवनसवप्रथम वातिककार ने वाक्य के स्वरूप का प्रतिपादन किया। उनके अनुसार 'आख्यात साध्यकारकविशेषण वाक्यम्। एकतिङ्' अर्थात् साध्य, सकारक, सकारकविशेषण और सत्रियाविशेषण आख्यात वाक्य है। जमिनि के अनुसार वह पद समूह वाक्य है जो एकाधिक हो और विभक्त दशा में साक्षात् हो—'अर्थैकत्वादक वाक्य साक्षात् चेद् विभागे स्यात्' कानांतर में वाक्य-स्वरूप-प्रतिपादन के सभ में अठ मतवात् प्रचलित हुए जिनका मत हरि ने निम्नलिखित कारिकाओं में निर्देश किया है।

आख्यातान् सघातो जातिसघातवन्ति ।

एकोऽनवयव गन्तुमा बुद्धयनुमहति ॥

पदमाद्य प्रथकसवपद साक्षात्मित्यपि ।

वाक्य प्रति मतिभिर्ना बहुधा यावदादिनाम् ॥*

मतहरि द्वारा उक्त कारिका में निश्चित अठ मतवादों के अनुशीलन से विदित होता है कि तत्काल में वाक्य के सभ में अखण्ड पञ्च एवं खण्ड पञ्च का वाद प्रचलित थे जिनका पुण्यराज ने भी उल्लेख किया है।*

1 वातिक महाभाष्य 2/1/1/

2 जमिनि, मीमांसा सूत्र 2/1/46

3 मतहरि वाक्यपदीयम्

4 डा रामसुरेश त्रिपाठी संस्कृत व्याकरण दशम पृ 334

-1 बाँ जाती (माया) 2 बाँ जाती (घारव्य)

3 बाँ जाती (प्रश्न) 4 बाँ जाती (नेत्र) 5 बाँ जाती (मुग्धुक्त घृणा)

6 बाँ जाती (निश्चय)

उपसुक्त उदाहरण में प्रथम वाक्य में सुरलहर की दृष्टि से दानी पदा की स्थिति सामा य है । द्वितीय वाक्य में /बाँ / प० की स्थिति घारोह मूलक व बन युक्त ए० /जाँमी / प० की अवरोहमूलक व बन रहिन है । जिससे आश्चर्य का भाव व्यक्त होता है । तृतीय उदाहरण में /सी / की स्थिति घारोहमूलक एव बलपूर्ण है जिससे प्रश्नवाचकता का बाध होता है । चतुर्थ उदाहरण में /सा / की स्थिति अवरोहमूलक है एव बन रहिन है जिससे रोद का भाव अभिव्यक्त होता है । पंचम उदाहरण में /जा / ए० /सी / दाना का स्थिति अवरोह मूलक एव बलात्मक है । इसके उच्चारण में बला मुदा को भी व्यक्त कर लेता है इससे घृणा का भाव अभिव्यक्त होता है षष्ठ उदाहरण में /सी / की स्थिति अवरोहमूला है । इससे निश्चय का बोध होता है ।

इस उदाहरण में सुर लहर के साथ साथ बला की मूल मुदा भी विविध प्रकारीय भावा की अभिव्यक्ति में सहायक होती है ।

८३ वाक्य वर्गीकरण

रचनात्मक दृष्टि से बीकानेरी वाक्यों का निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है- 1 साधारण वाक्य 2 मिश्रवाक्य 3 संयुक्त वाक्य

८३ १ साधारण वाक्य

त्रिगण्ड की परतता व अ परतता के आधार पर इसके दो भेद बनाए जा सकते हैं- 1 अ परत त्रिधा वान साधारण वाक्य 2 एक त्रिधा वाने साधारण वाक्य ।

८३ १ १ अव्यक्त क्रिया वाले साधारण वाक्य

इस प्रकार के वाक्य आह्वानवाची होते हैं । इस प्रकार के वाक्यों में मात्र उद्देश्य ही व्यक्त रहता है विधेय नहीं । इसके दो उदाहरण दिये जा सकते हैं—

1 सम्बोधन पद रहित मना जाने आह्वान वाक्य

2 सम्बोधन पद सहित सजा वाले आह्वान वाक्य

८३१११ सम्बोधन पद रहित सजा वाले आह्वान वाक्य

इस प्रकार के वाक्या में दूरस्थ व्यक्ति के आह्वान में सुर लहर की स्थिति आरोह मूला हाती है तथा श्रोता की प्रतिक्रिया /आयो/ /हो/ होती है यथा—/मदन/ /हो आया/ दूरस्थ व्यक्ति के आह्वान में बल की स्थिति प्रत्य वगैरे पर हाती है। निकटस्थ व्यक्ति के आह्वान में सुरलहर की स्थिति प्रदरोह मूला एव बल रत्न हाती है तथा श्रोता की प्रतिक्रिया /हैं, हो/ हीती है, यथा—/मदन/ /हूँ, हाँ/

८३११२ सम्बोधन पद सहित सजा वाले आह्वान वाक्य

इस प्रकार के वाक्यों में /आ/, /आँ/, /ए/ /एँ/ /अरे/, /रे/ सम्बोधन पदों का सजा प 1 के साथ प्रयोग होता है। /अरे/ का प्रयोग वाक्य के आरम्भ में तथा /रे/ का प्रयोग वाक्य के अंत में होता है यथा /अरे/ मदन/ /मदन रे/ नेप /आ/ /आँ/ /ए/ /एँ/ का प्रयोग निकटवर्ता एव दूरवर्तीता पर आधत है। यदि निकटवर्ती का आह्वान करना या पुकारना होगा तो /आ/ /ए/, /आँ/ /एँ/ का प्रयोग पहले होगा। साथ ही /आ, आँ, ए, ए/ का प्रयोग श्रोता पर आधत है। जो इस प्रकार यदि श्रोता एक बार से प्रत्युत्तर दे देना है तो /ओ/ /ऐं/ का ही प्रयोग होता है पर श्रोता के प्रत्युत्तर न देने पर द्वितीय बार /आ/ /ए/ का प्रयोग हाता है। /ओ/ का प्रयोग पुलिग के लिए एव /ए/ का प्रयोग स्त्रीलिग के लिए होता है यथा /आँ मदन/ /हैं/ /आँ मदन ओ मदन /हूँ/ एँ सीता ए सीता हैं/ दूरस्थ व्यक्ति के आह्वान में /आँ, ओ, ऐं ए/ का प्रयोग पदचातवर्ती हाता है, यथा /सीता ए/

८३११२ व्यक्ति क्रिया वाले साधारण वाक्य

व्यक्ति क्रिया वाले वाक्यों के ये प्रकार हैं—1 मात्र क्रिया वाले

वाक्य 2 आपायक प्रत्ययात् वाक्य 3 स-देहात्मक वाक्य 4, प्रश्नवाचक वाक्य 5 निषेधात्मक वाक्य 6 बलात्मक वाक्य ।

८ ३ १ २ १ मात्र क्रिया वाले वाक्य

इस प्रकार के वाक्यों में मात्र एक ही क्रियापद द्वारा आज्ञा, आग्रह, घृणा, तिरस्कार आदि भावों का व्यञ्जना होती है । यथा /पठ/ क्रियापद के सामान्य प्रयोग से प्रेरणा, बलात्मक प्रयोग से प्रत्यक्ष आज्ञा, द्विरुक्ति मूलक प्रयोग से त्वरितता आदि भाव व्यक्त होते हैं ।

८ ३ १ २ २ आज्ञार्थक प्रत्ययात् वाक्य

अथ एक सुर लहर के आरोह-अवरोह के आधार पर इसके तीन भेद हैं—1 धीर सुरात् /—▷/ वाक्य 2 अवरोही सुरात् वाक्य 3 अवरोही + वाक्य । इनका विश्लेषण इस प्रकार है—

१ धीर सुरात् /—▷/ वाक्य

इस प्रकार के वाक्य सामान्य व प्रत्यक्ष आज्ञा का द्योतन करते हैं जैसे /तू घर जा / तुम घर जाओ/ तू अठे आ/ तू द्वारा दूरा । भर तै ।

२ अवरोही सुरात् वाक्य

इस प्रकार के वाक्य आशीर्वादात्मक होते हैं, यथा—ठाकुरजी धाराँ भलाँ कर / भगवान तुम्हारा भला करे । भगवान तने देटाँ दव ।

1 'दूरा' यह णिद पेट का वाचक है । /डू/ ध्वनि बीकानेरी में पाच छ णिदों में ही प्रयुक्त होती है । यह ध्वनि मूढ्य /ड/ की भाँति श्रौर न उक्तिपन /ड/ की भाँति उच्चरित होती है बल्कि इसका स्वतंत्र अस्तित्व है जिसका उच्चारण वत्स्य है ।

३ अवरोही + १ अत वाले वाक्य

इस प्रकार के वाक्य प्राथनात्मक, आग्रह वाचक वा अनुनय-वितय वाचक होते हैं /दवाई लें पेटा/ । लसों/ दवाई ले लो पेटा ।

८ ३ १ २ ३ सद्देहार्थक अव्यय युक्त वाक्य

/सायद/, यास्तो—यास/ /चाएस्ता—चाए/, /वैस्ता—वैस/ प्रयोग के प्रयोग से सद्देहात्मक वाक्य सष्ट होते हैं । मुर-सरणि प्रयोग पर निर्भर है यथा—/सायद बाँ गयाँ/ /यास्तो बाँ गयाँ पराँ हीसी यास हणै जाती ।

८ ३ १, २ ४ प्रश्नवाचक वाक्य

मालाच्य बोली में प्रश्नवाचक वाक्यों की रचना दो प्रकार से होती है । प्रथम मुरलहर के प्रयोग के आधार पर एक द्वितीय प्रश्नवाचक अव्यय का प्रयोग करके प्रश्नवाचक वाक्य सष्ट होते हैं ।

क मुरलहर के प्रयोग के आधार पर

इसमें भी मुरलहर के प्रयोग के आधार पर सामान्य प्रश्न निराशात्मक प्रश्न, आश्चर्यात्मक प्रश्न एवं घणात्मक प्रश्न वाचक वाक्य सष्ट होते हैं । यथा—/बा आयाँ ? / वह आया /को आसी ? / वह आयेगा (सामान्य प्रश्न) वा प्राया ? बाँ आसी ? (निराशात्मक वाक्य) वा आयाँ ? बाँ आसा ? (आश्चर्यात्मक वाक्य) वा आया ? वा आसा ? (घणात्मक वाक्य) उक्त चारों वाक्य रचनात्मक दृष्टि से एक हाने हुए भी प्रयोजन मुर प्रयोग एवं अर्थ की दृष्टि में पृथक् हैं । प्रथम वाक्य में मुर लहर को स्थिति अत्य पद में आराहणता है । द्वितीय वाक्य में अत्य पद की स्थिति बलरहित एवं अवरोहणता है । तृतीय वाक्य में अत्य पद का स्थिति बल

सहित एव आरोहमूला है । चतुर्थ वाक्य में अत्य पद की स्थिति विकृत मुख मुद्रा से अभिव्यक्त होता है एव त्वरितता से युक्त है ।

ख प्रश्नवाचक अव्यय युक्त वाक्य

प्रयोग के आधार पर इसके तीन भेद उपलब्ध होते हैं । 1 /को नी, कोयनी, क्या/ अर्थो से युक्त वाक्य । 2 प्रश्नवाचक सवनामो व विशेषणो से युक्त वाक्य । 3 प्रश्नवाचक क्रिया विशेषणो से युक्त वाक्य । अ /को नी कोयनी, क्या/ अव्ययो से युक्त वाक्य

निषेधात्मक प्रश्नवाचक वाक्यो में /कोनी/ /कोयनी/ का एव सामान्य प्रश्न के /क्या/ का प्रयोग होता है । अत्य पद की स्थिति आरोह मूला एव पूर्ववर्ती क्रिया बलात्मक होती है यथा— /बो आया कोयनी ? वह आया नहीं क्या ? बाँ को जो बनी ? वह नहीं जायेगा क्या ? धू जाईस क्या ? तू जाएगा क्या ?

ब प्रश्नवाचक सवनामो एव विशेषणो से युक्त वाक्य

इसमें /कसाँक/ 'कसा' प्रकार वाचक, /कतो/ /कितना (परिणाम वाचक) /बत्ता/ कितने (संख्या वाचक) आदि विशेषणों का प्रयोग होता है । अत्य सुर की स्थिति अवरोहमूला है । कसाँक कपडो चइज । कसा कपडा चाहिए बत्तो कपडो चइज । कितना कपडा चाहिए । आदि । प्रश्नवाचक सवनामो में /कूणा/का प्रयोग होता है यथा— कूण जासी कौन जाएगा ?

स प्रश्नवाचक क्रियाविशेषणो से युक्त वाक्य

आलोच्य बानी में /कणै/, /क्या/ को कर/ /कर/ /कठठे/ आदि क्रिया विशेषणो के क्रिया के पूर्व प्रयोग होने से प्रश्नवाचक वाक्य सष्ट होते हैं । इन वाक्या में क्रियाविशेषण पद पर बल रहता है एव अत्य सुर अवराही हाता है । यथा— धू कद जाईस । तू कब जाणगा ? राम कठठे जाव । राम कहा जाता है ? तू धरे का कर जाईस । तू धर कसे जायेगा ? तू कयो पडै । तू कयो पड़ता है ?

निर्देशात्मक वाक्यों से युक्त वाक्य में प्रकाश प्रकाशक का

प्रयोग के आधार पर निवेधात्मक वाक्यों-युक्त वाक्यों को दो वर्गों में विभाजित जा सकता है- 1 सामान्य निवेधात्मक वाक्य 2 प्रेरणात्मक वाक्य।

सामान्य निवेधात्मक वाक्य
इस प्रकार के वाक्यों में (को + किया + नी) कोयनी / नही) का प्रयोग होता है। मुर लहने की स्थिति सामान्य होती है, यथा- /हू को जाऊना / मैं नहीं जाऊंगा। या मैं नहीं जाता। /हू पढ़ू कोयनी / मैं पढ़ता नहीं हू। हू नहीं आऊला। मैं नहीं आऊगा। निवेधात्मक वाक्यों पर बल देने से निश्चयात्मकता का स्वरूप होता है।

प्रेरणात्मक वाक्यों-युक्त निवेधात्मक वाक्यों में प्रकाश प्रकाशक का प्रयोग होता है। प्रकाशक वाक्यों में /मन/ मति/ धन/ अर्थ-युक्त वाक्यों का प्रयोग होता है। निष्पत्तिकात्मक प्रयोग, बल, रहस्य, अर्थ-युक्त /यू मत्त जायगा, तुम नहीं जाना। /तू जाए ना/ तू जाना नहीं। /मति-कर/ मत करो आदि।

इस प्रकार के वाक्यों में किसी एक पद पर अधिक बल / E / रहता है।

निवेधात्मक वाक्यों में प्रयोग होने वाली वाक्यों में निश्चयात्मकता का बल वाक्य के किसी भी पद पर हा सकता है। यथा- मन पर जाओ। मन (धोर कोई नहीं) पर जाएगा। /मन पर जाओ / मन पर (धोर वही नहीं नहीं) जाएगा। मन पर जाओ। मन पर जाएगा (निश्चय ही) /ता/ निपात-हो-इत्यादि भी प्रयोग यचना व निश्चयात्मकता की अभिव्यक्ति होती है- यथा- /हू तू बतार पन्नात्मक वाक्यों में प्रयोग होता है।

पढ गया पर मदन नही पढा ।

2 ऐसे वाक्य कालवाचक, निषेधाथक अथवा से प्रारम्भ होते हैं यथा- पैला हू जाईस फेर तू जाए । / पैला फेर, फेर कालवाचक/ पहले म जाऊगा, फिर तू जाना । / ना हू पडू ना बाँ पडे / ना ना निषेधाथक/ न मैं पढ़ता हूँ न वह पढ़ता है । कस्ताँ केँस यास्ताँ यास, चाएस्ताँ चाए त्रिभाजक / केँस्ताँ तू पढ कैसे बँने पढन दे / या तो तू मढ या उमको पढने दे । यास्ताँ तू आय जाए यास थारे भाई मँ भेज लिये/ या तो तू आ जाना या तरे भाई का भेज देना । चाए ता तू देखलेँ चाए थार भाइ नेँ देखायले । या ता तू देखने या तरे भाई को लिखा दे ।

८ ४ वाक्य विशेषण

प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूप से प्रत्येक वाक्य में एक उद्देश्य, एक विधेय एवं एक संयोजक क्रिया निहित रहती है । वाक्य विस्लेषणार्थ महा इन्हीं का क्रमशः विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है--

८ ४ १ उद्देश्य

सना या सना स्थानापन पन या वाक्यांश उद्देश्य हा सकता है यथा

सना / राम घरे जावे / राम घर जाता हूँ ।

सवनाम - / हूँ पाँली पीऊ / मैं पाना पीता हूँ ।

विशेषण - / खाडिये न बुलाय ला । लगे के बुला लाओ ।

क्रियाविशेषण- / बाँ माँय वार एक सरीसाँ हूँ / वह बाहर-भीतर एक सा है ।

सम्बन्ध वाचक- / रामघाटा भाग्याँ / राम वाला (लडका) भग गया ।

त्रिधावक मज्ञा / रमणा ठीक कायनी / खेतना अच्छा नहा है ।

वाक्यांश / घली गुणार्ई चोखी कायना / ज्याना गुण्डापन अच्छा नही है ।

उक्त सभी अंगों का विस्तार एवं सापेक्ष सम्बन्ध है जिसका विश्लेषण विस्तार एवं लोप शोधों के अंतर्गत किया गया है ।

चाँमाँ/ ऐसा सुन्दर । (वि) चाँखोसीक/चोखाँई/ नि०) यहा यह उल्लेख
नीय है निपातीय प्रयोग पश्चातवर्ती है । /चालणम चोखाँ/ देखणमे भूडाँ
(त्रि स +अवि वा) त्रि स के स्थान पर कभी-कभी वत का क
का प्रयाग भी होता है, यथा-दोखत रा सऊकार ।

८ ५ ३ क्रिया विस्तार

क्रियाविशेषण एव क्रियाविशेषण वाक्यांश द्वारा क्रिया का विस्तार
होता है यथा— /अब जासी/ /कद जासी/ (त्रि वि) /अबारई गयो/
/आयरगयाँ/ /भट-भट खा/ (त्रि वि वा) इसी प्रकार त्रि वि की
द्विरक्ति, वत वा क +ई के प्रयोग से, पूर्वकालिक क +त्रि वि आदि के
प्रयोग मे क्रिया का विस्तार हाता है ।

८ ६ लोप

आलोच्य वाली भू सामा यत जिन पदा वा वाक्यांशों का लोप होता
है वे इस प्रकार हैं— मात्र सना अवशिष्ट—प्रश्न— /कूण गया / ? उत्तर—
/छाराँ/ (कत्ता) प्रश्न घनेँ क्या दीयो । उत्तर—ओम्बा (मनँ) ओम्बा
(दीयाँ) (कम) केवल विशेषण अवशिष्ट—प्रश्न छाराँ कमाँक ह—उत्तर—
(पूराँ) प्रश्न—कस्ताँ छोराँ गयाँ उत्तर—खाडियाँ । प्रश्न—कत्ता जणा
भेडाँ होया हैँ उत्तर—च्यार जणा । मना विणपण अवशिष्ट— प्रश्न—
कूण भायरवा हँ । गोराडाँ छाराँ । मात्र क्रिया अवशिष्ट (तू) पत्

८ ७ अन्वय

शालोच्य बोली में अन्वय के सम्बन्ध में निम्नलिखित नियम निर्धारित किये जा सकते हैं—

1 कर्ता के लिंग वचन के अनुसार क्रिया के लिंग वचन होते हैं, यथा—छोरा गया (पु ए व) छारा गया (पु ब व) छोरी गई (स्त्री ए व) छारया गया (स्त्री ब व) ।

2 सामान्यतः सभी कर्ताओं को एकत्र करके उनके पश्चात् सग्या-वाची विशेषण भयवा सर्ववाचक सर्वनाम /सब/ /सैँन/ जाड़ दिया जाता है, यथा—/राँमर मदन द्योए गया / छारा-छोरी सँन /सब गया /

3 यदि कर्म परसग रहित हो तो क्रिया के लिंग-वचन कर्म के अनुसार हाते हैं, यथा— म्हेँ राटी खाई । सीता तेल ढोळ दिया ।

4 यदि कर्म परसग सहित हो तो क्रिया सर्वदा पु ए व में हाती है, यथा—/म्हेँ बँनेँ पूछिया / मा छोरेँ नेँ मारिया ।

5 यदि वाक्य रचना में दो कर्म हाते हैं व परसग रहित हाते हैं तो क्रिया निःशुक्ति कर्म के अनुसार लिंग वचन धारण करती है यथा म्हेँ सागरपूडी खाई । यह नियम बकल्पिक है यथा म्हेँ चावळ दाळ खाया ।

6 /सब/ /सँन/ में सभी कर्मों का अन्तर्भाव हो जाता है यथा /बेँ चावळ, दाळ, माड पापड सब खाया ।

८ ८ पदक्रम

पदक्रम के सम्बन्ध में निश्चित नियम निर्धारित नहीं किये जा सकते क्योंकि बलात्मकता, प्रश्न आदि में पदक्रम परिवर्तित होता रहता है फिर भी पदक्रम के सम्बन्ध में सामान्य नियम निर्धारित किये जा सकते हैं । शालोच्य बोली में सामान्य पदक्रम इस प्रकार है—पहले कर्ता, फिर कर्म एवं फिर क्रिया, यथा— /राँम घरे जावँ/ कहानी में कभी-कभी क्रियापद का भी पहले प्रयोग हाता है । 2 विशेषण का प्रयोग सग्या से पूरे एवं पश्चात् दोनों ही स्थलों पर होता है, यथा चोखा घाँम्हा लाए । घाँम्हा चाखा लाए ।

अध्याय ६ निष्कर्ष एवं उपलब्धियाँ

पिछले अध्यायों में बीकानेरी का सर्वाङ्गीण भाषातात्विक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन की उपलब्धियों के अन्तर्गत पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्रस्तुत किए जा सकते हैं—

1. निम्नलिखित ध्वनियाँ बीकानेरी का निजी वैशिष्ट्य चिह्नित करती हैं— /अ, ए, आ, ब, ङ, ङ, ञ / अ- आचार्य पाणिनि ने अकुह्विसज नीयाना षष्ठ -सूत्र में 'अ' को षष्ठ्य कहा है। बीकानेरी में यह ध्वनि पूर्णतः षष्ठ्य है। /अ/ से यह ध्वनि भिन्न है। /अ/ का उच्चारण बाली में हिंदी की भाँति ही अर्द्ध विवृत ह्रस्व मध्य है यथा—हिंदी अभी बीकानेर पर तु /अ/ ध्वनि अर्द्ध सवत पश्च ह्रस्व स्वर है। हिंदी की ऐ, इ एव वभी वभी अ का उच्चारण बीकानेरी में इसी ध्वनि में होता है, यथा—हिं ऐसा बी अस्तो, हि कितना बी कत्तो हि इतना बी अस्ता हि० रक्षा रक्ष्वा। अंग्रेजी गठ में वास के 'क' में यह ध्वनि उच्चरित होती है। इस ध्वनि का प्रयोग केवल शब्दादि में ही होता है। /अ/ यह अर्द्ध विवृत अर्द्ध ह्रस्व स्वर है। इसका उच्चारण अंग्रेजी Men Pen क पे (प+अ) में की भाँति होता है वगैरह ध्वनि का प्रयोग शब्द के आदि मध्य एव अन्त्य तीनों स्थानों पर होता है यथा—दँण रण कण सर वन जाये आदि। /आ/ यह अर्द्ध विवृत ह्रस्व पश्च स्वर है। इसका उच्चारण अंग्रेजी आँन On की भाँति है यथा—पाँन, जाँन आदि इसके प्रतिरिक्त नेप सम्पूर्ण स्वर हिंदी की ही भाँति है। /ब/ /द/ /ड/ का उच्चारण जमश ब द ङ ड से भिन्न है। /ड/ ध्वनि वक्ष्य है। इस ध्वनि के बाली में मुझे चार शब्द ही उपलब्ध हुए हैं। उँमा, डर, डर, डूरा। जा क्रम में टू साठ लगाने का ध्वनि, ब पेट क वाचक है। /ळ/ ध्वनि उत्प्लव है जो पाश्चिमी से इसका पाश्चिमी सिद्ध करनी है। यथा काल (कल) काळ (कल्यु) गाल (कपोल) गाळ (गाली)।

2. बीकानेरी में सना पदा का निर्माण प्रातिपदिक अंश में लिंग-वचन-भारत सबंध दर्शा विभक्त प्रत्ययों के योग से होता है। सना

पदों के तीन रूप हैं मूल, विकारी एवं सबाग्र। मूल रूप बिना परसर्गों के ही वाक्यों में प्रयुक्त होते हैं। विकारी रूप परसर्ग ग्रहण करते हैं। संबोधन रूप भावावेश पुकारने आदि में प्रयुक्त होते हैं। बीकानेरी में कुछ रूप कमकारक, अधिकरण कारक व बिना परसर्गों की सहायता के प्रयुक्त होते हैं, यथा— /घरे जाऊ / घर को जाता हूँ, /घरे कोयनी/ घर में नहीं है। यह संस्कृत के कारकीय रूप में अवशिष्ट रूप ही स्वीकार किया जा सकता है एवं इनका प्रयोग भी भ्रष्ट है। बीकानेरी में दो सिंग, दो वचन हैं। परसर्गों में कमकारक /ने /करण का व प्रपादान/सू/सम्प्र /रे/गम्ब /रो रा रो/ अधि /मे, मोय ऊपर, पर/ सम्बा /हे, ओ, घरे, रे/ है।

बीकानेरी में /हैं, रहे/ उ पु /धू थे/ म पु /भाँ भा बाँ, वा/ संकेत वाचक, /जकाँ/ सवध वा /कूण/ प्र वा / कोइ/ अनि वा /भाप/ आदर व निज वा एवं /सब, सगळे/ सबवाचक सवनाम है। सावनामिक रूपों की रचना प्रक्रिया उन सना पदों के अनुरूप ही है, जिनके वे स्थानापन हैं।

4 विशेषण पदों में केवल ओकारात् विशेषण ही अपने निर्माण के अनुरूप लिख बोधक विभक्ति प्रत्यय ग्रहण करते हैं। तेष विशेषण पद अपने विशेष्य से सवथा अप्रभावित रहते हैं।

5 बीकानेरी में संस्कृत की भाँति ही क्त व तद्धित प्रत्यय पद विभक्ति प्रक्रिया में सहायक होते हैं। सुप् प्रत्ययों द्वारा नाम पदों की एवं तिड प्रत्ययों द्वारा क्रियापदों की रचना होती है।

6 बीकानेरी में क्रियापद तिड एवं क्त प्रत्ययों के योग से निमित्त होते हैं। तिड प्रत्ययों से केवल वतमान, भविष्यत काल एवं आनायक रूप ही सष्ट होते हैं एवं वाक्यात्मक सहायक किया भी ग्रहण करते हैं।

बीकानेरी का अपना निजी शब्द कोश है जो इस अपना भगिनियों से पृथक् करता है।

निष्कर्षतः यही कहा जा सकता है कि बीकानेरी वाली रचना एवं विशेषण की दृष्टि से संस्कृत व्याकरण परंपरा से प्रभावित हाते हुए भी निजी वशिष्य रखती है।

वोली का नमूना करकर री कौणी

एन माजी थी ही । बेरे एन पेलवान वेटीं हा । बो एन दिन खेत गयाडां हा । बेरे घो नण म खेजडो हा । खेजडे रे ऊपर हाथी चढग्या । बऊ सासू ने बेयो देवो सासूजी खेजडो माये ठर्रो चढग्या । सासू कॅया तणखे ता नास दे । बठीने ता एक दूसरा पेलवान जावता हा । बे सुणर सोचियो के ह्ये घररी लुगायो हाथी ने ऊदरी केर तराखे सू हाखे जणे मनख ता घणा पेलवान होसी । बे पूछियो 'माजी धारा बटो कठे है' । जणे बे कई म्हारो वेटा खेत म गयोडो है । इते एक दूसरो पेलवान फेर घायग्यो । घायस में दोए कुस्ती लडने लाग्या । माजी बे टे रे भाता नेर जावती । बे कई घरती कुशी बयो लडा, म्हारो ह्याल्यो ऊपर लडांनी । माजी भाता तो माये ऊपर ले लियो घोर बे दोनी ह्यातयो ऊपर लडन लाग्य । खेत खने पाँची तो वेटा डेड मो सोठणो चरावतो । बे जाणियो भा आज दोया खने मन मरावने लेइयाई । बा माये रो बोधियोडो चर्रा खोलर डेड सी सोठण्यो रो गोंठनी बगापर दोडिया । इते एक चीलख गोंठरी भगदो मारर उठाय लेगी । भगे राजा री राणी माय घोरर सुकोवती थी । गोंठ बेरी घोंछ में पडगी । वा नीडती सासू खने गई के मासूजी घोंव में करकर पगी । सासू काढण लागी तो डेड सी मोठण्यो री टोळी नकटी सैन सोठण्यो तो दाडगी । एक सोड बेरे कवर पकड ली । बे कई के एक तो हू पाठीस । बे कपर बने बोध ली । वा भकास म चरन जावती । एक दन कवर बेरी नस माये चडर गयो परा । बा दस गज री खासडो तोडर लायो । माने केयो याव बणाइस । मा केया भावी तो खापले । याव बणापर तरने लाग्यार याव में पाणी भरीजण लाग्यार कवर दोडिया भोय रोड करकर मराय देखती ए । बे सोड ने छाड ली । साइ पाछी घापरे टाल में गई परी ।

एक बुढ़िया थी । उसके एक पहलवान पुत्र था । उस बुढ़िया के घर में एक वक्ष था । एक दिन उसका पुत्र खेत गया हुआ था । घर में जो वक्ष था उस पर हाथी जड़ गया । पहलवान की पत्नी ने कहा—सामूझी वक्ष पर चूहा चढ़ गया है । सास ने कहा तिनके से उतार दो । उसी समय उस और से एक पहलवान निकल रहा था । उन दोनों की बात सुनकर उसने सोचा इस घर की स्त्रिया हाथी को चूहा कहकर तिनके से फेंक रही है फिर पुरुष तो बहुत वीर होंगे । ऐसा सोचकर उसने कहा—माजी तेरा पुत्र कहा है ? बुढ़िया ने कहा । मेरा पुत्र खेत गया हुआ है । उसी समय एक और पहलवान आ गया । वे दोनों पहलवान आपस में लड़ने लग गये । बुढ़िया अपने पुत्र के खाना लेकर खेत जा रही थी । उन दोनों को आपस में लड़ते देखकर बुढ़िया ने कहा जमीन पर क्यों लड़ रहे हो मेरी हथेलियों पर आ जाओ । वे दोनों उसकी हथेलियों पर लड़ने लगे । बुढ़िया चलती गई । जब वह खेत पहुँची तो उसके पुत्र ने दोनों पहलवानों को लड़ते देखा । उसने सोचा— मा आज मुझे पिटवाने के लिए इन दो को लाई है । वह डेढ़ सौ ऊटनिया चग रहा था । उसने अपने सिर पर बांधे हुए चदर को उतारा एव उन डेढ़ सौ ऊटनियों को उममें बांधकर भागने लगा । उसी समय एक घील उस गठरी को झपट कर ले गई । एक राजा की रानी अपना गीला सिर सुखा रही थी । उसने ऊपर की धार देखा तो वह गठरी गिरकर उसकी आँख में गिर गई । वह चिल्लाती सामू के पास गई । उसने कहा सामू जी आँख में किरकिर गिर गई । सामू निकालन लगी तो डेढ़ सौ ऊटनिया निकली उनमें से एक राजा ने रख ला । वह ऊटनी आकाश में चरने जाती थी । एक दिन राजा उमकी गदन पर चढ़कर आकाश में गया । वहाँ से वह एक दस गत्र की काँडा तोड़कर लाया । उसने अपनी मा से कहा कि मैं इसकी नाव बनाऊँगा । मा ने कहा आधी तो खाली आधी की नाव बना लो जब नाव बनी तो वह तरने गया एव वहाँ नाव में पानी आने लगा । राजकुमार वहाँ से भागा एव ऊटनी को कोसने लगा ।

सहायक ग्रंथ-सूची

लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम
1 आचार्य यास्क	निरुक्त
2 आचार्य पाणिनि	अष्टाध्यायी
3 कात्यायन	वार्तिक
4 पठञ्जलि	महाभाष्य
5 मट्टाजि दीक्षित	लघुसिद्धांत कीमुदी
6 भट्ट हरि	वाक्यपदीमम
7 वल्कायन	वल्कायन व्याकरण
8 जगदीश वदयप	पालि मह व्याकरण
9 बरहृचि	प्राकृत प्रकाश
10 हमचन्द्र	प्राकृत व्याकरण
11 पुष्पोत्तम देव	प्राकृतानुशासन
12 हेमचन्द्र	उपनिषद् व्याकरण
13 हमचन्द्र	देवी नाममाला
14 कामताप्रसाद गुरु	हिन्दी व्याकरण
15 किशोरीदास वाजपेयी	हिन्दी शब्दानुशासन
16 दुनीचन्द्र	हिन्दी व्याकरण
17 सुनीलकुमार चटर्जी	भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी
18 ,	राजस्थानी भाषा
19 डॉ० धीरेन्द्र वर्मा	हिन्दी भाषा का इतिहास
20 ,	राजभाषा व्याकरण
21 डॉ० उदयनारायण	हिन्दी भाषा उद्भव और विकास
22 ,	भोजपुरी भाषा और साहित्य
23 श्यामसुन्दरदास	भाषा विज्ञान
24 व दूराम सक्सेना	सामान्य भाषा विज्ञान
25 डॉ० मुरारिदान	हिन्दी में प्रत्यय विचार
26 डॉ० चन्द्रमान रावत	मथुरा जिले की वाली

एक बुढ़िया थी । उसने एक पहलवान पुत्र था । उन बुढ़िया के घर में एक बक्ष था । एक दिन उसका पुत्र चोरा गया हुआ था । घर में जो बूटा था उस पर हाथी जड़ गया । पहलवान की पत्नी ने कहा—सासूजी बक्ष पर घूहा चढ़ गया है । सास ने कहा तिनके से उतार दो । उसी समय उस घोर से एक पहलवान निकल रहा था । उन दोनों की बात सुनकर उसने साचा 'दम पर की सिखाया हाथी का घूहा कहकर तिनके से फेंक रही है फिर पुरुष तो बहुत बोर होंगे । एसा सोचकर उसने कहा—माजी तैरा पुत्र कहाँ है ? बुढ़िया ने कहा । मेरा पुत्र खेत गया हुआ है । उसी समय एक घोर पहलवान आ गया । वे दोनों पहलवान घावस में लड़ने लग गये । बुढ़िया अपने पुत्र के साना मेकर सेत जा रही थी । उन दोनों को घावस मे लड़ते देखकर बुढ़िया ने कहा जमीन पर क्या लड़ रहे हो मेरी ह्येतियो पर आ जाओ । वे दोनों उसकी ह्येतियो पर लड़ने लग । बुढ़िया चलती गई । जब वह खेत पहुँची तो उसने पुत्र ने दोनों पहलवानों को लड़ते देखा । उसने साचा— माँ धाऊ मुझे पिन्वाने के लिए इन दो को लाई है । वह डेढ़ सौ ऊटानिया चग रहा था । उसने घाने सिर पर बाँधे हुए चदर का उतारा एक उन डेढ़ सौ ऊटनियों का तममें बाधकर भागने लगा । उसी समय एक घील उस गठरी को झपट कर ल गई । एक राजा की रानी घाना गीला गिर सुया रही था । उसने ऊपर की आर दला तो वह गठरी गिरकर उसकी धाँव म गिर गई । वह चिल्लाने सासू के पास गई । उसने कहा सासू जी धाल में किरकिर गिर गई । सासू निरासने लगी तो डेढ़ सौ ऊटनिया निकली उनमे से एक राजा न रख ला । वह ऊनी आकाश मे खरने जाती थी । एक दिन राश उमकी शन्न पर खरर आकाश मे गया । वहा से वह एक दम गत्र की कावडा तोडकर लाया । अपने भरती मा से कहा कि मैं इसकी नाव बनाऊगा । मा ने कहा बाधी तो छालो बाधी की नाव बना लो जब नाव बनी तो वह तैरने गया एक बहा नाव मे पानी घाने लगा । राजकुमार वहा स भागा एक ऊटनी को कोमने लगा ।

सहायक ग्रंथ-सूची

लक्षक का नाम	प्र. व. का नाम
1 आचार्य यास्क	निरुक्त
2 आचार्य पाणिनि	अष्टाध्यायी
3 कात्यायन	वार्तिक
4 पठञ्जलि	महाभाष्य
5 भट्टोजि दीणित	सधुसिद्धात कौमुदी
6 भउ हरि	वाक्यपदीमम
7 वञ्चायन	वञ्चायन व्याकरण
8 जगदीश बक्षप	पालि महाव्याकरण
9 वरहचि	प्राकृत प्रकाश
10 हमचन्द्र	प्राकृत व्याकरण
11 पुरुषोत्तम दब	प्राकृतानुशासन
12 हमचन्द्र	उपभ्रंश व्याकरण
13 हमचन्द्र	देगी नाममाला
14 कामताप्रसाद गुरु	हिन्दी व्याकरण
15 किशोरीदास बाजपेयी	हिन्दी शानुशासन
16 दुनीचन्द्र	हिन्दी व्याकरण
17 सुनीलकुमार चटर्जी	भारतीय ग्राम भाषा और हिन्दी
18	राजस्थानी भाषा
19 डॉ० धीरेन्द्र वर्मा	हिन्दी भाषा का इतिहास
20	ब्रजभाषा व्याकरण
21 डा० उष्यनारायण	हिन्दी भाषा उद्भव और विकास
22	भाजपुरी भाषा और साहित्य
23 श्यामसुन्दरदाम	भाषा-विज्ञान
24 वसूनाम सबसेना	सामान्य भाषा विज्ञान
25 डा० मुरारोगान	हिन्दी में प्रत्यय विचार
26 डा० चन्द्रमान रावत	मधुरा जिल की बोली

- 27 डा० कलाशचन्द्र प्रणयाल
 28 रामेश्वरप्रसाद
 29 डा० भोलानाथ
 30 ”
 31 डा० भोलाशंकर व्यास
 32 डा० चन्द्रमान रावत
 33 डा० हरदेव बाहुरी
 34 डा० सरनामसिंह
 35 ”
 36 डा० नामवरसिंह
 37 हीरालाल माहेश्वरी
 38 सीताराम लालस
 39 डा० पुरुषोत्तम मेनारिया
 40 डा० एल० पी० तैसीतोरि
 41 सीताराम लालस
 42 डा० मोतीलाल मेनारिया
 43 सीताराम लालस
 44 प नरोत्तमदास
 45 डा० कन्हैयालाल
 46 डा० गौरीशंकर हीराचंद भोक्ता
 47 कनल टाड
 48 गौरीशंकर प्राचाय
 49 डा० बरणीसिंह
- योगावाटी बोली एक वण
 नामक ग्रन्थयन
 मुन्नेली का भाषा शास्त्रीय ग्रन्थयन
 भाषा विधान
 हिन्दी भाषा
 संस्कृत का भाषा
 शास्त्रीय ग्रन्थयन
 शास्त्रीय ग्रन्थ और विस्तृत
 हिन्दी भाषा उद्भव रूप और
 विकास
 हिन्दी भाषा रूप और विकास
 हिन्दी की उद्भव शास्त्रीय
 हिन्दी कारकों का विकास
 हिन्दी के विकास में प्रथम श का
 योगदान
 राजस्थानी भाषा और साहित्य
 राजस्थानी शास्त्रीय
 राजस्थानी भाषा की रूपरेखा
 पुरानी राजस्थानी
 मारवाडी व्याकरण
 राजस्थानी भाषा और साहित्य
 राजस्थानी व्याकरण
 राजस्थानी व्याकरण
 हाडौती बोली और साहित्य
 बीकानेर राज्य का इतिहास
 राजस्थान का इतिहास
 बीकानेर एक परिचय
 बीकानेर के राज्य घराने का
 के द्वितीय सत्ता से संबंध

